Rahul's ✔
Topper's Voice

AS PER CBCS SYLLABUS

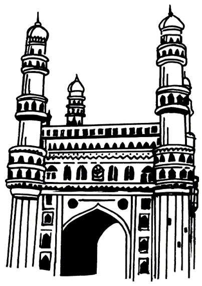

Latest 2022 Edition

B.A., B.Com., B.Sc., B.B.A. & B.S.W

हिंदी

I Year I Sem

- ☞ **Study Manual**
- ☞ **Solved Previous Question Paper**
- ☞ **Solved Model Papers**

Price ₹. 99-00

- by -
Dr. SHIVHAR BIRADAR
M.A, M.Phil, Ph.D

Rahul Publications™
Hyderabad. Ph : 66550071, 9391018098

All disputes are subjects to Hyderabad Jurisdiction only

B.A., B.Com., B.Sc., B.B.A. & B.S.W

हिंदी

I Year I Sem

Inspite of many efforts taken to present this book without errors, some errors might have crept in. Therefore we do not take any legal responsibility for such errors and omissions. However, if they are brought to our notice, they will be corrected in the next edition.

© *No part of this publications should be reporduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording and/or otherwise without the prior written permission of the publisher*

Price ₹. 99-00

Sole Distributors : **☎ : 66550071, Cell : 9391018098**

VASU BOOK CENTRE

Shop No. 2, Beside Gokul Chat, Koti, Hyderabad.

Maternity Hospital Opp. Lane, Narayan Naik Complex, Koti, Hyderabad.
Near Andhra Bank, Subway, Sultan Bazar, Koti, Hyderabad -195.

CONTENTS

गद्य दर्पण

				Page No.
1.	चरित्र संगठन	-	बाबू गुलाबराय	3
2.	बाज़ार दर्शन	-	जैनेन्द्र कुमार	11
3.	भाभी	-	महादेवी वर्मा	18
4.	भारत में संस्कृति संगम	-	राधारी सिंह दिनका	25
5.	राष्ट्र का स्वरूप	-	वासुदेव शरण अग्रवाल	32

कथा सिंधु

1.	सद्गति	-	प्रेमचंद	41
2.	छोटा जादूगर	-	जयशंकर प्रसाद	45
3.	सच का सौदा	-	सुदर्शन	49
4.	प्रायश्चित	-	भगवति चरण वर्मा	54
5.	चीफ़ की दावत	-	भीष्म साहनी	58

व्याकरण

1.	लिंग (Gender)	61
2.	वचन (Number)	69
3.	काल (Tense)	72
4.	कारक (Case)	78

CONTENTS

5.	वाच्य (Voice)	82
6.	वाक्य शुद्ध किजिए (Correction of Sentences)	85
7.	शब्दों का वाक्यों में प्रयोग किजिए (Usage of Words into Sentences)	90
8.	कार्यालयीन हिन्दी (Administration Terminology)	92
9.	हिन्दी - अंग्रजी रूपान्तर (Hindi to English)	100

SOLVED MODEL PAPERS

1.	Model Paper - I	103 - 105
2.	Model Paper - II	106 - 108
3.	Model Paper - II	109 - 111

SOLVED PREVIOUS QUESTION PAPER

Nov. / Dec. - 2019	112 - 115
Aug. / Sept. - 2021	116 - 119

गद्य दर्पण

Rahul Publications

गद्य दर्णण

1.	चरित्र संगठन	-	बाबू गुलाबराय
2.	बाज़ार दर्शन	-	जैनेन्द्र कुमार
3.	भाभी	-	महादेवी वर्मा
4.	भारत में संस्कृति संगम	-	राधारी सिंह दिनका
5.	राष्ट्र का स्वरूप	-	वासूदेव शरण अग्रवाल

Rahul Publications

1. चरित्र संगठन (వ్యక్తిత్వ నిర్మాణం)

- डॉ. बाबू गुलाबराय

लेखक परिचय

डॉ. गुलाबराय का जन्म सन् 1888 ई. में इटावा नगर में हुआ। उनकी आरंभिक शिक्षा मैनपुरी में हुई। हाईस्कूल में उन्होंने उर्दू, फ़ारसी और संस्कृत सीखी थी। उन्होंने आगरा कॉलेज से बी.ए. दर्शनशास्त्र में एम.ए. और एल.एल.बी. की उपाधि प्राप्त की। तदुपरांत चार वर्ष तक उन्होंने छतरपुर रियासत के महाराज को दर्शन सिखाया। गुलाबराय जी प्रबन्ध प्रभाकर, जीवन पथ, मेरे निबन्ध, अध्ययन और आस्वाद, फिर निराशा क्यों, मैत्री धर्म, ठलुआ क्लब, मेरी असफलताएँ, मन की बात और कुछ उथले कुछ गहरे सांस्कृतिक जीवन निबन्ध संग्रहों के अतिरिक्त हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास, हिन्दी-काव्य-विमर्श, काव्य के रूप, साहित्य और समीक्षा जैसे समीक्षात्मक ग्रन्थ के अतिरिक्त काव्यशास्त्र, तर्कशास्त्र, पाश्चात्य दर्शन का इतिहास उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। भारत का सांस्कृतिक इतिहास उनकी उल्लेखनीय सांस्कृतिक रचना हैं।

రచయిత పరిచయము

డా॥ బాబూగులాబ్‌రాయ్ 1891 సం॥లో ఇటావా నగరంలో జన్మించినారు. ఈయన ప్రాథమిక విద్య 'మైనపురీ' లో జరిగినది. 'సాహిత్య సందేశ్' అనే మాస పత్రికకు సంపాదకునిగా పనిచేసినారు. ఆగ్రా విశ్వ విద్యాలయము నుంచి ఈయన డి.లిట్ డిగ్రీ పొందారు. ఈయన 1963 సం॥లో మరణించారు. వీరు గొప్ప సాహిత్యకారులు. 'హిందీ సాహిత్య' కా సుబోధ్ ఇతిహాస్, హిందీ కావ్య విమర్శ్, కావ్య కే రూప్, సాహిత్య ఔర్ సమీక్షా ఈయన ప్రసిద్ధ గ్రంథములు. 'భారత్ కా సాంస్కృతిక్ ఇతిహాస్' ఈయన రచించిన గొప్ప గ్రంథము. ఈయన భాష శుద్ధ్ ఖడీ బోలీ ప్రస్తుత పాఠములో వ్యక్తిత్వానికి కావలసిన గుణములు వాటి ద్వారా మనిషి ఎంత గౌరవమును పొందుతాడో వివరించారు.

सारांश

'चरित्र संगठन' नामक निबन्धात्मक पाठ में बाबू गुलाबराय जी मनुष्य के चरित्र संगठन या आदर्श चरित्र निर्माण में उन्हें विनय, उदारता, धैर्य सहकारिता, सत्य वचन का पालन तथा कर्त्तव्यपरायणता आदि गुणों को अनिवार्य मानते हैं। लेखक मानते हैं कि मनुष्य का आदर समाज में केवल धन, पद, विद्या से मिलता हैं परंतु ये सब एक प्रकार से बाहरी हैं, स्थायी नहीं। यदि स्थायी भी हो वह एक प्रकार से भय का कारण हो सकता हैं। उदाहरण के लिए - रावण अपने पास विद्या, धन, पद, कीर्ति आदि होने पर भी राक्षसी कर्म के कारण निंदनीय रहा हैं। मनुष्य मात्र विद्वान होने से कदापि वंदनीय नहीं हो सकता। मनुष्य का मूल्य उसके चरित्र में हैं। चरित्र में ही उसके आत्मबल का प्रकाश होता हैं। आत्मबल

का प्रकाश एवं बलवान होने से ही व्यक्ति का चरित्र भी समाज में सदा आदरणीय बन जाता हैं। लेकिन चरित्र में विनय, उदाहरता, लालच में न पड़ना, धैर्य, सत्य भाषण, वचन का प्रतिपालन करना और कर्त्तव्यपरायणता ये सब गुण आते हैं। इन गुणों के बिना किसी भी व्यक्ति का चरित्र निर्माण बनना अधुरा माना जाता हैं। क्योंकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणि हैं जो जीवन पर्यन्त समाज में ही उनके सारे कार्य कलाप का निर्वाह करना पड़ता हैं। मनुष्य-जीवन का प्रभात, जिसमें सब प्रकार की शक्तियों का विकास होने की संभावना होती हैं। विद्यार्थी - जीवन में व्यतीत होता हैं। जो लोग इस विद्यार्थी जीवन में हमारे पथ-प्रदर्शक हैं, उनका परम उत्तरदायित्व हैं कि वे हमें ऐसा रास्ता दिखाएँ कि यह काल केवल ज्ञान-संग्रह में ही न जाए। इसलिए शिक्षक और विद्यार्थी दोनों अपने-अपने उत्तरदायित्व सही निभायेंगे तो ही तब अच्छे चरित्र से ओत-प्रोत मनुष्य समाज में धीर-धीरे विकास करता हैं। जब समाज में भ्रष्टाचार कम होकर समाज का विकास में अवरोध पैदा नहीं होता हैं। अच्छे व्यक्तित्व के निर्माण के लिए लेखक ने सात तत्वों के बारे में विचार विश्लेषण प्रस्तुत पाठ्यांश के अंतर्गत किया हैं। ये तत्व कुछ निम्न प्रकार हैं। (1) विनय (2) उदारता (3) लालच न रहना (4) धैर्य (5) सहकारिता (6) सत्य बोलना और वचन का पालन करना (7) कर्त्तव्य परायणता।

Rahul Publications

1) **विनय :-** (1) विनय विद्या का भूषण हैं। बिना विनय के विद्या शोभा नहीं देती। भगवद्गीता में ब्राह्मण का विशेषण 'विद्या-विनय संपन्न' कहा गया हैं। (2) जिसके पास विद्या के साथ विनय नहीं होता, उससे कोई लाभ नहीं हो सकता। विनय केवल विद्या को नहीं, वरन् धन और बल दोनों को भी शोभा देती हैं। महर्षि भृगुजी ने भगवान विष्णु के वक्ष्यस्थल पर लात मारी, तो भगवान पूछने लगे कि महाराज! आपके पैर में चोंट तो नहीं आयी? विनय का यही उत्तम आदर्श हैं। (3) विनय का आभाव एक प्रकार का खोखलापन प्रकट करता हैं। जिन लोगों में कोई श्लाघनीय गुण नहीं होता, वे अपनी ऐंठ तथा डाँटफटकार से लोगों पर प्रभाव जमाते हैं, किन्तु गुणवानों को इसकी आवश्यकता नहीं। उनका प्रभाव स्वतः सिद्ध होता हैं। यदि विनयशील मनुष्य का समाज में प्रभाव कम हो, तो इसमें विनयशील मनुष्य का दोष नहीं, यह समाज का ही दोष हैं। (4) व्यक्ति को अपने परिस्थिती के अनुसार कभी-कभी कठिन बनना जरूरी होता हैं क्योंकि विनय से व्यवहार करने पर भी कुछ ऐसे शत्रु होते हैं उनके सम्मुख यदि वह विनय भावना से रहे, तो उसके जीवन को हानि पहुँच जाती हैं। इसलिए उनको अपने विनय के कारण गौरवहीनता का दुखद अनुभव करना पड़ता हैं। (5) विनय के साथ निराभिमान, मनुष्य जाति का आदर, सहनशीलता इत्यादि अनेक सद्गुण लगे हुए हैं। इसके अभ्यास में इन सब गुणों का अभ्यास हो जाता हैं।

2) **उदारता :-** (1) प्रत्येक मनुष्य में आदरणीय गुण होते हैं। यह न समझना चाहिए कि, विद्या अथवा पद ही आदर का पात्र हैं। गरीब आदमी यदि ईमानदार हैं, तो वह बेईमान धनाढ्य की अपेक्षा कहीं अधिक आदरणीय हैं। (2) क्योंकि गरीबी में ईमानदार रहना और भी कठिन हैं।

गरीब भी हमारे आदर का पात्र होता हैं। मेहनत करनेवालों में एक दैवी प्रभा रहती हैं, जो सदा पूजायोग्य हैं। जिनको लोग असाह्य भाव से देखते हैं उनके प्रति आदर भाव एवं गौरव से देखने से आत्मा को सुख और शांति मिलती हैं।

3) **लालच :-** (1) मनुष्य सदा अपने आपको बलवान समझते हैं, उतना ही अधिक कमजोर हैं। जरा से अविचार मनुष्य को पतन की अवस्था में ले जाती हैं। (2) लालच केवल धन का न होकर बल्कि सब प्रकार का लालच दिया जाता हैं। जो मनुष्य के स्वकर्त्तव्य से अलग होकर अपने न्याय से हटे। किन्तु मनुष्य इन प्रलोभनों से दूर रहकर अपने स्वकर्त्तव्य एवं धर्म, न्याय को न छोड़कर सही मार्ग को अपनाना चाहिए।

4) **धैर्य :-** (1) कठिनाईयों का सामना ज्ञानी लोग ज्ञान से करते हैं किन्तु मूर्ख लोग रो कर करते हैं। लगभग हर समय कठिन से कठिन स्थिति में भी सदा प्रसन्न रहना आत्मा की उच्चता का सूचक हैं। (2) दुखित होना मनुष्य को अपने विपक्षियों की जीत स्वीकार करना हैं। (3) कठिन से कठिन परिस्थिती आने पर भी हर व्यक्ति उन पर विजय पाने के लिए आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक विचारों को अपनाना जरूरी होता हैं। आध्यात्मिक विचारों से उनकी मानसिक स्थिति बहुत मजबूत हो जाती हैं जिससे वह कई संकटों का सामना कर सकता हैं।

5) **सहकारिता :-** मनुष्य एक सामाजिक प्राणि होने के कारण वह अन्य मनुष्यों की सहकारिता लेकर अपनी आवश्यकताओं को पूरा करना पड़ता हैं। कुछ लोग असहकारिता में अपना गौरव मानते हैं। लोंगों को यह भ्रम हैं कि सहकारिता में हम अपनी न्यूनता स्वीकार करते हैं। लेकिन सहकारिता के बिना मनुष्य को समाज में जीवन बिताना अत्यन्त कठिनाई होती हैं। इसलिए हर एक मनुष्य अच्छा और सही जिन्दगी जीने के लिए, समाज में रहनेवाले सब मनुष्यों के साथ सहयोग अतः सहकारिता देना आवश्यक हैं।

6) **सत्य बोलना और वचन का पालन करना :-** चरित्रवान पुरूष को अपनी आत्मा में इतना बल रखना चाहिए कि वह सत्य को निर्भयता के साथ कह सके। सत्य मनसा-वाचा-कर्मणा होना आवश्यक हैं। और जो कर सके वही कहे तथा कहकर न हटे - ''प्राण जाहि पर वचन न जाएँ।''

7) **कर्त्तव्यपरायणता :-** जो बातें बचने की हैं उनसे बचना चाहिए और जो करने की हैं, उनको सौ हानि उठाकर भी करना चाहिए। यही कर्त्तव्य परायणता हैं। वास्तव में जो कुछ हमें करना चाहिए वही कर्त्तव्य हैं। अर्थात् केवल कागज पर लिखा हो यह कर्त्तव्य नहीं हैं, किन्तु प्रत्येक स्थिति के अनुकूल अपने कार्य के कर्त्तव्य निश्चित कर हमको उसके करने में हमेशा/हर दिन तैयार रहना चाहिए। इस तरह हम इन सभी सिद्धान्तों का पालन करने से चरित्र संगठन की उन्नति होती हैं।

Rahul Publications

పాఠ్య సారాంశము

మనిషి గొప్పతనము అతని వ్యక్తిత్వంలోనే ఉంటుంది. తన వ్యక్తిత్వం ద్వారానే అందరిలో గొప్పవారిగా భావించబడతాడు. పదవి, ధనము ద్వారా పొందే గొప్పతనము శాశ్వతము కాదు. వ్యక్తిత్వము ద్వారానే మనిషి యొక్క అత్మబలము వికసిస్తుంది.

మన వ్యావహారిక జీవనములోని ఆధ్యాత్మికత, సాంకేతికత, కావ్యప్రతిభ ఇవి అన్నీ వ్యక్తిత్వమునకు కావలసిన గుణాలను సమకూరుస్తాయి. వినయము, ఉదారత, దురాశ లేకుండుట, ధైర్యము, సత్యభాషణము, ఇచ్చినమాట నిలబెట్టుకోవడం, కర్తవ్య పరాయణత ఇవి అన్నీ వ్యక్తిత్వ నిర్మాణమునకు కావలసిన గుణములు, ఇవి అన్నీ సహజ గుణములు అయినప్పటికి ప్రయత్నించి వీటిని అభివృద్ధి చేసుకొనవచ్చును. బాల్యకాలములో మనిషి ఎలా తయారౌతాడో తన జీవన పర్యంతము అలాగే ఉంటాడు.

వినయము విద్యకు అభరణము వంటిది. వినయములేని విద్యతో ఉపయోగము లేదు. భగవద్గీతలో బ్రాహ్మణుని విద్య–వినయ సంపన్నునిగా వివరించారు. వినయముతో పాటు గర్వము లేకుండుట, మానవజాతిని ఆదరించడం. ఓర్పు కలిగి ఉండటం ఈ గొప్ప గుణములన్నీ కలిసి ఉంటాయి.

ఉదారత అంటే కేవలం ధనమును ఇవ్వడమే కాదు. ఇతరులపట్ల గౌరవ భావము కలిగి ఉండటం. ఎవరికైనా ధనాన్ని దానము చేసినప్పుడు బదులుగా ఏమీ ఆశించకూడదు. కేవలం ధనముపట్ల మాత్రమేకాక ఏ విషయముల కూడా దురాశ ఉండకూడదు. కష్టాలు కలిగినప్పుడు మనస్సును స్థిరంగా ఉంచడమే ధైర్యము అని పిలువబడుతుంది. కఠినతరమైన పరిస్థితిలో కూడా సంతోషంగా ఉండటమే ఆత్మయొక్క ఉన్నతికి దోహదపడుతుంది.

మనిషి సామాజిక జీవి ఒంటరిగా జీవించలేదు. ఒకరితో ఒకరు కలిసి ఉండటమే సమాసములో ఐక్యతకు సూచన. ఉన్నతమైన వ్యక్తిత్వం కలవాడు నిజాన్ని నిర్భయంగా చెప్పగలడు. కానీ దానికి ఎంతో ఆత్మబలము కలిగి ఉండాలి. నిజాన్ని మనసా–వాచా–కర్మణ చెప్పగలగాలి. నిజాన్ని చెప్పడంతోపాటు కర్తవ్యం కూడా అవసరమే. ఏది అవసరమో అది చేయకూడదు. ఏది చేయాలో దానిని ఎన్ని కష్టాలు కలిగానా పూర్తి చేయాలి. ఏది మనం చేయాలో అదే కర్తవ్యము. ఈ అన్ని గుణాలు కలిగి ఉండటమే ఉన్న వ్యక్తిత్వమునకు కారణము. సమాజాభివృద్ధికోసము మనము ఏది చేయాలో దానిని ఖచ్చితంగా చేయాలి.

संदर्भ सहित व्याख्याएँ

1. **''मनुष्य का आदर उसके पद, धन तथा विचार के कारण होता हैं, परन्तु ये सब एक प्रकार से बाहरी हैं, स्थायी नहीं।''**

लेखक परिचय :- डॉ. गुलाबराय का जन्म सन् 1888 में इटावा नगर में हुआ। उनकी आरंभिक शिक्षा मैनपुरी में हुई। हाईस्कूल में उन्होंने उर्दू, फ़ारसी और संस्कृत सीखी थी। उन्होंने

आगरा कॉलेज से बी.ए., दर्शनशास्त्र में एम.ए., और एल.एल.बी. की उपाधि प्राप्त की। गुलाबराय जी को निबन्ध लेखन से ख्याति मिली हैं। प्रबन्ध प्रभाकर, जीवन पथ, मेरे निबन्ध, अध्ययन और आस्वाद, फिर निराशा क्यों, मैत्री धर्म, ठलुआ क्लब आदि प्रसिद्ध निबन्ध संग्रह आपने लिखे हैं। विशेषरूप से वैयक्तिक तथा आत्मपरक निबन्धों की रचना की। बाबू गुलाबराय की प्रतिभा सर्वतोन्मुखी थी।

सन्दर्भ :- ऊपर्युक्त उद्धरण में लेखक चरित्र संगठन पर बल देते हुए इसके लिए आवश्यक गुणों का उल्लेख किया गया हैं।

भावार्थ/व्याख्या :- मनुष्य की विशेषता उसके चरित्र में हैं। चरित्र के कारण ही मनुष्य आदरणीय माना जा सकता हैं। मनुष्य का आदर उसके पद, धन तथा विचार के कारण किया जा सकता हैं। भय या स्वार्थ के कारण भी इनका आदर किया जा सकता हैं। ये सब बाहरी चीजें जो सिर्फ दिखाने के लिए हो सकती हैं। ये सब शाश्वत नहीं हैं।

विशेषताएँ :-

1) लेखक ने पाठ में विचारात्मक और भावात्मक दोनों पक्ष प्रस्तुत किये हैं।

2) उनकी भाषा में संस्कृत के तत्सम शब्दों के साथ उर्दू-फ़ारसी के शब्दों का भी प्रयोग हुआ हैं।

3) उनकी रचनाशैली व्याख्यात्मक तथा आलोचनात्मक दोनों ही हैं।

4) शैली में विचारों की स्पष्टता, वाक्यों की सरलता तथा अभिव्यक्ति की प्रभावोत्पादकता उल्लेखनीय हैं।

2. ''विनय विद्या का भूषण हैं। बिना विनय के विद्या शोभा नहीं देती।''

लेखक परिचय :- डॉ. गुलाबराय का जन्म सन् 1888 में इटावा नगर में हुआ। उनकी आरंभिक शिक्षा मैनपुरी में हुई। हाईस्कूल में उन्होंने उर्दू, फ़ारसी और संस्कृत सीखी थी। उन्होंने आगरा कॉलेज से बी.ए., दर्शनशास्त्र में एम.ए., और एल.एल.बी. की उपाधि प्राप्त की। गुलाबराय जी को निबन्ध लेखन से ख्याति मिली हैं। प्रबन्ध प्रभाकर, जीवन पथ, मेरे निबन्ध, अध्ययन और आस्वाद, फिर निराशा क्यों, मैत्री धर्म, ठलुआ क्लब, मेरी असफलताएँ, मन की बात कुछ उथले कुछ गहरे आदि प्रसिद्ध निबन्ध संग्रह आपने लिखे हैं। विशेषरूप से वैयक्तिक तथा आत्मपरक निबन्धों की रचना की हैं। बाबू गुलाबराय की प्रतिभा सर्वतोन्मुखी थी।

सन्दर्भ :- ऊपर्युक्त उद्धरण में लेखक चरित्र संगठन पर बल देकर उसके लिए आवश्यक गुणों का उल्लेख किया गया हैं।

भावार्थ/व्याख्या :- मनुष्य का मूल्य उसके चरित्र में हैं। चरित्र उन गुणों का समूह हैं जो हमारे व्यवहार से सम्बन्ध रखते हैं। इसमें विनय मुख्य हैं। जो विद्यार्थी जीवन से ही आवश्यक हैं। विनय विद्या का भूषण हैं। बिना विनय से जो विद्या सीखी जाती हैं वह जीवन के लिए शोभा नहीं देती। विनय के बिना विद्या से कोई लाभ नहीं। विनय केवल विद्या को नहीं वरन् धन और बल दोनों को शोभा देती हैं।

विशेषताएँ :-

1) चरित्र संगठन में विनय के महत्व का चित्रण लेखक ने संवेदनात्मक ढंग से किया हैं।

2) उनकी भाषा तत्सम, उर्दू-फ़ारसी शब्दों के अतिरिक्त व्याख्यात्मक तथा आलोचनात्मक शैली हैं।

3. **''सच्ची उदारता इस बात में हैं कि मनुष्य समझ जाए, उसके भावों का उतना ही आदर किए जाए, जितना कि अपने भावों का।''**

लेखक परिचय :- डॉ. गुलाबराय हिन्दी साहित्य जगत के सुप्रसिद्ध लेखक और साहित्यकार माने जाते हैं। इन्होंने प्रबन्ध प्रभाकर, जीवन पथ, मेरे निबन्ध, अध्ययन और आस्वाद, फिर निराशा क्यों, मैत्री धर्म, आदि प्रसिद्ध निबन्ध संग्रहों के साथ अनेक कहानियाँ, नाटक, उपन्यास की भी रचना कि हैं। वास्तव में बाबू गुलाबराय की प्रतिभा सर्वतोन्मुखी हैं।

सन्दर्भ :- ऊपर्युक्त उद्धरण में लेखक चरित्र संगठन पर बल देते हुए इनके आवश्यक गुणों का उल्लेख किया हैं।

भावार्थ/व्याख्या :- चरित्र संगठन में विनय के बाद उदारता महत्वपूर्ण हैं। उदाहरता का अर्थ केवल धन देना ही नहीं, दूसरों के प्रति उदार भाव रखना भी हैं। जो व्यक्ति अपने भावों के साथ-साथ दूसरे लोगों के मनोभावों का भी आदर करता हैं वही सच्ची उदारता कहलाती हैं। यह उदारता कर्त्तव्य भी कहलाती हैं।

विशेषताएँ :-

1) दूसरों के प्रति आदर भाव रखने का सन्देश लेखक दे रहें हैं।

2) उनकी भाषा शुद्ध साहित्यिक के साथ-साथ विचारात्मक एवं भावनात्मक हैं।

3) उनकी रचना शैली व्याख्यानात्मक तथा आलोचनात्मक भी हैं।

Rahul Publications

अभ्यास के लिए प्रश्न उत्तर

1. चरित्र संगठन में किन-किन गुणों की आवश्यक होती है ?

उत्तर

चरित्र उन गुणों का समूह है जो हमारे व्यवहार से सम्बन्ध रखते हैं। मनुष्य की विशेषता उसके चरित्र में है। चरित्र संगठन के लिए विनय, उदारता, लालच न पड़ना, धैर्य, सत्य वचन का प्रतिपालन करना और कर्त्तव्य परायणता आदि गुणों की आवश्यक हैं। यह सब गुण प्रायः स्वाभाविक होते हैं, परंतु आभ्यास से बढाये जाते हैं। अभ्यास के लिए काल ही विशेष उपयुक्त है। मनुष्य बनते समय जैसा बन जाए वैसा ही जिवंत पर्यंत रहता हैं। इन गुणों में विद्या का भूषण है। बिना विनय के विद्या शोभा नहीं देती। दुसरों के प्रति उदार भावना रखनी चाहिए। अपने भावों कि तरह दुसरों के भावनाओं का आदर करना उदारता हैं। लालच इसलिए दिया जाता है कि मनुष्य स्वः कर्त्तव्य से पतभ्रष्ट हो जाता हैं। किन्तु मनुष्य की श्रेष्ठता इसी में है कि वह न्याय से न हटे। कठिनाईयों में चित्त को स्थिर रखना धैर्य कहलाता है। सहकारिता ही मनुष्य की एकता एवं समाज कि स्थिती का मूल हैं। चरित्रवान पुरूष के लिए सत्य वचन के साथ मनसा, वाचा, कर्मणा का पालन करना आवश्यक हैं। वास्तव में यह सभी गुण चरित्र संगठन के लिए अनिवार्य है। इन सभी गुणों से चरित्र संगठित होता हैं।

2. चरित्र से आपका क्या तात्पर्य है ?

उत्तर

मनुष्य की विशेषता उसके चरित्र में है। चरित्र के कारण ही एक मनुष्य दुसरे मनुष्य से अधिक आदरणीय समझा जाता है। मनुष्य का आदर, उसके पद, धन तथा विचारोंके कारण होता है। परंतु यह सब एक प्रकार से बाह्य है, स्थाई नहीं। मनुष्य केवल विद्वान होने से कदापि वंदनीय नहीं हो सकता। मनुष्य का मुल्य उसके चरित्र में हैं। विनय, उदारता, लालच में न पडना, धैर्य, सत्य वचन का प्रतिपालन करना और कर्त्तव्यपरायणता यह सब गुण चरित्र में आते हैं। परंतु इन गुणों को अभ्यास से ही बढाया जा सकता हैं। चरित्र निर्माण के द्वारा आत्मबल का प्रकाश होता है और पता चलता है कि उसकी आत्मा कितनी बलवान है। भावी चरित्र निर्माण के लिए यह सब आवश्यक हैं।

3. जीवन में विनय का क्या महत्व हैं ?

उत्तर

विनय विद्या का भूषण है। बिना विनय के विद्या शोभा नहीं देती। भगवत गीता में ब्राह्मण का विशेषण विद्या-विनय संपन्न कहा गया हैं। विनय केवल विद्या का ही नहीं वरन् धन और बल

Rahul Publications

दोनो को भी शोभा देता हैं। विनय का आभाव एक प्रकार का खोखलापन प्रकट करता हैं। यदी विनयशील मनुष्य का समाज में प्रभाव कम होतो, इसमें विनयशील मनुष्य का दोष नहीं। यह समाज का दोष हैं। जीवन में अधिकांश ऐसे अवसर आते हैं कि समाज में विनय से सहगौरव कार्य सिद्ध हो सकता हैं। विनयशील मनुष्य अभिमान के दोष से बचा रहता हैं। अपनी विनम्रता से दुसरों में प्रेमभाव उत्पन्न करता हैं। और अपने में अपूर्व शांती का अनुभव करता है। इस विनयशील गुण से जीवन में सभी गुणों को पा सकते हैं। इसलिए विनय के साथ निरभीमान मनुष्यजाती का आदर, सहनशीलता इत्यादी अनेक सद्‌गुण लगे हुए हैं।

4. उदारता और लालच के लक्षण क्या हैं ?

उत्तर

उदारता का अभिप्राय दुसरों के प्रति उदारभाव रखना है। अपने भावों की तरह दुसरों के भावनाओं का आदर करना चाहिए। प्रत्येक मनुष्य में आदरणीय गुण होते हैं। केवल धन, विद्या अथवा पद ही आदर के पात्र नहीं होते। मेहनत करनेवालों में एक दैविप्रभा रहती हैं, जो सदा पूजायोग्य हैं। जो लोग अपने साथियों के प्रति आदरभाव रखते है, ये उनके भूलों को उनके हट तथा वैर को स्वयं को अपेक्षापूर्वक क्षमा कर देते हैं। ऐसे लोग परम उदार है। पर लालच में मनुष्य स्वयं कर्त्तव्य से पतभ्रष्ट हो जाता हैं। किन्तु मनुष्य की श्रेष्ठता इसी में हैं, कि न्याय के कर्म से न हटे। लालच केवल धन का ही नहीं वरन् हर प्रकार का होता हैं। विज्ञ पुरूष का यही कर्त्तव्य हैं, कि वह लालच से सदैव दूर रहे। जो लोग लालच से बच सकते हैं, अपनी इच्छाओं को रोक सकते हैं। वेही शक्ति संपन्न और प्रभावशाली चरित्र बनाने में समर्थ होते हैं।

Rahul Publications

2. बाज़ार दर्शन (బజారు దర్శనం)

- जैनेन्द्र कुमार

लेखक परिचय

जैनेन्द्र कुमार का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ जिले के कौड़ियागंज में जनवरी सन् 1905 को हुआ। उनके बचपन का नाम आनंदीलाल था। जन्म के दो साल बाद जब उनके पिता की मृत्यू हुई तो माता और मामा ने उन्हें संभाला। हस्तिनापुर के गुरूकुल से शिक्षा लेते समय उनका नाम जैनेन्द्र कुमार रखा गया। प्रेमचन्द के बाद हिन्दी के सबसे महत्वपूर्ण कथाकार के रूप में जैनेन्द्र कुमार अत्यन्त चर्चित रहे हैं। नारी मनोविज्ञान पर आधारित उपन्यास और कहानियाँ लिखने में इन्होंने जो अभूतपूर्व दक्षता दिखाई हैं, वह अतुलनीय हैं।

जैनेन्द्र कुमार की प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं - परख, त्यागपत्र, सुखदा, जयवर्द्धन, दशार्क, अनामस्वामी आदि उपन्यास के साथ-साथ नीलमदेश की राजकुमारी, पाजेब, एक रात, दो चिड़ियाँ, जयसंधि, फाँसी आदि (कहानी संग्रह), समय और हम, जैनेन्द्र के विचार, पूर्वोदय, साहित्य का श्रेय और प्रेम, मंथन, सोच विचार, प्रेम और परिवार, ये और वे, समय और हम आदि (निबन्ध संकलन)। इनके अतिरिक्त उनके कई संस्मरण और अनुवाद ग्रंथ भी हैं। ऐसे महान साहित्यकार का स्वर्गवास 24 दिसंबर सन् 1988 को हुआ।

Rahul Publications

రచయిత పరిచయము

జైనేంద్ర కుమార్ ఉత్తరప్రదేశ్‌లోని అలీగఢ్ జిల్లాకు చెందిన కౌడియాగంజ్‌లో 1905 సం॥లో జన్మించారు. ఈయన అసలు పేరు ఆనందీలాల్. ప్రేమ్‌చంద్ తర్వాత హిందీలో గొప్ప పేరు పొందిన రచయిత. స్త్రీ మనోవిజ్ఞానం మీద ఎన్నో ఉపన్యాసములు, కథలు రచించినారు. ఈయన ఆధ్యాత్మిక చింతన సాంప్రదాయికత మీద కాక అనుభవము, సంస్కృతి మీద ఆధారపడి ఉన్నది. ఈయన 1988 లో మరణించారు.

ప్రస్తుత పాఠము 'బజారు దర్శనము' లో సమకాలీన భౌతిక వాదముపై వ్యంగ్యాత్మకముగా చిత్రీకరించబడినది. ఈ రోజుల్లో మన జీవితాలను, కార్యకలాపాలను శాసించేది బజారు మాత్రమే. ఈ బజారును దర్శించుట వలన వచ్చే కష్టనష్టాలపై రచయిత వ్యంగ్యంగా చిత్రీకరించినారు.

सारांश

प्रस्तुत पाठ 'बाज़ार दर्शन' में जैनेन्द्र ने समकालीन भौतिकवादी दृष्टि का मजाक उडाया हैं। आज की जिंदगी में मानो बाजार ही हमारे तमाम कार्यकलाप, रीति-नीति, आचार-विचार आदि को

नियंत्रित करता हैं। बाजार में ग्राहक के धन की हानि होती हैं और माल बेचनेवाले का लाभ। इस लाभ के लिए ग्राहकों को आकर्षित कर वे उनका शोषण करते हैं। बाजार में वस्तुओं को ऐसा सजा-सजाकर रखते हैं कि यदि कोई भी ग्राहक उन वस्तुओं को देखते ही बहुत जल्दी ही लुभावीत हो जाता हैं।

ग्राहक कभी यह नहीं सोचते कि उनके पास जितना धन आता हैं उतने में पहले उनकी जरूरतों को पूरा करें। लेकिन वह जो भी वस्तु बाज़ार में दिखेगी, तमाम पैसे खर्च करके उस चीज़ को खरीदता हैं। अर्थात् बाज़ार एक शैतान के जाल जैसा हैं। पैसा होतो सामान आता हैं। यह सामान भी जरूरत की तरफ देखकर नहीं आते, पर अपनी 'पर्चेजिंग पावर' के अनुपात में आया बाज़ार हमेशा अपनी ओर आमंत्रित करता हैं। सबकुछ खरीदने के लिए उसकी ओर आकृष्ट करता हैं। बाज़ार में एक जादू हैं। जेब भारी हो और मन खाली हो, ऐसी हालत में जादू का असर खूब होता हैं। जेब खाली पर मन भरा न हो, तो भी जादू चल जाएगा। सभी सामान जरूरी और आराम को बढ़ाने वाला मालूम होता हैं। इससे बचने का एक ही उपाय हैं। मन लक्ष्य से भरा हो तो बाज़ार भी विस्तृत का विस्तृत ही रह जायेगा। बाजार की असलीकृतार्थता है कि आवश्यकता के समय काम आना। इसके लिए चूरन बेचनेवाला भगत एक उदाहरण हैं। वे हर रोज छः आने पैसे से ज्यादा चूरन नहीं बेचता। चार आने पूरे हुए नही कि भगत जी बाकी चुरन बालकों को मुफ्त में बांट देते हैं। कभी ऐसा नहीं हुआ है कि कोई उन्हें पच्चीसवां पैसा भी दे सके। एक बार लेखक को वे (चूरन बेचनेवाला) बाज़ार में दिखाई पड़ा। वे खुली आँख, तुष्ट और मग्न, चौक-बाज़ार में सबको अभिवादन करते हुए हँसते चले आ रहे हैं। वे एक छोटी पंसारी की दुकार पर रूककर अपनी आवश्यक जीरा और काला नमक खरीदकर चले गये। अन्य सभी उसके लिए नकारात्मक हैं।

उस भोले आदमी को अक्षरज्ञान तक भी है या नहीं पर उस पर बाज़ार के जादू ने काम नहीं किया। वह कुछ अपर जाति का तत्व हैं। लोग स्पिरिच्युल कहते हैं 'आत्मिक, धार्मिक, नैतिक कहते हैं।' बल्कि यदि उसी बल को सत्य बल मानकर बात की जाय तो कहना होगा कि संचय की तृष्णा और वैभव की चाह में व्यक्ति की निर्मलता ही प्रमाणित होती हैं। निर्बल ही धन की ओर झुकता हैं। वह अबलता हैं। बाज़ार को सार्थकता भी वहीं मनुष्य देता हैं जो जानता हैं कि वह क्या चाहता हैं और जो नहीं जानते कि वे क्या चाहते हैं, अपनी 'पर्चेसिग-पावर' के गर्व में अपने पैसे से केवल एक विनाशक शक्ति, शैतानी शक्ति, व्यंग्य की शक्ति ही बाज़ार को देते हैं। वे लोग बाज़ार का बाजारूपन बढ़ाते हैं। जिसका मतलब हैं कि कपट बढ़ाते हैं अर्थात् ग्राहक और बेचक मे परस्पर सद्भाव घटता हैं। एक की हानि में दुसरे को अपना लाभ दीखता हैं। और यह बाजार का, बल्कि इतिहास का सत्य माना जाता हैं। ऐसे बाज़ार को बीच में लेकर लोगों में आवश्यकताओं का आदान-प्रदान नही होता, बल्कि शोषण होने

Rahul Publications

लगता हैं। तब कपट सफल होता हैं, निष्कपट शिकार होता हैं। ऐसे बाज़ार मानवता के लिए विडंबना है और जो ऐसे बाज़ार का पोषण करता हैं उसका अर्थशास्त्र भी मायावी (कॅपीटलिस्टिक) शास्त्र हैं। वह अर्थशास्त्र अनीतिशास्त्र हैं। यह अनीतिशास्त्र पर भरोसा करनेवाला मनुष्य ही धन और चेतन पर विजय पाता हैं।

विशेषताएँ

जैनेन्द्र ऊपयुक्त निबन्धात्मक पाठ में प्रश्नोत्तर शैली के साथ-साथ इंटरव्यू शैली भी अपनायी। अतः निबन्ध में वे व्यक्ति के मानसिक दुर्बलताओं को उजागर करने में सफल रहें। जैनेन्द्र जी अपने इस निबन्ध में सृजनात्मकता के अलावा यथार्थता पर अधिक जोर दिया हैं। हिन्दी साहित्य जगत में वे एक ऐसे साहित्यकार हैं जो समाज के नित्य चलनेवाले संघर्षरत जीवन को मानसिक धरातल पर मंथन करने की भावना को उजागर करने में समर्थ हैं।

పాఠ్య సారాంశము

బజారు అనేది ఒక మాయాజాలం వంటిది. డబ్బును బట్టి సామానులు కొంటాము. ఆ సామానులు కూడా అవసరాన్ని బట్టి కాక మన 'పర్చేజింగ్ పవర్' (కొనగలిగే వ్యక్తి) కు తగినట్టు కొంటాము. బజారు మనలను ఎప్పుడూ తన వైపు ఆకర్షిస్తూ ఉంటుంది. అన్నీ కొనాలని మనము బజారు వైపు ఆకర్షితులమౌతాము.

బజారు ఒక గారడీ లాంటిది. జేబు నిండుగా ఉండి, మనసులో ఏమి కొనాలో తెలియనప్పుడు, జేబు ఖాళీగా ఉన్నా కూడా ఈ మంత్రజాలం మన మీద బాగా పనిచేస్తుంటుంది. వస్తువులన్నీ మన అవసరానికి తగినట్లు అనిపిస్తాయి. దీని నుండి తప్పించుకోవడానికి ఒకటే దారి. మనసులో కొనే ఉద్దేశ్యం ఉంటేనే బజారును దర్శించాలి. మన అవసరానికి తగినట్లు ఉపయోగపడితేనే బజారు మనకు ఉపయోగపడినట్లు. దీనికి చూర్ణం అమ్మే భత్ ఒక ఉదాహరణ, అతను రోజూ ఆరు అణాలకు మించి చూర్ణం అమ్మడు, నాలుగు అణాలు అమ్మడం పూర్తి కాగానే మిగిలిన చూర్ణాన్ని అక్కడి పిల్లలకు ఉచితంగా పంచుతూ ఉంటాడు. 25వ పైసా ఏ రోజూ ఆయన దగ్గర చూడలేదు. ఒకసారి నాకు ఆయన బజారులో కనిపించాడు. ఆయన నిండుగా, సంతృప్తిగా బజారులో అందరికి అభివాదం చేస్తూ నవ్వుతూ వెళుతున్నాడు. ఒక కిరాణా దుకాణము ముందు ఆగి తనకు కావలసిన జీలకర్ర, నల్ల ఉప్పు కొని వెళ్ళిపోయాడు. మిగిలిన వస్తువులతో ఆయనకు అవసరం లేదు. ఆయనకు అక్షర జ్ఞానం లేకపోయిన అతనిపై బజారు యొక్క మంత్రజాలము పనిచేయలేదు. ఆయనలో ఏదో అద్భుత శక్తి ఉన్నది దానినే ఆధ్యాత్మికత అంటారు. ఇదే నిజమైన బలం, ఏదో ఒకటి కూడ బెట్టాలనో, జల్సాగా ఉండాలనో కోరుకుంటే మనిషి బలహీనుడైపోతాడు.

వ్యక్తి తనకు ఏది అవసరమో, ఏది కాదో తెలుసుక్నువాడు బజారును దర్శించుట లాభదాయకంగా ఉంటుంది. ఏదైనా కొనగలననే ('పర్చేజింగ్ పవర్') గర్వం బజారుకు వినాశనాన్ని, ఎగతాళిని కలుగజేస్తాయి. ఇది బజారు

యొక్క స్వరూపాన్ని మార్చుతుంది. అంటే ఒకరినొకరు మోసం చేసుకొనుట వలన అమ్మేవారు, కొనేవారు ఇద్దరిలోను సద్భావం తగ్గిపోతుది. ఒకరి హానీ ఇంకొకరికి లాభంలా కనిపిస్తుంది. ఇది బజారు దర్శనమునకు చెందిన ప్రామాణిక సత్యము. ఇటువంటి బజారుల వలన అవసరాలు ఇచ్చిపుచ్చుకోవడం జరుగదు. అంతకేకాక ఎంతో బాధపడవలసి వస్తుంది. అప్పుడు మోసము జయిస్తుంది. మంచితనము ఓడిపోతుంది. ఇటువంటి బజారులను సమర్థించే అర్థశాస్త్రాన్ని మాయావీ శాస్త్రము (capatalistic) అంటారు. ఈ అర్థశాస్త్రము అవినీతి శాస్త్రముగా భావించబడుతుంది.

संदर्भ सहित व्याख्याएँ

1. ''बाज़ार आमंत्रित करता हैं कि आओ मुझे लूटो और लूटो।''

लेखक परिचय :- यह उद्धरण जैनेन्द्र कुमार के द्वारा लिखा गया निबन्ध 'बाज़ार दर्शन' से लिया गया हैं। आपका जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ जिले के कौडियागंज में जनवरी सन् 1905 को हुआ। हस्तिनापुर के गुरूकुल से शिक्षा लेते समय उनका नाम जैनेन्द्र कुमार रखा गया। जैनेन्द्र कुमार हिन्दी साहित्य को पुष्टी करते हुए कई ऐसे उपन्यास लिखे हैं जो मनोवैज्ञानिक पहलुओं की खोज करके उन्हें बड़े कौशल से प्रस्तुत करते हैं। उनकी प्रमुख रचनाओं में कुछ इस प्रकार हैं - परख, सुनिता, त्यागपत्र, सुखदा, जयवर्धन, दशार्क, अनामस्वामी। इन उपन्यास के अतिरिक्त राजकुमारी, पाजेब जैसी कहानियाँ भी लिखी हैं। इनके अतिरिक्त संस्मरण और अनुवाद ग्रन्थ भी हैं।

सन्दर्भ :- बाज़ार हमारे जिन्दगी के तमाम कार्यकलाप, रीतिरिवाज़, आचार-विचार को किस प्रकार नियंत्रित करता हैं, उसका व्यंग्य चित्रण लेखक इसमें करते हैं।

व्याख्या/भावार्थ :- बाज़ार में सामान जरूरत की तरफ देखकर नहीं आता, अपनी पर्चेजिंग पावर के अनुपात में आता हैं। बाजार एक शैतान का जाल जैसा हैं जो हमें लूटने के लिए हमेशा अपनी ओर आमंत्रित करता हैं। पहले सिर्फ अपने को देखने के लिए आमंत्रित करता हैं और बाद में मनुष्य को असंतोष तृष्णा और ईर्ष्यों से घायल कर मनुष्य को सदा के लिए बेकार बना डालता हैं।

विशेषताएँ

1. इसमें बाज़ार दर्शन के प्रति व्यंग्य किया गया हैं।
2. उनकी भाषा में शुद्ध खड़ीबोली के अलावा सृजनशीलता के साथ चिंतन का मणि-कांचन संयोग भी दिखाई देता हैं।

Rahul Publications

3. जैनेन्द्र कुमार जी अपने साहित्य के माध्यम से मनुष्य के मानसिक कमजोरियों को उजागर करने में सिद्धहस्त हैं।

2. **''संचय की तृष्णा और वैभव की चाह में व्यक्ति की निर्बलता ही प्रमाणित होती हैं।''**

लेखक परिचय :- यह उद्धरण जैनेन्द्र कुमार के द्वारा लिखा गया निबन्ध 'बाज़ार दर्शन' से लिया गया हैं। आपका जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ जिले के कौडियागंज में जनवरी सन् 1905 को हुआ। हस्तिनापुर के गुरूकुल से शिक्षा लेते समय उनका नाम जैनेन्द्र कुमार रखा गया। जैनेन्द्र कुमार हिन्दी साहित्य को पुष्टी करते हुए कई ऐसे उपन्यास लिखे हैं जो मनोवैज्ञानिक पहलुओं की खोज करके उन्हें बड़े कौशल से प्रस्तुत करते हैं। उनकी प्रमुख रचनाओं में कुछ इस प्रकार हैं - परख, सुनिता, त्यागपत्र, सुखदा, जयवर्धन, दशार्क, अनामस्वामी। इन उपन्यास के अतिरिक्त राजकुमारी, पाजेब जैसी कहानियाँ भी लिखी हैं। इनके अलावा संस्मरण और अनुवाद ग्रन्थ भी हैं।

व्याख्या/भावार्थ :- बाज़ार में एक जादू हैं। सभी सामान जरूरी और आराम को बढ़ानेवाला मालूम होता हैं। मन को बंद रखना आसान नहीं हैं। जहाँ तृष्णा है, बटोर ने की स्पृहा हैं, उसके आगे कोई बल नहीं चलता। सबको संचय करने की तृष्णा और वैभव को पाने की चाह व्यक्ति को निर्बल बनाती हैं। निर्बल धन की ओर झुकता हैं। वह अबलता हैं। इससे बचकर दूर रहना आसान नहीं हैं।

Rahul Publications

विशेषताएँ

1. लेखक बाज़ार दर्शन जैसे जादू से जागरूक रहने का उपदेश देते हैं।
2. उनकी भाषा में शुद्ध खड़ीबोली के साथ सृजनशीलता का चिंतन एवं मणि-कांचन संयोग भी दिखाई देता हैं।
3. जैनेन्द्र कुमार जी अपने साहित्य के माध्यम से मनुष्य के मानसिक कमजोरियों को उजागर करने में सिद्धहस्त हैं।

3. **''ऐसे बाज़ार को बीच में लेकर लोंगो में आवश्यकताओं का आदान-प्रदान नहीं होता, लेकिन शोषण होने लगता हैं।''**

लेखक परिचय :- यह उद्धरण जैनेन्द्र कुमार के द्वारा लिखा गया निबन्ध 'बाज़ार दर्शन' से लिया गया हैं। आपका जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ जिले के कौडियागंज में जनवरी सन् 1905 को हुआ। हस्तिनापुर के गुरूकुल से शिक्षा लेते समय उनका नाम जैनेन्द्र कुमार रखा गया।

जैनेन्द्र कुमार हिन्दी साहित्य को पुष्ट करते हुए कई ऐसे उपन्यास लिखे हैं जो मनोवैज्ञानिक पहलुओं की खोज करके उन्हें बड़े कौशल से प्रस्तुत करते हैं। उनकी प्रमुख रचनाए कुछ इस प्रकार हैं - परख, सुनिता, त्यागपत्र, सुखदा, जयवर्धन, दशार्क, अनामस्वामी। इन उपन्यास के अतिरिक्त राजकुमारी, पाजेब जैसी कहानियाँ भी लिखी हैं। इनके अतिरिक्त संस्मरण और अनुवाद ग्रन्थ भी हैं।

सन्दर्भ :- बाज़ार हमारे जिन्दगी के तमाम कार्यकलाप, रीतिरिवाज़, आचार-विचारों का किस प्रकार नियंत्रण करता हैं, उसका व्यंग्य चित्रण लेखक इसमें करते हैं।

व्याख्या/भावार्थ :- यदि व्यक्ति पर्चेजिंग पावर के गर्व में बाजार दर्शन करता हैं तो इससे न बाज़ार से लाभ मिलता हैं न बाज़ार को लाभ देता हैं। वे बाज़ार में कपट को बढ़ाते हैं। इससे ग्राहक और बेचक दोनों को अपना लाभ या हानि दिखती हैं। ऐसे बाज़ार से लोगों में आवश्यकताओं का आदान-प्रदान नहीं होता हैं बल्कि शोषण होने लगता हैं। अर्थात् दोनों एक दूसरे को धोखा देने में लगे रहते हैं। ऐसा बाज़ार मानवता के लिए विडंबना हैं।

विशेषताएँ

1. कपट बाज़ारों से होनेवाली हानि के बारे में लेखक कह रहे हैं।
2. उनकी भाषा में सृजनात्मकता के साथ-साथ व्यंग्यात्मकता हैं।
3. जैनेन्द्र कुमार जी अपने साहित्य के माध्यम से मनुष्य के मानसिक कमजोरियों को उजागर करने में सिद्धहस्त हैं।

अभ्यास के लिए प्रश्न उत्तर

1. चूरनवाले भगत जी पर बाज़ार का जादू क्यों नहीं चल सकता, इसका क्या कारण हैं ?

उत्तर

चूरनवाले भगत जी बाज़ार में हर रोज चूरन बेचते हैं। लेकिन किसी भी दिन चूरन से उन्होंने छः आने से ज्यादा नहीं कमाये। चार आने पूरे हुए नहीं की भगत जी बाकी चूरन बालकों को मुफ्त में बांट देते हैं। कहीं ऐसा नहीं हुआ की कोई उन्हें पच्चीसवा पैसा भी दे सके। एक बार वे मुझे बाज़ार चौक में दिखाई पडे। एक छोटी पन्सारी की दुकान पर रूक कर उन्हें आवश्यक जीरा और काला नमक खरीदकर चलें गये। उसके आगे आस-पास चांदनी बिछी रहती हैं तो भी वे छूते तक

नहीं। इससे यह स्पष्ट होता हैं कि जितने पैसे में वह अपना माल बेचना चाहते हैं, उसी में बेचते हैं, और जो बाज़ार से खरीदना चाहते हैं उसी को खरीदलेते हैं। सारे बाज़ार की सत्ता उनके लिए तभी तक उपयोगी हैं जब तक उनकी आवश्यक वस्तुएँ उन्हें चाहिए। वह बाज़ार के जादू में पडने वाले नहीं हैं।

2. अर्थशास्त्र को मायावी शास्त्र क्यों कहा होगा?

उत्तर

बाज़ार की सार्थकता भी वहीं मनुष्य देता हैं, जो जानता हैं कि उसे क्या चाहिए और क्या नहीं चाहिए। नहीं तो अपने 'पर्चेसिंग पॉवर' के गर्व में अपने पैसों से केवल एक विनाशक शक्ति, शैतानी शक्ति, व्यंग की शक्ति ही बाज़ार को देते हैं। न तो वे बाज़ार से लाभ उठाते हैं, न उस बाजार को सच्चा लाभ देते हैं। वह लोग बाजारूपन बढाते हैं, जिसका मतलब हैं कपट को बढाना। कपट की बढती की अर्थ परस्पर में सद्भाव का घाटा। इसके कारण कोरे ग्राहक और बेचक दोनो एक दुसरे को ठगने की चेष्टा में होते हैं। एक की हानी में दुसरे को अपना लाभ दिखता हैं और यह बाज़ार का बल्कि इतिहास का सत्य माना जाता हैं। ऐसे बाज़ार को बिच में लेकर लोंगों में आवश्यकताओं का आदान-प्रदान नहीं होता। बल्कि शोषन होने लगता हैं। ऐसे में कपट सफल होता हैं। निष्कपट व्यक्ति शिकार होता हैं। ऐसा बाज़ार मानवता के लिए विडंबना हैं। ऐसे बाज़ारों को शोषन करनेवाला अर्थशास्त्र, मायावी और अनितीशास्त्र कहलाता हैं।

Rahul Publications

3. भाभी (వదిన)

- महादेवी वर्मा

लेखिका का परिचय

हिन्दी काव्य जगत् की रहस्यवादी कवयित्री, 'आधुनिक मीरा' महादेवी वर्मा का जन्म फर्रूखाबाद में सन् 1907 ई. में एक प्रतिष्ठित परिवार में हुआ था। उन्हें सूर, तुलसी, मीरा आदि का परिचय अपनी माता से मिल गया था। शिक्षित परिवार के वातावरण में रहने के कारण बचपन से ही महादेवी को काव्य से लगाव हो गया था। उन्होंने इलाहाबाद से संस्कृत में एम.ए. किया और प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्राचार्या बनी। महादेवी का पद्य और गद्य दोनों पर समान अधिकार हैं। अनेक वर्षों तक उन्होंने 'चाँद' मासिक पत्रिका का संपादन भी किया। काव्य के क्षेत्र में उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ 'नीहार', 'नीरजा', 'रश्मि', संध्यागीत आदि कविता संग्रहोंसे महादेवी जी को हिन्दी साहित्य जगत् में 'आधुनिक मीरा' नाम से जाना जाता हैं। इनके गद्य की भाषा भी इनकी कविताओं की भाषा के समान अलंकृत तथा परिमार्जित हैं।

రచయిత పరిచయము

మహాదేవి వర్మ ఫరూకాబాద్‌లో 1907 సం॥లో జన్మించినారు. కావ్య జగత్తులో ఈమెను రహస్యవాది కవయిత్రి అని ఆధునిక మీరా అని పిలుస్తారు. పద్యము, గద్యము రెండింటిలో గొప్ప రచనలు చేసినారు. ఛాయావాది కావ్యధారకు మూలస్థంబం వంటి వారు. ఈమె కావ్యాలలో విరహవేదన కరుణ, దుఃఖము స్పష్టంగా కనిపిస్తాయి. నీహార్, నీరజ, రష్మి, సంధ్యాగీత్ ఈమె ముఖ్య రచనలు, ఈమె 1987 లో మరణించినారు. 'భాభీ' అనుపాఠము రచయిత్రి తన గతములో జరిగిన విషయములను గురించి వ్రాసిన రేఖాచిత్రము. మార్వాడీ విధవ పట్ల రచయిత్రి యొక్క స్నేహము, సానుభూతి, ఆత్మీయత, అన్నీ చక్కగా వివరించబడినవి. అప్పటి ఆచార వ్యవహారాలు ఒక విధవ జీవితమును ఏ విధముగా ప్రభావితము చేసాయో దీనిలో వివరించబడినవి.

सारांश

लेखिका अपने बचपन की घटनाओं को याद कर रही हैं। बचपन में उसे स्कूल जाना बडी दुःख की बात थी। स्कूल जाना उनके लिए इतनी पीड़ा देती थी कि इसको भगवान का दिया हुआ जीवन मानती हैं। अपने घर में रहनेवाली नौकरानी की लडकी पर उसे ईर्ष्या हुआ करती थी। ऐसे समय में लेखिका बूढ़ी कल्लू की माँ को सड़कों पर लाते वक्त रास्ते में सभी चीजों को देखती हुई आनंद पाती थी। वहाँ पर एक मारवाडी के दुकान पर वृद्ध सेठजी बैठते थे। वहाँ के परदे के छेद से दो आँखे दिखाई देती थी। कल्लू की माँ के डर से उन आँखों के बारे में जानने के लिए कोशिश करने पर भी बहुत समय

Rahul Publications

तक सफल नही हो पायी। चेहरा तो देख नहीं पायी, पर कल्लू की माँ से उसके बारे में पता चला कि वह अनाध भी हैं और अभागी भी। बूढ़े सेठ के बेटे से भाभी की शादी हुई थी, पर उसी साल में उसके पति की मृत्यु हो गयी। तब से इस बेचारी की स्थिति बहुत बेचैन हो गयी। उसकी ननंद के आगे उसकी स्थिति और भी बिगड़ गयी थी। पर एक दिन गीली सड़क पर लेखिका के पैर पिसलने से उसकी मुलाकात भाभी से हो गयी। परदे से निकलकर उसने इसकी रक्षा की। तब से उसके अकेले जीवन में लेखिका को स्थान मिला। वह निराहार और मिताहार से दुर्बल देहसे निरंतर परिश्रम करती रहती थी। उस 19 वर्ष की युवती की दयनीय स्थिति बालिका के समझ में नहीं आती थी। लेकिन उम्र बढ़ जाने के बाद दयनीय स्थिति लेखिका को समझ में आ गयी। भाभी के एकांत जीवन में आठ वर्ष की बालिका ही उसकी साथी थी। पर यह बालिका उस विधवा भाभी के संसार में प्रवेश करने में असमर्थ थी। लेखिका की माँ भी माता-पिताविहीन विधवा बालिका की स्थिति पर दुःखित हुआ करती थी। लेखिका की सारी गुडियाँ भाभी के खंडहर पर पहुँच गई। वह अपनी गुडिया को मारवाडिन की तरह श्रृंगार किया करती थी। भाभी को तो सफेद ओढ़नी और काला लहंगा या काली ओढ़नी और सफेद बूटीदार कत्यई लहंगा पहनती थी, पर उसकी ननंद के लिए हर तीज़-त्योहार पर बढ़े सुन्दर कपडे बनते थे। यह बात लेखिका के लिए असह्य हो गई थी।

उसने स्कूल में कशीदा काढ़ना सीखकर भाभी के लिए अपनी रंगीन साडी की तरह एक और साडी मंगवाकर छिपा छिपाकर उस ओढ़नी पर नीले फूल काढ़ना आरंभ किया। एकदिन वह चुपचाप भाभी पर लंबी चौड़ी ओढ़नी डालती है। भाभी भी अपनी स्थिति भूलकर एक क्षण के लिए अपना सुध भूल गयी। इतने में यह दृश्य देखकर ससुर और ननंद का कृद्ध होना, यह देखकर लेखिका का रोना, वह मन से ही नहीं, शरीर से बेहोश होना सबकुछ हो गया।

लेखिका घर पहुँचा दी गयी। ज्वर से बहुत दिन बीमार पड़ गयी। इस घटना के बाद सारी स्थिति उलट गई। बालिका प्रौढ़ हो गयी थी और युवती वृद्धा बन गयी। इसके बाद लेखिका का परिवार इंदौर चला गया। लेखिका को इसके बाद पता चला कि भाभी के ससुर का स्वर्गवास हो गया, कठोर संसार ने भाभी की कैसी रक्षा की, यह आज तक अज्ञात हैं। अब भी लेखिका को रंगीन कपडे देखने से बचपन की विषाद घटनाएँ याद आती हैं । वृद्ध ससुर चला गया, पर अब भाभी की स्थिति कैसी होगी। यह सोचकर लेखिका विचलित हो जाती हैं कि शायद भाभी भी चली गयी होगी। इस विचार से वह भयभीत हो जाती हैं। और कोई ऐसी होनी न हो जाय। यह सोचती है ।

विशेषताएँ

मारवाडी विधवा के प्रति लेखिका का स्नेह, संपूर्ण सहानुभूति, आत्मीयता और अंतरंग भाव इस रचना में साकार हुआ हैं। उसके प्रति अद्‌भुत संवेदनशीलता प्रदर्शित करती हैं। उसके जीवन को उन्होंने अत्यंत समीप से देखा था। परंपराएँ, रीति-रिवाज तथा रूढ़ियाँ उसके व्यक्तित्व को कुंठित कर देती हैं। यह कुप्रथाएँ उसे असमय वैधव्य का अभिशाप लेकर जीवन जीने के लिए विविश करती हैं। किन्तु इसके कारण उसकी हृदय-कलीका सदा के लिए मुरझा जाती हैं। लेखिका ने 'भाभी' पाठ को अपने

द्वारा रचित 'अतीत के चलचित्र'नामक संस्मरण से लिया हैं। उन्होंने भाभी चरित्र के द्वारा विधवा की भावनाओं का अत्यन्त हृदयंगम चित्र अंकित किया। वे रहस्यवादी कविता के चार प्रमुख स्तंभो में एक हैं और संस्कृतनिष्ठ हिन्दी भाषा का प्रयोग करती हैं। छायावाद कविता को बल प्रदान करते हुए वे हिन्दी साहित्य जगत पर अपनी छाप डालने में समर्थ रही।

పాఠ్య సారాంశము

రచయిత్రి తన బాల్యకాల విశేషాలను గుర్తుచేసుకుంటుంది. చిన్నతనంలో స్కూలుకు వెళ్ళడం తనకు ఎంతో బాధాకరంగా ఉండేది. కానీ ఇది కూడా భగవంతుడు ఇచ్చిన జీవపితమే కదా అని భావించేది. ఇంటి పనులు చేసే అమ్మాయి కూతురంటే రచయిత్రికి ఎంతో ఈర్ష్యగా ఉండేది. రోజు కలూల్ల వాళ్ళ అమ్మతో స్కూలుకి వెళుతూ, రోడ్డుమీద అన్ని చూస్తూ ఆనందాన్ని అనుభవించేది. దారిలో ఒక మార్వాడీ దుకాణం, ఒక ముసలి సేఠ్, అక్కడే ఉన్న పరదా చాటునుంచి చూస్తున్న రెండు కళ్ళు ఆమెకు కనిపిస్తూ ఉండేవి. అవి ఎవరివో తెలుసుకోవాలన్న ప్రయత్నము కల్లూ వాళ్ళ అమ్మ భయం వలన ఫలించలేదు. తర్వాత ముఖం చూడకున్న కల్లూ వాళ్ళ అమ్మ ద్వారా ఆమె ఒక అనాద అని దురదృష్టవంతురాలని సేఠ్ కొడుకుతో వివాహం అయిన సంవత్సరమే భర్త చనిపోవడంతో ఆమె జీవితం అస్తవ్యస్తమైపోయిందని తెలుస్తుంది. ఆమె ఆడపడుచు ఊరి నుంచి వచ్చినప్పుడు ఆమె పరిస్థితి ఇంకా దిగజారిపోయేది. కానీ ఒక రోజు రోడ్డుపై ఉన్న నీళ్ళలో కాలు జారడం వలన భాభీని కలవడం జరిగినది. పరదా నుంచి ఇవతలకి వచ్చి భాభీ రచయిత్రిని కాపాడింది. అప్పటి నుండి ఆమె ఒంటరి జీవితములో రచయిత్రి ఒక భాగమైనది. ఉపవాసంతో తిండి సరిగా తినక కృషించిన దేహంతో ఆమె రోజంతా కష్టపడుతూనే ఉండేది.

19 సంవత్సరాల ఆ యువతి దీనస్థితి రచయిత్రి చిన్న వయసుకి అర్థం కాలేదు. విధవ ఒంటకి జీవితానికి ఎనిమిది సంవత్సరాల బాలికే సర్వస్వం అయినది. తల్లి, తండ్రి లేని విధవ బాలిక స్థితిపట్ల రచయిత్రి తల్లి ఎంతో బాధపడేది. రచయిత్రి బొమ్మలన్నీ భాభీ ఇంటికి చేరాయి. ఆమె ఆ బొమ్మలకు మార్వడీ అమ్మాయిలాగా అలంకరణ చేసేది. కానీ భాభీ మాత్రం తెల్ల దుప్పట, నల్ల లహంగ, నలుపు చున్నీలను తప్ప వేరేవి ధరించేది కాదు. కానీ ఆమె ఆడపడుచు ప్రతి పండుగకు మంచి బట్టలు ధరించేది. ఇది రచయిత్రి చిన్న మనసు సహించేది కాదు.

రచయిత్రి తన స్కూలులో దారాలు నేయడం చీరలపై పూలు కుట్టడం నేర్చుకున్నప్పుడు తన రంగు చీరతో పాటు ఎవరికీ తెలియకుండా వేరొక చీర తెప్పించి పూలు కుట్టడం ఆరంభించింది. ఒక రోజు భీభీ కూర్చుని ఉన్నప్పుడు ఆ రంగులు చీరను ఆమె మీద కప్పింది. భాభీ కూడా ఆ చీరను చూస్తూ తన యదార్ధ స్థితి ఒక్కక్షణం మచ్చిపోయింది. ఇంతలో మామగారు, అడపడుచు రావడం ఆగ్రహించడం అది చూచి రచయిత్రి భయపడి ఏడుస్తూ స్పృహా కోల్పోవడం క్షణాలలో జరిగిపోయాయి.

ఆ తర్వాత ఏమి జరిగిందో రచయిత్రికి తెలియలేదు. జ్వరంతో చాలా రోజులు జబ్బుపడినది. ఈ ఘటన తర్వాత పరిస్థితులన్నీ తారుమారు అయినవి. బాలిక యుక్తవయస్కురాలు అయినది యువతి వృద్ధురాలైనది. ఆ తర్వాత రచయిత్రి కుటుంబం ఇండోర్ వెళ్ళిపోయినది. కొన్ని రోజుల తర్వాత భాభీ వాళ్ళ మామగారు పోయారని ఈ క్రూర సమాజం వారిని ఎలా కాపాడిందనేది రచయిత్రి ఊహకందలేదు. ఎప్పుడు రంగు వస్త్రాలు చూచినా

చిన్నప్పటి విషాద సంఘటన గుర్తుకు వచ్చేది. మామగారు పోయిన తర్వాత ఆమె ఎలా ఉందో ఆసలు ఉన్నదో లేదో అనే ఆలోచనలతో ఆమె భయకంపితురాలైనది. కానీ అలా జరుగకూడదని ఆమె ఆశించినది.

संदर्भ सहित व्याख्याएँ

1. **''प्रायः निराहार और निरंतर मिताहार से दुर्बल देह से वह कितना परिश्रम करती थी, यह मेरी बालक- बुध्दि से छिपा न रहता था।''**

लेखिका का परिचय :- आधुनिक मीरा एंव छायावाद के प्रमुख चार स्तंभो में से एक माने जाने वाली अद्वितीय रचयित्री महादेवी वर्मा का जन्म फरूखाबाद में सन् 1907 में एक प्रतिष्ठित परिवार में हुआ था। उन्होंने इलाहाबाद से संस्कृत में एम.ए. किया और प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्राचार्या बनी। ऊपर्युक्त उद्धरण प्रस्तुत पाठ 'भाभी' महादेवी वर्मा का संस्मरणात्मक रेखाचित्र हैं जो अतीत के चलचित्र में संकलित हैं।

संदर्भ :- इस में विधवा भाभी की कारूणिक स्थिति का वर्णन किया हैं। और समाज में विधवा की दीन स्थिति का सजीव चित्रण मिलता हैं।

व्याख्या/भावार्थ :- विधवा भाभी की स्थिति इतनी हीन हो गई कि उसके खाने के बारे में जानने वाले भी कोई नहीं हैं। वह कभी-कभी निराहार और हर रोज मिताहार से बहुत दुर्बल हो गई। फिर भी सारा घर का काम उसी को करना पड़ता हैं। उस वक्त लेखिका छोटी बालिका होने के कारण वह यह जान नहीं लेती हैं कि क्यों भाभी की स्थिति इतनी दीन हैं। इसी के बारे में लेखिका सोचती रहती हैं।

Rahul Publications

विशेषताएँ

1) लेखिका महादेवी वर्मा के काव्य में चाहे गद्य हो या पद्य हो कविताओं की भाषा के समान आत्माभिव्यक्तिपरकता रही हैं। उन्होंने 'चाँद' मासिक पत्रिका का संपादन भी किया।

2) 'यामा' कविता संकलन पर उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला। काव्य के क्षेत्र में 'नीहार', 'नीरजा', 'रश्मि', संध्यागीत आदि उनकी प्रसिद्ध कृतियाँ हैं।

3) इसमें (प्रस्तुत पाठ में) भारतीय समाज में विधवा की जो दयनीय स्थिति थी, इसका सजीव चित्रण किया गया हैं।

2. **''सबसे कठिन दिन तब आते थे, जब वृद्ध सेठ की सौभाग्यवती पुत्री अपनी नैहर आती थी।''**

लेखिका का परिचय :- आधुनिक मीरा एवं छायावाद के प्रमुख चार स्तंभो में से माने जाने वाली एक अद्वितीय रचयित्री के रूप में महादेवी वर्मा का जन्म फर्रूखाबाद में सन् 1907 में एक प्रतिष्ठित परिवार में हुआ था। उन्होंने इलाहाबाद से संस्कृत में एम.ए. किया और प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्राचार्या बनी। ऊपर्युक्त उद्धरण प्रस्तुत पाठ 'भाभी' महादेवी वर्मा का संस्मरणात्मक रेखाचित्र हैं जो अतीत के चलचित्र में संकलित हैं।

संदर्भ :- इस में विधवा भाभी की कारूणिक स्थिति का वर्णन किया हैं। और समाज में विधवा की दीन स्थिति का सजीव चित्रण किया हैं।

व्याख्या/भावार्थ :- पति के मरने के बाद भाभी की स्थिति घर तक ही सीमित हो गई। सारे घर को संभालना, अपने मामा वृद्ध सेठ को समय पर खिलाना, शहर से ननंद आती हैं तो उसका आदर-सत्कार करना सभी काम उन्हीं को करना पडता हैं। जब वृद्ध सेठ की सौभाग्यवती पुत्री अपने नैहार आती थी। तब भाभी की स्थिति और भी दयनीय हो जाती हैं। उसके चले जान के बाद उसके दुर्बल गोरे हाथों पर जलने के लंबे, काले निशान और पैरों पर नीले दाग रह जाते थे। जब तक वह ननंद घर में रहती हैं तब तक भाभी की दशा बहुत कारूणिक हो जाती हैं।

विशेषताएँ

1) इसमें भारतीय समाज में विधवा की जो दयनीय स्थिति थी, इसका सजीव चित्रण किया गया हैं।

2) लेखिका महादेवी वर्मा का काव्य हो या गद्य हो कविताओं की भाषा के समान अलंकृत तथा परिमार्जित रही हैं। उन्होंने 'चाँद' मासिक पत्रिका का संपादन भी किया।

3) 'यामा' कविता संकलन पर उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला। काव्य के क्षेत्र में 'नीहार', 'नीरजा', 'रश्मि', संध्यागीत आदि उनकी प्रसिद्ध कृतियाँ हैं।

3. **''रंगीन कपडों में जो मुख धीरे-धीरे स्पष्ट होने लगता हैं, वह कितना करूण और कितना मुरझाया हुआ हैं।''**

लेखिका का परिचय :- आधुनिक मीरा एंव छायावाद के प्रमुख चार स्तंभो में से एक माने जाने वाली अद्वितीय रचयित्री महादेवी वर्मा का जन्म फर्रूखाबाद में सन् 1907 में एक प्रतिष्ठित परिवार में हुआ था। उन्होंने इलाहाबाद से संस्कृत में एम.ए. किया और प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्राचार्या बनी। ऊपर्युक्त उद्धरण प्रस्तुत पाठ 'भाभी' महादेवी वर्मा का संस्मरणात्मक रेखाचित्र हैं जो अतीत के चलचित्र से संकलित हैं।

संदर्भ :- प्रस्तुत संदर्भ में विधवा भाभी की कारूणिक स्थिति का वर्णन किया हैं। और समाज में विधवा की दीन स्थिति का सजीव चित्रण किया हैं।

Rahul Publications

व्याख्या/भावार्थ :- बचपन में लेखिका की मुलाकात भाभी से होती हैं। वह अनाथिनी और अभागी थी। घर में उसकी स्थिति बहुत दयनीय थी। लेखिका इस से दुःखित होकर अनजाने में ही उसे रंगीन ओढ़नी ओढाती हैं। इससे उसका ससुर क्रोधित होता हैं। सारी स्थिति उलट जाती हैं। लेखिका इंन्दौर चली जाती हैं। बाद में भाभी की स्थिति कैसी थी, यहि विषय सोचती हैं कि रंगीन कपडों में भी भाभी का मुख बडा दुखमय और मुरझाया हुआ था। अब उसकी स्थिति कैसी होगी।

विशेषताएँ

1) लेखिका महादेवी वर्मा का काव्य हो या गद्य हो, कविताओं की भाषा के समान आत्माभिव्यक्तिपरकता रही हैं। उन्होंने 'चाँद' मासिक पत्रिका का संपादन भी किया।

2) 'यामा' कविता संकलन पर उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला। काव्य के क्षेत्र में 'नीहार', 'नीरजा', 'रश्मि', संध्यागीत आदि उनकी प्रसिद्ध कृतियाँ हैं।

3) इसमें (प्रस्तुत पाठ में) भारतीय समाज में विधवा की जो दयनीय स्थिति थी, इसका सजीव चित्रण किया गया हैं।

अभ्यास के लिए प्रश्न उत्तर

1. 'भाभी' नामक पाठ के माध्यम से लेखिका के उद्देश को स्पस्ट किजिए ?

उत्तर

'भाभी' महादेवी वर्मा जी के द्वारा लिखा गया पाठ हैं। आठ वर्ष की दशा में लेखिका को भाभी से परिचय होता हैं। उसको मालुम हो जात हैं कि वह अनाथिनी भी है और अभागी भी। पति मरने के बाद ससुराल में विधवा कि जो दयनीय स्थिती होती हैं उसका सजीव चित्रण किया गया हैं। उसे निराहार और निरंतर मिताहार रहकर भी पूरा दि परिश्रम करना पडता है। उसे घर से बाहर तक ही नहीं बल्कि परदे से बाहर आना भी मना था। घर में रहकर भी विधवा को अकेलापन भोगना पडता है। उसके लिए न संगी न साथी, बिना किसी प्रकार से निरंतर वृधा होने की साधना में लीन रहना पडता है। यदि वह परंपरा और रिती-रीवाज से बाहर आती हैं तो उसके जीवन का करून अंत हो जाता है। मारवाडी विधवा के प्रति लेखिका का स्नेह संपूर्ण सहानुभूती, आत्मीयता एवं अंतरंग भाव इस रचना में साकार हुआ है। उसके प्रति अद्‌भुत संवेदनशीलता प्रदर्शित करती हैं। उसके जीवन को लेखिका ने अत्यंत समीप से देखा था। परंपरायें, रिती-रीवाज तथा रूढीयाँ उसके व्यक्तित्व को कुंठीत कर देती हैं। यह कुप्रथाएँ उसे

Rahul Publications

असमय वैधव्य का अभिशाप लेकर जीवन जिने के लिए विविश करती हैं। किंतु इसके कारण उसकी हृदय-कलिक सदा के लिए मुरझा जाती हैं। भाभी चरित्र के द्वारा विधवा के भावानाओंका अत्यंत सूक्ष्म चित्रण लेखिका ने इस पाठ में किया हैं।

2. 'भाभी' चरित्र की समस्याओं को अपने शब्दों में लिखिए ?

उत्तर

'भाभी' सेठजी की बहू है। विवाह के एक साल के अंदर ही बिना बिमारी के ही उसके पति की मृत्यु हो जाती हैं। तब से वह उस घर में सबके साथ रह कर भी, अकेली हो जाती हैं। वह अनाथिनी भी और अभागिनी भी। वह प्रायः निराहार और निरंतर निताहार से दुर्बल देह से वह परिश्रम करती थी। काम चाहे कैसा भी कठिन हो, शरीर को चाहे कितनी भी पिड़ा हो रही हो, फिर भी वह दुखीत दिखाई नहीं पड़ती। वह सफेद ओढनी और काला लहंगा या काली ओढनी और सफेद बुटीदार कत्यई लहंगा पहना करती थी। उसकी ननंद के लिए हर तीज-त्यौहार पर बडे सुंदर रंगीन कपडे बनते थे। जब ननंद घर आती थी, तब भाभी की स्थिती अत्यंत विचलीत हुआ करती थी। जब ननंद घर आती थी तो भाभी को अत्यंत पिडा देकर जाती थी। एक दिन लेखिका गलती से उसको रंगीन लंबी-चौडी ओढनी ओढाई थी, तब भाभी एक क्षण के लिए अपनी स्थिती भूल जाती हैं। कि उसे रंगीन वस्त्र वर्जित है। इस गलती का फल उसे भुगतना पडता है। क्योंकि ससुरजी और ननंद उसे इस अवस्था में देखने के कारण क्रोधीत हो जाते हैं। अंत में भाभी कि स्थिती कैसी हो गई लेखिका को पता भी नहीं चला। क्योंकि इस के बाद लेखिका का परिवार इन्दौर चला गया। लेखिका कुछ समय के पश्चात भाभी के जीवन का अंत होने का अनुमान करती हैं।

Rahul Publications

4. भारत में संस्कृति संगम (భారతదేశంలో సంస్కృతులు)

- रामधारी सिंह दिनकर

लेखक परिचय

रामधारी सिंह 'दिनकर' जी का जन्म सन् 1908 में बिहार के मुंगेर जिले के सिमरिया नामक गाँव में हुआ। वे पटना विश्वविद्यालय के स्नातक थे। वे अपने जीवन में अध्यापक, पटना विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार, उप-कुलपति और भारत सरकार द्वारा मनोनित राज्यसभा सदस्य रहें। भारत सरकार की ओर से उन्हें 'पद्मभूषण' की उपाधि प्राप्त हुई। दिनकर जी हिन्दी, बंगला, संस्कृत, उर्दू और अंग्रेजी भाषा के कुशल ज्ञाता थे। वे छायावादोत्तर कवियों में अग्रगण्य माने जाते हैं। उनका काव्य मूलतः संस्कृतनिष्ठ भाषा से सम्बन्धित हैं। उनके प्रमुख काव्य ग्रन्थ हैं - हुँकार, रसवंती, कुरूक्षेत्र, सामधेनी, रश्मिरथी, परशुराम की प्रतिक्षा आदि। आधुनिक महाकाव्य 'उर्वशी' के लिए उन्हें 'ज्ञानपीठ' पुरस्कार प्राप्त हुआ।

రచయిత పరిచయము

రామ్‌ధారీ సింహ్ దినకర్ 1908వ సం॥లో బీహార్‌కు చెందిన ముంగేర్ జిల్లాలో సిమరియా అను గ్రామములో జన్మించినారు. వీరు పాట్నా విశ్వవిద్యాలయంలో పట్టబద్రులైనారు. వీరికి భారత ప్రభుత్వం పద్మభూషణ్ బిరుదుతో సత్కరించినది. వీరు హిందీ, బెంగాలీ, సంస్కృతం, ఉర్దూ, ఆంగ్ల భాషా పండితులు. భారతీయ సంస్కృతికి సంబంధించిన ఎన్నో వ్యాసాలు ఈయన రచించారు. 'ఊర్వశి' కావ్యానికి జ్ఞానపీఠ పురస్కారం లభించినది. సంస్కృతి కే చార్ అధ్యాయ్ ఈయన ప్రసిద్ధ గ్రంధము 1974 లో సం॥లో ఈయన మరణించినారు. ప్రస్తుత పాఠములో భారతీయ సంస్కృతిని దాని గొప్పతనాన్ని విభిన్న జాతులు, సంస్కృతుల కలయికను ఈయన వివరించారు.

सारांश

रामधारी सिंह दिनकर अपने द्वारा रचित 'भारत में संस्कृति संगम' निबन्ध में ऐतिहासिक और विभिन्न जाति समूहों एवं संस्कृतियों के बारे में विवरणात्मक विश्लेषण, अनुसंधानात्मक विचार प्रस्तुत करते हुए कई बातों पर जोर दिया हैं। उनका मानना हैं कि यहाँ अर्थात् भारत वर्ष में द्रविड लोग रहने के पूर्व में ही हमारे देश में नीग्रो तथा आस्ट्रिक जाति के लोग निवास करते थे, जिसकी संततियों आज वनों में रहती हैं। भारतीय संस्कृति के मूल उत्स तक जाने की राह जो अभी तक नहीं खुली हैं। केवल अनुमान के बल पर हम जानते हैं कि आर्यों के आने के पूर्व इस देश में जो लोग बसते थे, वे सुसभ्य थे, वे नगर सभ्यता के स्वामी थे और उनका धर्म भी विकसित हो चुका था। इन्हीं आर्य-पूर्व भारतवासियों के नगरों का विध्वंस करने के कारण आर्यों के रणदेवता इंद्र का नाम पुरंदर पड़ा और आर्य जब इस देश में बस

Rahul Publications

गये तथा द्रविड आदि जनता के साथ उनका संबन्ध सुदृढ़ हो गया तब संस्कृका वह बुनियादी रूप तैयार होने लगा जिसे हम हिन्दू या भारतीय संस्कृति कहते हैं।

सभी आन्दोलन के नेताओं ने इस बात पर जोर दिया कि वेद और उपनिषदों में हमारे देश की प्राचीनतम विधाएँ हैं जो आज के प्रसंग में भी सत्य और सुगंभीर हैं। संस्कृति का विकास नैसर्गिक प्रक्रिया हैं और इस प्रक्रिया से कहाँ क्या परिवर्तन हो रहा हैं, यह बात तुरंत जानी भी नहीं जा सकती। जब आर्य और द्रविड मिलकर एक समाज के अंग बन गए, तब उनके आचार-विचार, आदतें और रिवाज़ भी परस्पर मिश्रित होने लगे और इस मिश्रण से जो धर्म निकला वहीं भारत का सनातन धर्म एवं जो संस्कृति निकली वहीं भारत की बुनियादी संस्कृति हुई।

आर्यों के आगमन के बाद से लेकर मुस्लिम विजय के पूर्व तक बल्कि यूनानी, मंगोल, शक, कूशान, अभीर, हूण आदि जो भी जातियाँ भारत में आकर यहाँ बस गई, उन सब का कुछ न कुछ योगदान यहाँ की संस्कृति को मिला होगा यद्यपि इसके बिलगांव का अब कोई उपाय नहीं रहता हैं। अर्थात् भारतीय संस्कृति किसी एक जाति की रचना नहीं हैं, उसमें भारत में आकर यहाँ बस जानेवाली अनेक जातियों के अंगदान हैं। मुसलमानों के आने के बाद यह दो संस्कृतियों का देश हो गया।

लेखक की धारणा हैं कि शिव की पूजा आर्यों की चलाई हुई नहीं हैं। वह इस देश में पहले से ही प्रचलित थी। जब आर्य और आर्योत्तर जातियाँ समन्वित हुई, तब उनकी रूद्र और शिव सम्बन्धी कल्पनाएँ एकाकार हो गई जिसके परिणामस्वरूप हमें शैव धर्म की परंपरा प्राप्त हुई। शिवजी के पुत्र कार्तिक और गणेश का उल्लेख दक्षिण भारत में ज्यादा मिलता हैं। यह तो स्पष्ट हैं कि हमारा धर्म और हमारी संस्कृति अनेक स्त्रोतों का रस पीकर बढ़ी हैं।

संस्कृति का स्वभाव आदान-प्रदान से बढ़ता हैं। जो जाति केवल देना ही जानती हैं, लेना कुछ भी नहीं, उसकी संस्कृति अवश्य मिट जाती हैं। हमने यूनानियों को दर्शन सिखाया, बदले में हमने ज्योतिषी सीखी। आज हम जिन अंकों को अंतराष्ट्रीय कहते हैं वे असल में भारत वर्ष में जन्मे थे। यही से वे पहले अरब गए और अरब के ही द्वारा वे यूरोप को प्राप्त हुए थे। किन्तु जब से हमने संस्कृति के क्षेत्र में परहेज की नीति अख्तियार की गई और हमारा पतन होने लगा। छूआछूत की भावना और सब से बचकर अलग हो बैठने का भाव संस्कृतियों को ले डूबता हैं। प्राचिन भारत को आसपास की दुनिया में जगत्गुरू समझा जाता था, किन्तु साथ वह जगत् शिष्य भी था। हमें दूसरों को शिक्षा देनी हैं और दूसरों से शिक्षा लेनी भी चाहिए। यही भावना संस्कृति को सुरक्षित रखती हैं।

Rahul Publications

विशेषताएँ

1) दिनकर जी की रचनाओं में जीवन के विविध पहलुओं के चित्रण हैं।
2) उनकी मानवतावादी दृष्टि ने उन्हें साहित्य के क्षेत्र में प्रमुख स्थान दिलाया हैं।
3) पाठकों में नया उत्साह, उमंग एवं स्फूर्ति संचारित करने में दिनकर की रचनाएँ सक्षम हैं।
4) 'संस्कृति के चार अध्याय' नामक ग्रंथ उनके इतिहास और संस्कृति संबंधी दृष्टिकोण को स्पष्ट करता हैं। यह ग्रन्थ भारतीय संस्कृति और इतिहास को समझने का एक अच्छा स्त्रोत हैं।

పాఠ్య సారాంశము

భారతదేశ చరిత్రను అనుసరిణి మొదట ద్రవిడలు తర్వాత ఆర్యులు వచ్చారని తెలుస్తుంది. ద్రవిడులకు ముదు నీగ్రోలు, ఆస్ట్రిక్ జాతుల వారు ఉండే వారని వారి తర్వాత సంతతులు అడవిలో నివసించేవని తెలుస్తుంది. భారతీయ సంస్కృతి యొక్క మూలాలను వివరించడం అంత సులభమైన విషయమేమే కాదు. నాగరికత తెలిసిన వారని, వారి మతము అప్పటికే అభివృద్ధిలో ఉండేదని చెప్పవచ్చు. వీరి నగరాలు ధ్వంసం చేసిన కారణంగా ఆర్యుల యుద్ధదేవత ఇంద్రుడు, పురంధరుడు అని పిలువబడినాడని అలా అర్యులు ఈ దేశంలో స్థిరపడ్డారని చెప్పవచ్చు. తర్వాత ద్రవిడులతో సంబంధాలు ధృడపడి ఒకే సంస్కృతిగా ఏర్పడ్డారని, అదే హిందూ లేదా భరతీయ సంస్కృతి అని పిలువబడింది.

వేదాలు ఉపనిషత్తులు మన దేశానికి చెందిన ప్రాచీన విద్యలని అందరూ బలపరిచారు. అవి నేటికీ ఆమోదయోగ్యమే. సంస్కృతి అభివృద్ధి చెందడం అనేది ఒక నైసర్గిక ప్రక్రియ ఎక్కడ, ఎలా, అభివృద్ధి జరిగిందనేది వెంటనే తెలుసుకోవడం సాధ్యం కాదు. ఆర్యలు ద్రవిడులు కలిసిపోయిన తర్వాత వారి ఆచార వ్యవహారాలు ఆలోచనలు అలవాట్లు అన్నీ కలిసిపోయి ఒక సనాతన ధర్మము ఏర్పడినది. ఇదే మన భారతేయ సంస్కృతి పునాది అయినది.

ఆర్యులు తర్వాత ముస్లింలకు ముందు వాయువ్య, ఈశాన్య ప్రాంతాల నుండి ఎంతో మంది ఈదేశానికి వచ్చారు. మన భారతీయ సంస్కృతి ఒక జాతకి మాత్రమే సంబంధించినది కాదు. మన దేశానికి వచ్చిన ఎన్నో జాతుల సంస్కృతి కూడా ఇమిడి ఉన్నది.

అంతేకాదు శివపూజ కూడా ఆర్యులు నుంచి వచ్చినది కాదనే అపోహ ఉన్నది. ఇది మన దేశంలో ప్రారంభం నుంచే ఉన్నది. ఆర్యులు, ఆర్యేతరులు ఎప్పుడైతే కలిసిపోయారో అప్పుడు ఈ రుద్రుడు, వానికి సంబంధించిన విషయాలన్నీ కూడా ఏకమైపోయాయయి. తద్వారా శైవధర్మం ఏర్పడినది. శివుని పుత్రులు కార్తీకుడు

Rahul Publications

గణేవుని గురించి దక్షిణ భారతదేశంలో ఎక్కువగా చెప్పబడినది. కాబట్టి మన మతము, సంస్కృతి అనేక సంస్కృతుల కలయికతో అభివృద్ధి చెందినది.

భారతీయ సంస్కృతిలో కేవలం ఆర్యులు, ద్రవిడులే కాదు యూనానీలు, మంగోలులు, శకులు, కుశాణులు, అభీరులు, హూణలులు వంటి మిగిలిన జాతుల సంస్కృతులన్నీ కలిసిపోయి ఉన్నాయి. వీటిని విడగొట్టడం సాధ్యం కాదు. ముసలమానులు వచ్చిన తర్వాత మన దేశంలో రెండు సంస్కృతులు ఏర్పడ్డాయి.

సంస్కృతిలో ఇచ్చిపుచ్చుకోవడం చాలా ముఖ్యము ఆ స్వభావమే లేకుంటే ఆ సంస్కృతి అంతరించిపోతుంది. మనము యూనానీలకు వేదాంతం నేర్పితే వారు మనకు జ్యోతిష్యం నేర్పారు. ఏ అంకెలను మనము అంతర్జాతీయ సంఖ్యలుగా భావిస్తున్నాయో అవి మొదటి భారతదేశంలోనే ఏర్పడ్డాయి. ఇక్కడి నుండి అరబ్, యూరోప్‌కి ప్రచారమైనాయి.

కానీ ఎప్పుడైతే సంస్కృతిలోకి మతము ప్రవేశించినదో, అప్పుడే మన సంస్కృతి యొక్క పతనము ఆరంభమైనది. అంటరానితనము అందరికీ దూరంగా ఉండాలనే భావమే సంస్కృతిని అంతమొందిస్తుంది. మన ప్రాచీన భారతదేశము ఈ విశ్వానికే జగద్గురువు వంటిది. దానితో పాటు జగత్తుకు శిష్యునిలా కూడా వ్యవహరించాలి. మనము ఒకరికి విద్యనేర్పాలి, వారి నుంచి విద్య నేర్చుకోవాలి. ఇదే సంస్కృతిని సురక్షితంగా ఉంచుతుంది.

संदर्भ सहित व्याख्याएँ

1. ''यह इतनी सघनता से संपन्न हुआ कि अब यह जाँचने का कोई उपाय नहीं हैं कि हमारी संस्कृति का कौन अंश किस जाति की देन हैं तथा कौन विचार किसके साथ आए थे।''

लेखक परिचय :- यह उद्धरण दिनकर जी के 'भारत में संस्कृति संगम' पाठ से लिया गया हैं। वे भारतीय संस्कृति के अराधक थे। दिनकर जी का जन्म सन् 1908 में बिहार के मुंगेर जिले के सिमरिया नामक गाँव में हुआ। वे पटना विश्वविद्यालय के स्नातक थे। वे अपने जीवन में अध्यापक, पटना विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार, उप-कुलपति और भारत सरकार द्वारा मनोनित राज्यसभा सदस्य रहें। भारत सरकार की ओर से उन्हें 'पद्मभूषण' की उपाधि प्राप्त हुई। उनकी मुख्य काव्य रचनाएँ हैं - हुँकार, रसवंती, कुरूक्षेत्र, सामधेनी, रश्मिरथी, परशुराम की प्रतिक्षा आदि। 'उर्वशी' हिन्दी काव्य जगत का महान काव्य माना जाता हैं। इस महान काव्य कृति पर ही उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ।

संदर्भ :- भारतीय संस्कृति का उद्भव और विकास, मिलनेवाली अनेक जातियों का चित्रण लेखक इसमें व्यक्त कर रहे हैं।

व्याख्या/भावार्थ :- आर्य और द्रविड लोगों के आचार, विचार, आदतें और रिवाज़ों के मिश्रण से सनातन धर्म का उदय हुआ जो भारत की बुनियादी संस्कृति हैं। इसमें वायव्य और ईशाण कोण से भी अनेक लोग आकर भारतीय संस्कृति में मिल गए। वे इतने घुलमिल गए कि उनको अब अलग करना मुश्किल हैं। सभी जातियों का मिश्रण इस संस्कृति में हो गया। इनको अलग जाँचना आसान नहीं हैं।

विशेषताएँ

1) भारतीय संस्कृति की महानता के बारे में लेखक स्पष्ट कर रहे हैं।
2) उनकी भाषा में उमंग, उत्साह एवं स्फूर्ति संचारित होती हैं।
3) 'संस्कृति के चार अध्याय' नामक ग्रन्थ उनके इतिहास और संस्कृति सम्बन्धी दृष्टिकोण को स्पष्ट करता हैं।

2. **''जो जाति केवल देना ही जानती हैं, लेना कुछ भी नहीं, उसकी संस्कृति का एक दिन दिवाला निकल जाता हैं।''**

लेखक परिचय :- यह उद्धरण दिनकर जी के 'भारत में संस्कृति संगम' पाठ से लिया गया हैं। वे भारतीय संस्कृति के अराधक थे। दिनकर जी का जन्म सन् 1908 में बिहार के मुंगेर जिले के सिमरिया नामक गाँव में हुआ। वे पटना विश्वविद्यालय के स्नातक थे। वे अपने जीवन में अध्यापक, पटना विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार, उप-कुलपति और भारत सरकार द्वारा मनोनित राज्यसभा सदस्य रहें। भारत सरकार की ओर से उन्हें 'पद्मभूषण' की उपाधि प्राप्त हुई। उनकी मुख्य काव्य रचनाएँ हैं - हुँकार, रसवंती, कुरूक्षेत्र, सामधेनी, रश्मिरथी, परशुराम की प्रतिक्षा आदि। 'उर्वशी' हिन्दी काव्य जगत का महान काव्य माना जाता हैं। इस महान काव्य कृति पर ही उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ।

संदर्भ :- भारतीय संस्कृति का उद्भव और विकास, मिलनेवाली अनेक जातियों का मिलन एवं भारत की प्रमुख विशेषताओं के बारे में लेखक कह रहे हैं।

व्याख्या/भावार्थ :- भारतीय संस्कृति अनेक जातियों और धर्म का मिश्रण हैं। संस्कृति की विशेषतः इसके आदान-प्रदान में हैं। यदि कोई संस्कृति कभी देना नहीं जानती हैं और लेना नहीं जानती हैं। ऐसी संस्कृति धीरे-धीरे मिट जाती हैं उसकी कोई महानता नहीं रहती हैं। लेन-देन में ही हम सब कुछ सीख सकते हैं। संस्कृति भी उसी तरह हैं। दूसरे देशों को हम सिखाना है और उनसे हम सीखना हैं। यही देश के लिए आवश्यक हैं।

विशेषताएँ

1) भारतीय संस्कृति की महानता के बारे में लेखक स्पष्ट कर रहे हैं।

Rahul Publications

2) उनकी भाषा में उमंग, उत्साह एवं स्फूर्ति संचारित होती हैं।

3) 'संस्कृति के चार अध्याय' नामक ग्रन्थ उनके इतिहास और संस्कृति सम्बन्धी दृष्टिकोण को स्पष्ट करता हैं।

3. ''प्राचीन भारत में आस-पास की दुनिया में जगत शिष्य भी थे।''

लेखक परिचय :- यह उद्धरण दिनकर जी के द्वारा लिखा गया 'भारत में संस्कृति संगम' पाठ से लिया गया हैं। वे भारतीय संस्कृति के अराधक थे। दिनकर जी का जन्म सन् 1908 में बिहार के मुंगेर जिले के सिमरिया नामक गाँव में हुआ। वे पटना विश्वविद्यालय के स्नातक थे। वे अपने जीवन में अध्यापक, पटना विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार, उप-कुलपति और भारत सरकार द्वारा मनोनित राज्यसभा सदस्य रहें। भारत सरकार की ओर से उन्हें 'पद्मभूषण' की उपाधि प्राप्त हुई। उनकी मुख्य काव्य रचनाएँ हैं - हुँकार, रसवंती, कुरूक्षेत्र, सामधेनी, रश्मिरथी, परशुराम की प्रतिक्षा आदि। 'उर्वशी' हिन्दी काव्य जगत का महान काव्य माना जाता हैं। इस महान काव्य कृति पर ही उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ।

संदर्भ :- इसमें प्राचीन भारत देश की संस्कृति और अन्य देशों के आगे इसकी महानता का वर्णन इसमें किया गया हैं।

व्याख्या/भावार्थ :- भारतीय संस्कृति में अनेक अन्य जातियों की संस्कृतियाँ मिल गये हैं। इस सांस्कृतिक विशेषता के कारण हमारा प्राचीन भारत आसपास के सभी देशों के लिए जगत् गुरू समझा जाता था। किंतु जगत् शिष्य भी बनना चाहिए। क्योंकि हमें दुसरों को शिक्षा देना हैं और दुसरों से सिखना भी चाहिए। तभी देश की उन्नति होती हैं।

विशेषताएँ

1) इसमें भारतीय संस्कृति की महानता के बारे में चित्रण किया गया हैं।

2) उनकी भाषा में उमंग, उत्साह एवं स्फूर्ति संचारित होती हैं।

अभ्यास के लिए प्रश्न उत्तर

1. भारतीय संस्कृति कीन-कीन जातियों की संस्कृतियों के समन्वय से बनी हैं ?

उत्तर

भारत वर्ष के इतिहास में हमें यह मिलता हैं कि यह द्रविड पहले और आर्य बाद में आये थे और द्रविडों के भी पूर्व यह नीग्रो और अस्ट्रिक जातियों के लोग बसे थे। जिसकी संततीया आज वनों

Rahul Publications

में रहती हैं। आर्यों के आगमन के बाद से लेकर मुस्लिम विजय के पर्व तक वायव्य और इशान कोण से और भी बहूतिरे लोग इस देश में आये। वे सब हिन्दू बनकर भारतीय जनसमुद्र में डूबते चले गये। और उनके साथ जो आदते और विश्वास तथा रस्म और रिवाज़ आये, और वे भी भारतीय संस्कृति में पचकर उसी के अंग हो गये। भारतीय संस्कृति किसी एक जाती की रचना नहीं हैं। उनमें भारत में आकर यहाँ बस जाने वाली अनेक जातीयों के अंशदान हैं।

2. भारत की बुनियादी संस्कृति कैसे बनी हैं ?

उत्तर

आर्य-पूर्व भारत वासियों के नगरों का विध्वं स करने के कारण आर्यों के रणदेवता इंद्र का नाम पूरंदर पडा, और आर्य जब देश में बस गये तथा द्रविड जाती आदी जनता के साथ उनका सम्बन्ध सुदृढ हो गया। तब संस्कृति का बुनियादी रूप तयार होने लगा। जिसे हम हिन्दू या भारतीय संस्कृति कहते हैं। संस्कृति जब विकसीत होने लगती है तब उसका विकास प्रस्ताओं के अनुसार नहीं होता। संस्कृति का विकास नैसर्गिक प्रक्रिया हैं और इस प्रक्रिया से कहाँ, क्या परिवर्तन हो रहा है, यह बात तुरंत जानी भी नहीं जा सकती। जब आर्य और द्रविड मिलकर एक समाज के अंग बन गये, तब उनके आचार-विचार, आदतें और रिवाज़ भी परस्पर मिश्रीत होने लगे। और इस मिश्रण से जो धर्म निकला वही भारत का सनातन धर्म एवं जो संस्कृति निकली वहीं भारत की बुनियादी संस्कृति बनी।

3. भारतीयों ने विदेशीयों को क्या दिया और उनसे क्या लिया ?

उत्तर

संस्कृति का स्वभाव आदान-प्रदान से बढता हैं। जो जाती केवल देना ही जानती है, लेना कुछ भी नहीं जानती उसकी संस्कृति मीट जाती हैं। जब भारत वर्ष सचमुच महान था, तब वहाँ के लोग संस्कृति के क्षेत्र में धर्म की भावना से पिडीत नहीं थे। अन्य जातियों से ज्ञान ग्रहण कर लिया। युनानियों को हमने दर्शन सिखाया और बदले में उनसे हमने ज्योतिषी सिखी। होश, कौस्यं, लूक, लेय आदि युनानी ज्योतिष शब्द संस्कृत का सुप्रचलीत केन्द्र, युनानी शब्द केंटर से आया हैं। हमने अरबों से भी ज्योतिष की बहुतसी बातें गृहण की, जिसमें से सर्वप्रथम मासफल और वर्षफल निकलने की ताजक पद्धती हैं। बदले में हमने पहले अरबों को और फिर उनके द्वारा युरोप को गणित और दर्शन कि बाते सिखाई। आज हम जिन अंको को अंतरराष्ट्रीय कहते है, यह असल में भारत वर्ष में जन्मे थे। यहीं से वे पहले अरब गये और अरब के द्वारा ही युरोप को प्राप्त हुये थे। अरबी में आज अंक की संज्ञा हिदसा है।

5. राष्ट्र का स्वरूप (దేశ స్వరూపం)

- वासुदेव शरण अग्रवाल

लेखक परिचय

वासुदेव शरण अग्रवाल भारतीय संस्कृति के अनन्य प्रेमी और गंभीर विवेचक रहे हैं। स्वतन्त्र लेखक, विचारक और संपादक के रूप में उन्होंने पर्याप्त यश अर्जित किया हैं। श्री अग्रवाल जी का जन्म सन् 1904 में उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले के खेड़ा गाँव में हुआ था। उनकी शिक्ष-दीक्षा लखनऊ में हुई। सन् 1929 में उन्होंने लखनऊ विश्वविद्यालय से एम.ए. किया और वहीं से सन् 1941 में 'पाणिनिकालीन भारतवर्ष' पर पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। फिर यहीं से सन् 1946 में डी.लिट. की उपाधि प्राप्त की। सन् 1940 तक वे मथुरा के पुरातत्त्व संग्रहालय में अध्यक्ष रहें तथा सन् 1946 से 1951 तक सेंट्रल एशियन इंटिक्विटिज म्युजियम के सुपरिटेंडेंट और भारतीय पुरातत्त्व विभाग के अध्यक्ष पद पर कार्य किया। सन् 1951 में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के 'कॉलेज ऑफ इंडोलॉजी' में प्रोफेसर नियुक्त हुए। इसके आलावा भारतीय मुद्रा परिषद, नागपुर, भारतीय संग्रहालय परिषद, पटना और ऑल इंडिया ओरियंटल कांग्रेस बंबई के भी अध्यक्ष रहें। ये भारतीय संस्कृति और पुरातत्त्व के साथ-साथ पाली, संस्कृत, अंग्रजी आदि के भी गहन अध्येता रहें। सन् 1968 में इनका निधन हुआ।

श्री वासुदेव शरण अग्रवाल ने अनेक ग्रंथो का प्रणयन किया। 'कला और संस्कृति', 'कल्पवृक्ष', 'पृथ्वीपुत्र', 'पाणिनीकालीन भारतवर्ष', 'कादंबरी', 'हर्षचरित : एक सांस्कृतिक अध्ययन', 'भारत-सावित्री' आदि उनके प्रमुख ग्रंथ हैं। कालिदास के 'मेघदूत' और राधाकुमुद मुखर्जी की 'हिन्दी सिविलाइजेशन' का अनुवाद भी किया। उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित भी किया गया हैं।

రచయిత పరిచయము

వాసుదేవ శరణ్ అగ్రవాల్ 1904వ సం॥లో ఉత్తరప్రదేశ్‌కి చెందిన మీరట్ జిల్లాలోని ఖేడా అనే గ్రామములో జన్మించారు. ఈయన భారతీయ సంస్కృతిని అత్యంత ఆదరించేవారు. ఈయన గొప్ప రచయిత సంపాకుడు భారతీయ సంస్కృతి, పురాతత్వ శాస్త్రముతో పాటు పాలి, సంస్కృతము, ఆంగ్లభాషలను కూడా బాగా అధ్యయనం చేసారు. ఈయన 1968 లో మరణించినారు. 'పాణిని కాలీన భారతవర్ష్' అనే సిద్ధాంత గ్రాంధానికి పి.హచ్.డి పట్టా పొందారు. ప్రస్తుత 'దేశ స్వరూపము' పాఠము 'పృథ్వీ-పుత్ర్' అనే గ్రంధం నుండి గ్రహించబడినది. ఇరదిలో భారతీయ సంస్కృతి వాటికి సుబంధించిన ముఖ్య భాగాలను వివరిస్తూ దేశ స్వరూపాన్ని వర్ణించారు.

सारांश

प्रस्तुत निबंधात्मक पाठ 'राष्ट का स्वरूप' जो वासुदेव शरण अग्रवाल जी द्वारा रचा गया हैं, जिसे उनके निबन्ध संग्रह 'पृथ्वीपुत्र' से संकलित किया गया हैं। कवि का मानना हैं कि, कोई भी राष्ट्र का स्वरूप तीन चीज़ों के सम्मिश्रण से बनता हैं। यह हैं एक भूमि, दूसरा भूमि पर बसनेवाला जन और तीसरा उस जनता की संस्कृति। यही तीन चीज़ों से राष्ट्र का स्वरूप या आकार बन जाता हैं।

भूमि :- (1)वास्तव में भूमि का निर्माण देवों ने किया हैं, वह अनंत काल से हैं। उसके भौतिक स्वरूप, सौंदर्य और समृद्धि के प्रति सचेत होना हमारा आवश्यक कर्त्तव्य हैं। (2) पृथ्वी सच्चे अर्थों में समस्त राष्ट्रीय विचार धाराओं की जननी हैं। (3) जो राष्ट्रीयता पृथ्वी के साथ नहीं जुड़ी वह निर्मूल होती हैं। राष्ट्रीयता की जड़े पृथ्वी में जितनी गहरी होंगी, उतनी ही राष्ट्रीय भावों का अंकुर पल्लवित होगा। इसलिए पृथ्वी के भौतिक स्वरूप आदि से लेकर अंत तक जानकारी प्राप्त करना, उसकी सुन्दरता, उपयोगिता और महिमा को पहचानना आवश्यक धर्म हैं। पृथ्वी से जिस वस्तु, जीव का सम्बन्ध हैं वह चाहे छोटे भी रहे या बड़े भी रहें उनके बारे में हमलोग भलिभांति जानकारी या जानना आवश्यक कहा जाता हैं। ताकि सांगोपांग अध्ययन जागरणशील राष्ट्र होने के लिए अत्यन्त आवश्यक हैं। (4) हमें सांगोपांग अध्ययन कुछ इस प्रकार करना चाहिए कि, पृथ्वी की उपजाऊ शक्ति मेघ जो अपने अमृतजल से इसे सिंचाते हैं उनके बारे में जानना आवश्यक हैं। (5) धरती माता के कोख में अमूल्य रत्न एवं तरह-तरह के धातुएँ और पत्थरें मिलते हैं। और इन सब की तैयारी एवं उपयोगिता के बारे में हमें ज्ञान कमाना आवश्यक होता हैं। (6) पृथ्वी में निहित समुन्दर और नदियों में पाये जानेवाले रत्न और जलचरों के जीवन के बारे में हमें ज्ञान हासिल करना आवश्यक होता हैं। (7) विज्ञान और उद्यम दोनों मिलकर राष्ट्र के भौतिक स्वरूप का एक बुनियाद खड़ा करना अनिवार्य हैं। (8) इसके प्रति नवयुवकों के मन में एक जिज्ञासा पैदा करना जरूरी हैं। जब ऊपर्युक्त सभी कार्य प्रसन्नता, उत्साह और अथक परिश्रम द्वारा ही पृथ्वी की समग्र समृद्धी पा सकते हैं।

जन :- (1) मातृभूमि पर निवास करनेवाले मनुष्य राष्ट्र का दूसरा अंग हैं। यदि पृथ्वी रहें लेकिन मनुष्य न रहें तो राष्ट्र का संपूर्ण स्वरूप नहीं दिख पाता हैं। अतः पृथ्वी और जन दोनों के सम्मिश्रण से ही राष्ट्र का स्वरूप संपादित होता हैं। (2) यदि पृथ्वी माता हैं तो, जन उनका पुत्र हैं। जन के हृदय यह भावना का अनुभव हुआ तो ही राष्ट्र-निर्माण के अंकुर उत्पन्न होते हैं। (3) जो जन पृथ्वी के साथ माता और पुत्र के सम्बन्ध को स्वीकार करता हैं, उसे ही पृथ्वी के वरदानों में भाग पाने का

Rahul Publications

अधिकार रहता हैं। (4) पृथ्वी पर निवास करनेवाले सभी जन समान होते हैं। ऊँच और नीच का भाव नहीं रहता हैं। और इनके निवास स्थान पर, गाँव, नगर, जंगल, पर्वत नाना प्रकार हो सकते हैं। (5) जन को पीछे छोड़कर कोई भी राष्ट्र आगे नहीं बढ़ सकता।

संस्कृति :- (1) संस्कृति और सभ्यता ईश्वर द्वारा जन को प्राप्त हुई। अतः जन ही संस्कृति के जन्मदाता हैं, कुछ हद तक हम कह सकते हैं। राष्ट्र का स्वरूप संस्कृति, धार्मिक उत्सव, जन के सभ्यता आदि से निर्माण होती हैं। (2) राष्ट्र की पहचान भी प्रत्येक जन समूह की संस्कृति और सभ्यता पर निर्भर रहती हैं। (3) प्रत्येक जन की अपनी-अपनी भावना के अनुसार पृथक्-पृथक् संस्कृतियाँ राष्ट्र में विकसित होती हैं, परन्तु उन सबका मूल आधार पारस्परिक सहिष्णुता और समन्वय पर निर्भर हैं। अतः राष्ट्रीय जन इस समन्वय को अपनाते हुए, अपनी संस्कृतियों द्वारा एक-दुसरे के साथ मिलकर राष्ट्र में एकरूपता प्राप्त करते हुए, राष्ट्र में रहते हैं। (4) साहित्यं, कला, नृत्य, गीत, आमोद अनेक रूपों में राष्ट्रीय जन अपने-अपने मानसिक भावों को प्रकट करते हैं। जो व्यक्ति सहृदय हैं, वह प्रत्येक संस्कृति के आनंद पक्ष को स्वीकार करता हैं उससे आनंदित होता हैं। इस प्रकार की उदार भावना ही विविध जनों से बने हुए राष्ट्र के लिए स्वास्थ्यकर हैं। (5) गाँवो और जंगलों में स्वच्छंद जन्म लेने वाले लोकगीतों में, तारों के नीचे विकसित लोक-कथाओं में संस्कृति का अमित भंडार भरा हुआ हैं, जहाँ से हमें आनंद की भरपूर मात्रा प्राप्त होती हैं। (6) पूर्वजों ने चरित्र, धर्मविज्ञान, साहित्य, कला और संस्कृति के क्षेत्र में जो अथक प्रयास किया वह हमारे लिए गौरव की बात हैं। (7) भूतकाल से जो घटना घटित हैं यह वर्तमान को पुष्ट करके उसे और भी संवर्धन करती हैं। अतः आगे बढ़ाती हैं। उस राष्ट्र का हमे सदा स्वागत है।

Rahul Publications

పాఠ్య సారాంశము

భూమి, భూమిపై నివసించే జనులు, వారి సంస్కృతి ఈ మూడింటి కలయికే దేశ స్వరూపముగా చెప్పబడినది. ఈ భూమి దేవతలచే అనాది కాలము నాడే ఏర్పడినది. ఈ భూమే మన దేశానికి తల్లి వంటిది. దీనిని గూర్చి పూర్తిగా తెలుసుకోవడం ఎంతో అవసరం. భూమాత తన గర్భంలో ఎన్నో రత్న రాసులు కలిగి ఉండటం వలన వసుంధర అని పిలువబడుతుంది. భూ – ఆకాశాల మధ్య, ఈ మహాసముద్రాలలో ఉన్న రత్నరాసుల గురించి తెలుసుకోవాలనే భావన అందరము కలిగి ఉండాలి.

ఈ మాతృభూమి మీద నివసించే మనుషులే దేశంలోని రెండో అంశము. ఈ భూమి మరియు జనులు వీరిద్దరి కలయికే దేశ స్వరూపము రూపొందిస్తుంది. ఈ ప్రజల వలననే ఈ పృథ్వీ మాతృభూమి అని పిలువబడుతుంది. ఈ భూమిపై నివసించే జనులందరూ సమానులే. ఏ ఒక్కరినీ వెనుకకు త్రోసి దేశం ముందుకు పోదు.

దేశంలోని మూడవ అంశము జనుల యొక్క సంస్కృతి, ప్రజలు యుగయుగాల నుండి సంస్కారమును ఏర్పాటు చేసుకుంటున్నారు. ఇదే వారి ఊపిరి. ఈ సంస్కృతే ప్రజలకు మస్తిష్కం వంటిది. సంస్కృతి యొక్క వికాసము, అభివృద్ధి వలననే దేశాభివృద్ధి జరుగుతుంది. దేశ సమగ్ర స్వరూపములో భూమి ప్రజలతో పాటు సంస్కృతికి ముఖ్య స్థానము ఉంది. జ్ఞానము, కర్మ, ఈ రెండింటి సహకారమే సంస్కృతి అనబడుతుంది. వీటిలో దేశ సంస్కృతి స్పష్టమౌతుంది. ఈ దేశ ప్రజలు తమ తమ సంస్కృతుల ద్వారా ఒకరితో ఒకరు కలిసి ఒక దేశగా ఏర్పడతారు. ఏ విధంగా నదులన్నీ కలసి సముద్రంలో ఏకమౌతాయో అదే విధంగా దేశంలోని అన్ని విధానాలు మన దేశ సంస్కృతి రూపాన్ని పొందుతాయి. ఈ సంయుక్త రూపమే దేశానికి ఎంతో శ్రేయస్కరము.

సాహిత్యము, కళ, నృత్యము, గీతము, ఆనంద, ఉత్సాహాలన్నింటిలో దేశ ప్రజల మనోభావాలు స్పష్టమౌతాయి. ఆత్మ విశ్వవ్యాపక ఆనందమే అన్ని రూపాలలో ప్రదర్శితమౌతుంది. గ్రామాలలో, అడవులలో, స్వేచ్ఛగా లోక గీతాలలో, ఈ నక్షత్రాల వెలుగుల్లో వికసించే లోక కథలలో సంస్కృతి యొక్క అపార సంపద ఇమిడి ఉంది. దీని ద్వారా అమిత ఆనందం లభిస్తుంది. ఇదే దేశాభివృద్ధికి అవసరము. ఎక్కడైతే గతం వర్తమానానికి భారం కాదో, వర్తమానానికి ఇబ్బంది కలిగించకుండా ముందుకు సాగిపోవడానికి సహకరిస్తుందో అటువంటి దేశాన్ని మనం స్వాగతించాలి.

संदर्भ सहित व्याख्याएँ

1. **''राष्ट्रीयता की जड़े पृथ्वी में जितनी गहरी होंगी, उतना ही राष्ट्रीय भावों का अंकुर पल्लवित होगा।''**

लेखक परिचय :- यह उद्धरण 'राष्ट्र का स्वरूप' नामक निबन्ध से लिया गया हैं। इसके लेखक वासुदेव शरण अग्रवाल जी हैं। भारतीय संस्कृति और पुरातत्त्व के प्रति उन्हें अपार श्रद्धा थी। उन्होंने कई काव्य, गद्य से सम्बन्धित ग्रन्थों कि रचना कि हैं। उन ग्रन्थों में से 'कल्पवृक्ष', 'पृथ्वीपुत्र', 'कादंबरी', 'हर्षचरित : एक सांस्कृतिक अध्ययन', 'भारत-सावित्री' प्रसिद्ध हैं। आपको साहित्य अकादमी पुरस्कार से भी आभूषित किया गया हैं।

सन्दर्भ :- राष्ट्र के स्वरूप में भूमि को प्रथम अंग के रूप में स्वीकार करके इसकी महानता के बारे में लेखक ने वर्णन किया हैं।

व्याख्या/भावार्थ :- पृथ्वी सच्चे अर्थों में समस्त राष्ट्रीय विचारधाराओं की जननी हैं। राष्ट्रीयता की जड़े पृथ्वी में जितनी गहरी होगी, उतना ही राष्ट्रीय भावों का विकास होता हैं। पृथ्वी के प्रति सारी जानकारी ही राष्ट्रीय विकास के लिए आवश्यक हैं। राष्ट्रीय विकास के लिए भूमितत्त्व पहला अंग हैं।

Rahul Publications

विशेषताएँ

1) राष्ट्र के स्वरूप और उसकी उन्नति के बारे में लेखक कह रहे हैं।

2) उनकी भाषा शुद्ध खड़ीबोली हैं।

2. **''माता अपने सब पुत्रों को समान भाव से चाहती हैं। इसी प्रकार पृथ्वी पर बसनेवाले जन बराबर हैं।''**

लेखक परिचय :- यह उद्धरण 'राष्ट्र का स्वरूप' नामक निबन्ध से लिया गया हैं। इसके लेखक वासुदेव शरण अग्रवाल जी हैं। भारतीय संस्कृति और पुरातत्त्व के प्रति उन्हें अपार श्रद्धा थी। उन्होंने कई काव्य, गद्य से सम्बन्धित ग्रन्थों की रचना कि हैं। उन ग्रन्थों में से 'कल्पवृक्ष', 'पृथ्वीपुत्र', 'कादंबरी', 'हर्षचरित : एक सांस्कृतिक अध्ययन', 'भारत-सावित्री' प्रसिद्ध हैं। आपको साहित्य अकादमी पुरस्कार से भी आभूषित किया गया हैं।

सन्दर्भ :- राष्ट्र के स्वरूप में भूमि को प्रथम अंग के रूप में स्वीकार करके इसकी महानता के बारे में लेखक ने वर्णन किया हैं। और पृथ्वी अपने उपर बसनेवाले जन के बारे में वर्णन कर रहीं हैं।

व्याख्या/भावार्थ :- मातृभूमि पर निवास करनेवाले मनुष्य राष्ट्र का दूसरा अंग हैं। पृथ्वी और जन दोनों के सम्मिलन से राष्ट्र का स्वरूप बनता हैं। जिस प्रकार माँ के लिए सभी पुत्र समान होते हैं उसी प्रकार उस मातृभूमि पर रहनेवाले सभी लोग समान हैं। उनमें ऊँच, नीच का भेद नहीं हैं। राष्ट्र के स्वरूप में यह आवश्यक हैं।

विशेषताएँ

1) लेखक यह मानता हैं कि पृथ्वी और मनुष्य दोनों ने मिलकर ही राष्ट्र का स्वरूप बनाया हैं।

2) लेखक ने पाठ में सरल भाषा का प्रयोग किया हैं।

3. **''जिस प्रकार जल के अनेक प्रवाह नदि के रूप में मिलकर समुद्र में एकरूपता प्राप्त करते हैं, उसी प्रकार राष्ट्रीय जीवन की अनेक विधियाँ राष्ट्रीय संस्कृति में समन्वय प्राप्त करती हैं।''**

लेखक परिचय :- यह उद्धरण 'राष्ट्र का स्वरूप' नामक निबन्ध से लिया गया हैं। इसके लेखक वासुदेव शरण अग्रवाल जी हैं। भारतीय संस्कृति और पुरातत्त्व के प्रति उन्हें अपार श्रद्धा थी। उन्होंने कई काव्य, गद्य से सम्बन्धित ग्रन्थों कि रचना कि हैं। उन ग्रन्थों में से 'कल्पवृक्ष',

Rahul Publications

'पृथ्वीपुत्र', 'कादंबरी', 'हर्षचरित : एक सांस्कृतिक अध्ययन', 'भारत-सावित्री' प्रसिद्ध हैं। आपको साहित्य अकादमी पुरस्कार से भी आभूषित किया गया हैं।

सन्दर्भ :- राष्ट्र के स्वरूप में संस्कृति का योगदान और उसकी महानता के बारे में लेखक कह रहें हैं।

व्याख्या/भावार्थ :- राष्ट्र का तीसरा अंग जन की संस्कृति हैं। प्रत्येक जन की अपनी-अपनी भावना के अनुसार अलग-अलग संस्कृतियाँ राष्ट्र में विकसित होती हैं। पर जिस प्रकार सभी नदियाँ एक होकर सागर में मिल जाती हैं, उसी प्रकार राष्ट्रीय जीवन की सभी विधियाँ राष्ट्रीय संस्कृति में एकत्रित हो जाती हैं।

विशेषताएँ

1) राष्ट्र के स्वरूप और उसकी उन्नति के बारे में लेखक कह रहे हैं।

2) उनकी भाषा शुद्ध खड़ीबोली हैं।

अभ्यास के लिए प्रश्न उत्तर

1. 'राष्ट्र का स्वरूप' के कौन-कौन से अंग है। अपने विचार व्यक्त किजीए ?

उत्तर

राष्ट्र का स्वरूप निर्धारण में प्रमुख भुमिका निभानेवाले तीन तत्व है। 1) धरती, 2) धरती के वासी और मनुष्य की संस्कृति, 3) जन। पृथ्वी सच्चे अर्थो में समस्त राष्ट्रीय विचारधाराओं की जननी हैं। राष्ट्रीयता कि जड़े पृथ्वी में जितनी गहरी होंगी उतना ही राष्ट्रीय भावों अंकुर पल्लवीत होगा। धरती माता अपनी कोख में अमुल्य नदियाँ रहने के कारण वसुंधरा कहलाती हैं। अनेक प्रकार के धातुओं को पृथ्वी के गर्भ में पोषण मिलता हैं। पृथ्वी और आकाश के अंतराल में भी बहुत कुछ सामग्री भरी है। विज्ञान और उद्‌यम दोनों को मिलाकर राष्ट्र के भौतिक स्वरूप का एक ठाट खड़ा करना हैं। मातृभूमी पर निवास करने वाले मनुष्य राष्ट्र का दुसरा अंग हैं। पृथ्वी और जन दोनों के सम्मिलन से ही राष्ट्र का स्वरूप सम्पादित होता हैं। जन के कारण ही पृथ्वी मातृभूमी की संज्ञा प्राप्त करती हैं। जो जन मातृभूमी के साथ अपना सम्बन्ध जोडना चाहता हैं, उसे अपने कर्त्तव्यों के प्रति पहले ध्यान देना चाहिए। राष्ट्र का तिसरा अंग जन की संस्कृति हैं। संस्कृति ही जन का मस्तिष्क है। संस्कृति के विकास और अभ्युदय के द्वारा ही राष्ट्र की वृद्धी संभव है। राष्ट्र के समग्र रूप में भूमि और जन के साथ-साथ जन की संस्कृति का महत्वपूर्ण स्थान है। इन तीनों के बिना राष्ट्र की उन्नति असंभव है।

Rahul Publications

2. 'राष्ट्र का स्वरूप' निबंध में संस्कृति से संबंधित कौन-कौन से विचार लेखक ने व्यक्त किए हैं ?

उत्तर

राष्ट्र के तीन अंगो में से तीसरा जन की संस्कृति हैं। मनुष्यों ने युगों-युगों में जिस सभ्यता का निर्माण किया वह उसके जीवन की श्वास/प्रश्वास है। संस्कृति ही जन का मस्तिष्क है। संस्कृति के विकास और अभ्युदय के द्वारा ही राष्ट्र की वृद्धि संभव हैं। राष्ट्र के समग्र रूप में भूमि और जन के साथ-साथ जन की संस्कृति का महत्वपूर्ण स्थान है। संस्कृति के सौंदर्य और सौरभ में ही राष्ट्रीय जन के जीवन का सौंदर्य और यश अंतर्निहीत हैं। ज्ञान और कर्म दोनों के पारसपारिक प्रकाश की संज्ञा संस्कृति है। जीवन के विकास की युक्ति संस्कृति के रूप में प्रकट होती हैं। प्रत्येक जन कि अपनी-अपनी भावना के अनुसार अलग-अलग संस्कृतियाँ राष्ट्र में विकसित होती है, परंतु उन सबका मूल आधार पारसपारिक सहष्नुता और समन्वय पर निर्भर है। राष्ट्रीय जन अपनी संस्कृतियों के द्वारा एक-दुसरे के साथ मिलकर राष्ट्र में रहते है। जिस प्रकार जल के अनेक प्रवाह नदियों के रूप में मिलकर समुद्र में एक रूपता प्राप्त करते हैं उसी प्रकार राष्ट्रीय जीवन की अनेक विधियाँ राष्ट्रीय संस्कृति में समन्वय प्राप्त करती हैं। समन्वय युक्त जीवन ही राष्ट्र का सुखदायी रूप हैं।

Rahul Publications

कथा सिंधु

Rahul Publications

कथा सिंधु

1.	सद्‌गति	-	प्रेमचंद
2.	छोटा जादूगर	-	जयशंकर प्रसाद
3.	सच का सौदा	-	सुदर्शन
4.	प्रायश्चित	-	भगवति चरण वर्मा
5.	चीफ़ की दावत	-	भीष्म साहनी

Rahul Publications

1. सद्गति (సద్గతి)

– प्रेमचन्द

लेखक परिचय

प्रेमचन्द का जन्म सन् 1880 ई.में बनारस के निकट लमही नामक गाँव में हुआ था। इनका असली नाम धनपतराय था। प्रेमचन्द जी के पिता का नाम अजायबराय तथा माता का नाम आनन्दी देवी था। प्रारंभ में आपने उर्दू में लिखना शुरू किया था, किन्तु 'सोजे वतन' को जब्त करने के बाद उन्होंने 'प्रेमचन्द' के नाम से हिन्दी में लिखना आरंभ किया था।

प्रारंभ में प्रेमचन्द ने सरकारी अध्यापक के रूप में और बाद में शिक्षा विभाग में डिप्टी इन्सपेक्टर के रूप में काम किया था। परन्तु असहयोग आंदोलन से प्रभावित होकर उन्होंने सरकारी नौकरी छोड़ दी।

प्रेमचन्द ने एक दर्जन उपन्यास और ढ़ाई सौ से अधिक कहानियाँ लिखी हैं। गोदान, गबन, प्रेमाश्रम, सेवासदन, कायाकल्प आदि इनके प्रसिद्ध उपन्यास हैं। हिन्दी में प्रेमचन्द 'उपन्यास सम्राट' माने जाते हैं। प्रेमचन्द की कहानियाँ 'मानसरोवर ' के आठ भागों में प्रकाशित हैं। हिन्दी में कहानी को एक महत्वपूर्ण साहित्यिक विधा के रूप में स्थापित करने का महान कार्य प्रेमचन्द जी ने किया हैं। वस्तु और शिल्प दोनों भी दृष्टियों से इनकी कहानियाँ खरी उतरती हैं। इसीलिए सन् 1910 से सन् 1936 तक का समय, हिन्दी कहानी के इतिहास में 'प्रेमचन्द' युग माना जाता हैं।

'सद्गति' प्रेमचन्द के द्वारा लिखी गयी बहुत प्रसिद्ध और चर्चित कहानी हैं। अपनी अंतर्वस्तु के कारण सबसे अधिक हृदयस्पर्शी एवं मार्मिक हैं। दलित के शोषण की अमानवीय व्यवस्था और दलितों की नरकीय यातनाओं का सजीव चित्रण इसमें किया गया हैं।

రచయిత పరిచయము

బనారస్‌లోని లమహే అను గ్రామములో ప్రేమ్‌చంద్ 1880వ సం॥లో జన్మించినారు. ఈయన అసలు పేరు ధనపత్‌రాయ్. ఈయన "నవలా చక్రవర్తిగా" బిరుదు పొందినారు. ఈయన సుమారు 12 నవలలు వ్రాసినారు. 'గోధాన్' ఈయన ప్రసిద్ధి చెందిన నవల, మొత్తం 250 వరకు కథలు వ్రాసారు. ఇవి అన్నీ 'మానసరోర్' పేరుతో ఎనిమిది భాగాలుగా వ్రాయబడినాయి. 'సద్గతి' ఈయన కథలలో ప్రసిద్ధి పొందినది. దీనిలో దళిత ప్రజల యొక్క బాధలు, వారుపడే నరకయాతన సజీవంగా చిత్రించబడినది.

Rahul Publications

कहानी का सारांश

पात्रों का नाम - (1) दुखी (2) झुरिया (3) पंडित घिसाराम (4) दुखी-झुरिया की बेटी (5) गोंड (6) पंडिताईन (7) सारे गाँव के लोग

दुखी और झुरिया चमार जाति के थे। अपनी बेटी की सगाई पर पंडित घिसाराम को साइत-सगुन विचारने के लिए अपने घर बुलाना चाहते हैं। पंडित जी के प्रति दुखी और झुरिया को अपार विश्वास था। वे पंडित जी को भेंट करने आवश्यक सामग्री तैयार करके रखते हैं। वे जानते हैं कि पंडित जी बड़े पवित्र आदमी थे। अपने घर में वे कदम तक नहीं रखते और अपने आंगन में वे बैठ भी नहीं सकते। फिर भी अपनी बेटी की सगाई के लिए उन्हें बुलाना आवश्यक हैं। इस निमंत्रण को लेकर दुखी पंडित के यहाँ आता हैं।

पंडित घिसाराम ईश्वर के परम भक्त थे। वे नींद खुलते ही ईशोपासना में लग जाते हैं। हाथ मुँह धोकर, पूजा की सारी तैयारियाँ करके दस बजे तक पूजा पाठ करके घर आये यजमानों का परामर्श करते हैं। उसी समय दुखी वहाँ पर पहुँचकर अपनी बेटी की सगाई पर साइत सगुन विचारने का निमंत्रण देता हैं। पंडित जी उसे झाड़ू लगाना, गोबर से लेप करना, लकड़ी चीरना, खलिहान में भुसौली करने का काम सौंप देते हैं। पंडित जी समय पर खाना खाकर आराम कर लेते हैं। पर बिचारा दुखी सुबह से न कुछ खाया न पीया। पंडित और पंडिताइन उसके बारे में सोचते तक नहीं। पर दुखी के लिए पंडित जी का हुक्म ईश्वर की आज्ञा जैसा हैं। तुरन्त सब काम करने लगता हैं। उसके लिए लकड़ी फाडना बहुत मुश्किल होता हैं। काम में जोश लाने के लिए चिलम पीना चाहता हैं। आखिर एक गोंड के यहाँ से तम्बाकू, चिलम लाता हैं। उसके लिए आग की जरूरत पड़ती हैं। इसलिए पंडित के घर के आँगन में प्रवेशकर पंडिताइन के गुस्से का शिकार हो जाता हैं। तब भी दुखी अपने को ही दोषी ठहराता हैं कि वे लोग बड़े पवित्र होते हैं, तभी तो संसार उन्हें पूजता हैं। पंडित के घर में चमार कैसे चला जाय।

दुखी सब काम करते-करते थक जाता हैं। गोंड भी वह आकर उस पर सहानुभूति व्यक्त करता हैं। पर पंडित जी को उसकी स्थिति पर दया नहीं आती। थोडी देर आराम लेनेवाले दुखी के प्रति गुस्सा भी करते है। लकड़ी को जोर से कसके मारने को कहता हैं। दुखी भी उनकी बातों में पड़कर जोर-जोर से काम करते-करते बेहोश हो जाता हैं। और उसकी मृत्यु हो जाती हैं।

गाँव में हलचल मच जाती हैं। तब पंडित और पंडिताईन चमरौने में कहलवाकर मुर्दे को ले जाने के लिए कहते हैं। लेकिन गोंड चमरौने में जाकर सबको धमकाता हैं कि अभी पुलिस की तहकीकात

होगी। कोई वहाँ मत जाना। इस विषय से भयभीत होकर कोई भी दुखी की लाश को ले जाने वहाँ नहीं जाते। दुखी की स्त्री और बेटी वहाँ रो पड़ते हैं और वापस आते हैं। सारी रात दुखी की लाश वहीं पड़ी रहती हैं। कोई उसके बारे में सोचनेवाले तक नहीं। अंत में पंडित को ही उस लाश के पैरों में रस्सी बाँधकर गाँव के बाहर खींचना पड़ता हैं। तुरन्त स्नान और पूजा पाठ करना ही अपने कर्म का प्रायश्चित समझता हैं। बेचारा दुखी की लाश तो खेत में पड़ी रहती हैं। जिसे गीदड और गीद्, कुत्ते और कौए नोच रहे थे। यही जीवन पर्यन्त की भक्ति, सेवा और निष्ठा का पुरस्कार था।

కథా సారాంశము

దుఖీ, ఝురియా నిమ్న కులానికి చెందినవారు. తమ కుమార్తె వివాహ ముహుర్తానికి పండిత్ ఘసిరామ్‌ను తమ ఇంటికి పిలవాలని అనకుంటారు. అయనంటే వీరికెంతో నమ్మకము. పూజ్యభావము. ఆయనకు ఇవ్వడానికి ఎన్నో సంభావనలు కూడా సిద్ధపరుస్తారు. ఆయన ఎంతో గొప్పవాడిని తమ ఇంటి ఆవరణలో కూడా అడుగు పెట్టదని, అయినప్పటికీ తమ కుమార్తె వివాహ ముహూర్తానికి ఎలాగైన తనని పిలవాలని దుఖీ పండితుని ఇంటికి వెళతాడు.

పండిత్ ఘసిరామ్ గొప్ప దైవభక్తుడు. ప్రాత:కాలమునుంచే భగవనాస్మరణ చేస్తూ ఉంటాడు. కాలకృత్యములు తీర్చుకొని, పూజకు అన్నీ సమకూర్చుకొని పది గంటల వరకు పూజ చేసుకొని ఆ తర్వాత ఇంటికి వచ్చిన వారిని పలకరిస్తాడు. దుఖీ ఆ సమయానికి వెళ్ళి ఘసీరామ్‌ను ఇంటికి ఆహ్వానిస్తాడు. కానీ ఘసీరామ్ దుఖీని ఇంటి ఆవరణ అంతా ఊడ్చి పేడతో అలకడం, కట్టెలు కొట్టడం, గడ్డివాము నుండి గడ్డి తీయడం వంటి పనులు చెపుతాడు. దుఖీకి ఘసీరామ్ మాట భగవంతుని ఆజ్ఞ వంటది. కానీ ఉదయం నుండి ఏమీ తినకపోవడంతో నీరసంచిపోతాడు. గోండు దగ్గరకు వెళ్ళి చిలమ్ తెచ్చుకొని ఘసీరామ్ భార్యని నిప్పు అడిగి, ఆవరణలో అడుగు పెట్టినందుకు తిట్లు కూడా తింటాయి. ఇలా దుఖీ జీవితం అంతమౌతుంది.

विशेषताएँ

प्रेमचन्द ने इस कहानी में, दलितों के शोषण की अमानवीय मूल्य तथा व्यवस्था का और दलितों की नरकीय यातनाओं का जितना क्रूर और भयावह का सजीव चित्रण किया हैं। पंडित घिसाराम के द्वारा मनुष्य की पाशविकता का दर्शन कराके दलितों के जीवन की कारूणिक अन्त का चित्रण उन्होंने किया हैं।

पात्र तथा चरित्र चित्रण

1. दुखी

दुखी 'सद्गति' कहानी का प्रमुख पात्र हैं। यह कहानी प्रेमचन्द के द्वारा लिखी गयी हैं। दुखी चमार जाति का हैं। झुरिया उसकी पत्नी हैं। अपनी बेटी की सगाई पर पंडित घिसाराम को साइत-सगुन विचारने के लिए उनके घर जाता हैं। पंडितजी का हुक्म उसके लिए ईश्वर की आज्ञा

Rahul Publications

जैसा हैं। उनकों पंडित और पंडिताइन के प्रति अपार श्रद्धा थी। उसकी दृष्टि में वे लोग बड़े पवित्र हैं और इसलिए संसार उन्हें पूजता हैं। कठोर श्रम करने के कारण उसकी मृत्यु हो जाती हैं, शरीर सारी रात वहीं पड़ा रहता हैं। अंत में पंडित घिसाराम उसके पैरों में रस्सी बांधकर खींच लेता हैं और गाँव के बाहर फेंक देता हैं। गीदड और गिद्द, कुत्ते और कौए उस लाश को नोचते हैं। उसकी जीवन पर्यन्त भक्ति, बाह्मणों के प्रति सेवा और निष्ठा का यही पुरस्कार दुखी को मिल जाता हैं। इस प्रकार दुखी का कारूणिक अंत हो जाता हैं।

2. पंडित घिसाराम

पंडित घिसाराम 'सद्गति' कहानी का प्रमुख पात्र हैं। इस कहानी के लेखक प्रेमचन्द जी हैं। वे ईश्वर के परम भक्त थे। वे नींद खुलते ही ईश्वरोपासना में लग जाते हैं। हाथ, मुँह धोकर, पूजा की सारी तैयारियाँ करके दस बजे तक पूजा-पाठ करके, घर आये यजमानों का परामर्श करते हैं। सारे गाँव में उसके प्रति श्रद्धा, गौरव के साथ डर भी था। जातिपाति, मूढविश्वास, बाह्याडंबर के प्रति उन्हें अपार विश्वास था। उसमें मानवता की कमी थी। दुखी एक चमार था। उन्हें पंडित के प्रति अपार गौरव था। अपनी बेटी के विवाह प्रस्ताव के लिए पंडितजी को अपने घर निमंत्रण देने पंडित के घर आता हैं। तब पंडित चमार को सारे घर का काम सौंप देता हैं। वह यह भी नहीं सोचता है कि चमार ने कुछ खाया हैं या नहीं। पर पंडित की आज्ञा चमार के लिए ईश्वर की आज्ञा हैं। पंडित जी उसे झाडू लगाना, गोबर से लेप करना, लकड़ी चीरना, खलिहान में भुसौली करने का काम सौंप देता हैं। पर बिचारे दुखी ने सुबह से न कुछ खाया न पीया। उसके लिए लकडी फाडना बहुत मुश्किल होता हैं। काम में जोश लाने के लिए चिलम पीना चाहता हैं। लेकिन वह तो ब्राह्मणों का घर हैं। वहाँ चिलम और तम्बाकू मिलना मुश्किल हैं। आखिर एक गोंड के यहाँ से तम्बाकू, चिलम लाता हैं। उसके लिए आग की जरूरत पड़ती हैं। इसके लिए पंडित के घर के आँगन में प्रवेशकर पंडिताइन के गुस्से का शिकार हो जाता हैं। तब भी दुखी अपने को ही दोषी ठहराता हैं कि वे लोग बड़े पवित्र होते हैं, तभी तो संसार उन्हें पूजता हैं। इेसे सोंचकर वह और ज्यादा काम करते रहता हैं। थकान से पीडित चमार को पंडित और जोर से काम करवाता हैं और उसके मरण का कारण बन जाता हैं। फिर भी पंडित जी इसके प्रति कुछ भी पछतावा नहीं हैं। सारा गाँव उस लाश को लेने के लिए तैयार नहीं होता हैं। तब भी पंडित चमार के पैरों पर रस्सी बांधकर निर्दयता से गाँव के बाहर खींच लेता हैं। इस प्रकार पंडित जी पाखंड, निर्दय और ढ़ोंगी भक्त के रूप में हमारे सामने आते हैं।

Rahul Publications

2. छोटा जादूगर (బాల ఇంద్రజాలికుడు)

- जयशंकर प्रसाद

लेखक परिचय

बहुमूखी प्रतिभासम्पन्न साहित्यकार, छायावाद के आधार स्तंभ, कालजयी महाकाव्य 'कामायनी' के रचनाकार श्री. जयशंकर प्रसाद जी का जन्म काशी में सुंधनी साहू नामक एक संपन्न वैश्य परिवार में सन् 1890 ई. में हुआ। बचपन से ही प्रसाद जी को साहित्य, कला, दर्शन तथा इतिहास में गहरी रूचि थी। इन्होंने साहित्य की लगभग सभी साहित्यिक विधाओं में रचनाएँ की। गंभीर चिंतन, इतिहास का स्पष्ट बोध, शाश्वत जीवन मूल्यों के प्रति आस्था उनकी समस्त रचनाओं में दृष्टिगोचर होती हैं। 'स्कन्दगुप्त', 'चन्द्रगुप्त', 'जनमेजय का नागयज्ञ', 'ध्रुवस्वामिनी' आदि नाटक उनके ऐतिहासिक बोध के परिचायक हैं। वे हिन्दी में 'ऐतिहासिक नाटककार' या 'नाटक सम्राट' के रूप में प्रसिद्ध थे। वे प्रेम, त्याग, कर्त्तव्य आदि भारतीय संस्कृति के आदर्श मूल्यों को प्रधानता देनेवाले साहित्यकार थे।

రచయిత పరిచయము

జయశంకర్ ప్రసాద్ 1890వ సం॥లో కాశీలో ఒక సంపన్న వైశ్య పరివారంతో జన్మించినారు. హిందీలో ఛాయావాది కావ్యధారను ఏర్పరచిన వారిలో ముఖ్యులు. చారిత్రక నాటకములు వ్రాయడంలో ఈయన అందెవేసిన చేయి 'కామాయని' ఈయన ప్రసిద్ధ కావ్యము. ప్రేమ, త్యాగము, కర్తవ్యము, భారతీయ సంస్కృతి గూర్చి ప్రధానముగా వారి రచనలలో వివరించినారు. ప్రస్తుతం ఈ పాఠంలో పేదరికంతో బాధపడుతున్న ఒక వీధి బాలుడు తన చిన్న వయసులోనే ఎదురైన సమస్యలను ఎలా ఎదుర్కొన్నాడో వివరించబడినది.

Rahul Publications

कहानी का सारांश

प्रस्तुत कहानी 'छोटा जादुगर' बाल्य जीवन की एक ऐसी कहानी हैं जिसमें आर्थिक विपन्नता से ग्रसित एक 'स्ट्रीट बॉय' के चरित्र को आदर्शात्मक रूप से उभारा गया हैं। कार्निवल के मैदान में स्वयं कहानीकार 'छोटा जादूगर' से मिलते हैं। वह एक लड़का था। उसके गले में फटे कुरते के ऊपर एक मोटी-सी सूत की रस्सी पड़ी थी और जेब में कुछ ताश के पत्ते थे। कहानीकार उसकी ओर आकर्षित होता हैं। और उस लड़के को लेकर कार्निवाल के मैदान में घूमता हैं। उसको निशाने लगाने के खेल में

निपुण होते देखकर चकित होता हैं। बातों में पता चलता हैं कि उसका पिता देश के लिए जेल गया हैं और माँ बीमार हैं। इसलिए उसके लिए उसे तमाशा दिखाकर पैसे कमाना पड़ता हैं। पहले कहानीकार उसकी बातों में यकीन नहीं करतें। वह अकेला होने के कारण उस लड़के को साथ में लेकर घमते हैं और चले जाते हैं।

कुछ दिनों के बाद बोटानिकल उद्यान में कहानीकार अपनी पत्नी और साथियों के साथ गये थे तब वे फिर इस छोटा जादूगर से मुलाकात करते हैं। उसका तमाशा देखने की इच्छा न होने पर भी पत्नी के अनुरोध से छोटा जादूगर को अनुमति देता हैं। वह इतने जोर से जादू दिखाता हैं कि सब खिलौने उसके खेल में अपना अभिनय करने लगे। उसकी वाचलता से अभिनय हो रहा था। सब हंसते-हंसते लोट-पोट हो गये। कहानीकार की श्रीमती उसको एक रूपया देने से कहानीकार को उस बालक के प्रति ईर्ष्या हो जाती हैं कि बिना वजह ही उसे पैसे मिल रहे हैं। और इससे वह लड़का मजा करेगा। पर छोटा जादूगर कहता हैं कि पहले वे भरपेट पकौडी खाकर, एक सूती कंबल माँ के लिए लेगा। इससे कहानीकार अपने स्वार्थ और ईर्ष्या पर लज्जित होता हैं। उसकी माँ की बीमारी देखकर, अस्पताल से उसे बाहर निकालने की बात सुनकर कहानीकार दुखित होकर वहाँ से चला जाता हैं।

बहुत दिनों के बाद फिर जब काहानीकार उद्यान देखने चला तब वहाँ छोटा जादूगर तमाशा दिखा रहा था। लेकिन उसके खेल में पहले जैसा आनंद नहीं था। पूछने पर पता चला कि उसकी माँ का अन्तिम क्षण था। फिर भी माँ के लिए, पैसे कमाने उस पीड़ा में भी वह आया। कहानीकार अपने मोटर में उसे लेकर झोपडी के पास चला तो पता चलता कि बेटे को एक बार देखकर माँ के प्राण चले गये। छोटा जादूगर रोने लगा तो कहानीकार दुःखित होकर खड़ा हो गया। और अपने आप में पश्चाताप होने लगा। पहले कहानीकार छोटा जादूगर के बातों में विश्वास नहीं करता था। छोटा जादूगर के घर जाने के बाद ही कहानीकार को छोटा जादूगर की बातों में विश्वास पैदा हुआ। और उसकी दयनीय स्थिति, प्रेम, त्याग का उज्ज्वल दर्शन कहानीकार ने बड़ा सजीव चित्रण किया है। गरीबी के साथ-साथ ईमानदारी का चित्रण भी छोटा जादूगर में किया गया हैं।

కథా సారాంశము

కార్నివాల్ మైదానంలో రచయితకు ఒక బాల జాదూగర్‌తో పరిచయమౌతుంది. అతడు ఒక చిరిగిన కుర్తామీద మెడలో ఒక మఫ్లర్ వేసుకొని జేబులో కొన్ని పేక ముక్కలుపెట్టుకొని కనిపించాడు. ఆ బాలుని పట్ల ఏదో ఆకర్షణ కలిగి రచయిత ఆ పిల్లవాడితో మాటలు కలిపాడు. ఆ మాటలలో వాడి తండ్రి

దేశం కోసం జైలుకి వెళ్ళాడని, తల్లికి ఆరోగ్యం బాగోలేదని, అందరికీ ఇంద్రజాలం చూపించి డబ్బు సంపాదిస్తాడని తెలుసుకున్నాడు. అతని మీద నమ్మకం కలుగనప్పటికీ తను ఒంటరిగా తిరుగలేక ఆ పిల్లవాడిని తోడు చేసుకొని మైదానమంతా తిరుగుతాడు.

(తన భార్య స్నేహితులతో బొటానికల్ గార్డెన్‌కి వెళ్ళినప్పుడు మరల ఆ పిల్లవాడు తారసపడతాడు).

రచయిత తన భార్య స్నేహితులతో బొటానికల్ గార్డెన్‌కి వెళ్ళినప్పుడు మరలా ఆ పిల్లవాడు రచయితకు తారసపడతాడు. రచయితకు ఇంద్రజాలం చూసే ఇష్టం లేకున్నా భార్య కోరికమేర ఒప్పుకుంటాడు. తన మాటల గారడీతో హుషారుగా బొమ్మలన్నింటినీ ఆడిస్తూ అందరినీ సంతోషపెడతాడు. రచయిత భార్య ఆ పిల్లవానికి ఒక రూపాయి ఇచ్చినప్పుడు రచయితకు ఆ పిల్లవాని మీద ఈర్ష్య కలుగుతుంది. కానీ ఆ రూపాయితో కడుపునిండా తిని ఒక రగ్గు కొంటానని చెప్పినప్పుడు తన భావనకు సిగ్గుపడతాడు. తర్వాత దారిలో మరల ఒక గుడిసె దగ్గర ఆ పిల్ల వాడిని, తల్లిని చూస్తాడు. హాస్పిటల్ వాళ్ళు డబ్బుకట్టకపోవడం వలన ఆ పిల్లవాడి తల్లిని బయటకు గెంటారని తెలిసి బాధపడతాడు.

చాలా రోజుల తర్వాత రచయిత మరల ఆ ఉద్యానవనానికి వస్తాడు. అక్కడ మరల బొమ్మలతో గారడీ చేస్తున్న ఆ పిల్లవాడిని చూస్తాడు. కాని ఆ పిల్లవాడి మాటలలో, చేష్టలలో ఏదో బాధ, హుషారు లేకపోవడం గమనిస్తాడు. ఆట అయిపోయిన తర్వాత విషయం తెలుసుకుంటాడు. ఆ పిల్లవాని తల్లికి ఆఖరి ఘడియలని, డబ్బు అవసరమై ఇలా వచ్చాడని తెలుస్తుంది. తన కారులో ఎక్కించుకొని వాని గుడిసె దగ్గరకు తీసుకువస్తాడు. పిల్లవాడిని తల్లి ఆఖరి చూపుచూచి మరణిస్తుంది. ఆ చిన్న జాదూగర్ తల్లిని పట్టుకొని ఏడుస్తుంటాడు. రచయిత మనసు ఇది చూచి ఆర్ద్రమౌతుంది.

Rahul Publications

विशेषताएँ

1) 'छोटा जादूगर' की स्वालंबन की प्रवृत्ति, चतुराई, मधुर व्यवहार, क्रियाकौशल और मातृ-भक्ति का सजीव चित्रण मिलता हैं।

2) प्रसाद मूर्धन्य कहानीकार भी माने जाते हैं। प्रेमचन्द के समकालीन होते हुए भी अपनी कहानियों की आदर्शात्मकता, भावात्मकता तथा कल्पना प्रवणता के कारण विशिष्ट उच्चकोटि के साहित्यकार माने जाते हैं।

3) वे संस्कृतनिष्ठ तत्सम शब्दावलियों का अधिक प्रयोग करते हैं और पात्रों के अनुरूप शुद्ध खड़ीबोली शब्दावलियों को अपनाते हैं।

पात्र तथा चरित्र चित्रण

1. छोटा जादूगर

छोटा जादूगर इस कहानी का नायक हैं। यह कहानी 'जयशंकर प्रसाद' के द्वारा लिखी गई हैं। छोटा जादूगर एक छोटा लड़का था। पिता देश के लिए जेल गये थे। माँ बीमार थी। पेट भरने के लिए और माँ की देखभाल के लिए तमाशा दिखाता था। कहानीकार से उसे दो-तीन बार मुलाकात होती हैं। कहानीकार को पहले उस पर विश्वास नहीं होता था। वह अकेले होने के कारण उस जादूगर को अपने साथ लेकर घूमता हैं। उसको शरबत पिलाता हैं। टिकट खरीदकर उसका निशाने लगाने के खेल खेलने ले जाता हैं। वह पक्का निशानेबाज हैं। अच्छी तरह तमाशा दिखाता हैं। पैसे कमाकर माँ की देखभाल करता हैं। देश के लिए जेल गये पिताजी पर गर्व करता हैं। माँ के प्रति अन्त तक अच्छी तरह अपना कर्त्तव्य निभाता हैं। माँ की अंतिम क्षणो में भी वह निर्भय होकर सबको तमाशा दिखाता हैं और उसके लिए पैसे कमाना चाहता हैं। जब माँ की मृत्यु हो जाती हैं तब वह इतना रो पड़ता है कि कहानीकार भी उसे देखते रह जाते हैं। उम्र में छोटा होकर भी सच्चे पुत्र की तरह धैर्य के साथ अपनी जिम्मेदारी खूब निभाता हैं। वह गरीब होकर भी ईमानदार आत्म निर्भर और माँ के प्रति अपनी कर्त्तव्यपरायणता खूब निभाता हैं।

अंत मे छोटा जादूगर की माँ के आखिरी क्षण समीप आने लगते हैं। छोटा जादूगर माँ की दवाईयों को खरीदने के लिए फिर से तमाशा दिखाता रहता हैं। लेकिन पहले के जैसा वह आनंदीत नही था रहते यह देखकर लेखक छोटा जादूगर को अपने कार में चढ़ाकर उसके झोपडी के पास ले आता हैं। जब माँ छोटा जादूगर की तरफ एकबार देखकर अपने प्राणों को त्यागती हैं, वह अपने माँ को पकडकर रोते रहता हैं। यह देखने के बाद रचयिता का मन भी द्रवित हो जाता हैं।

Rahul Publications

3. सच का सौदा (సత్యానికి భేరం)

- सुदर्शन

लेखक परिचय

प्रेमचन्द के समकालीन कहानीकारों में अपने मौलिक चिंतन तथा समाजोन्मुख सोद्देश्य कहानियों के रचयिता के रूप में सुदर्शन का नाम विशेष रूपसे उल्लेखनीय हैं। उनका वास्तविक नाम बदरीनाथ था। उनका जन्म अविभाजित पंजाब के सियालकोट जिले में सन् 1896 ई. में हुआ था। सुदर्शन का हिन्दी, उर्दू दोनों भाषाओं पर अधिकार था। उन्होंने यद्यपि उपन्यास एवं नाटक लिखे तथापि उनकी ख्याति सफल कहानीकार के रूप में हैं। एक ओर उनकी कहानियाँ सामाजिक समस्याओं का चित्रण करती हैं तो दूसरी ओर पाठकों को उपदेश तथा बोध भी प्रदान कराती हैं। उनके प्रमुख कहानी संग्रह हैं - पुष्पलता, पनघट, नगीने, नवनीधि आदि। उन्होंने आदर्श एवं यथार्थ का समन्वय करते हुए पुराणशैली में सामयिक सत्यों का शांत, गंभीर, प्रभावशाली एवं अनूठे ढंग से उद्घाटन किया हैं। अतः वातावरण प्रधान, सरसता-सहजता एवं कौतूहलपूर्ण प्रवृत्तियों को उभारते हुए लिखने में सुदर्शन सिद्धहस्त थे।

Rahul Publications

రచయిత పరిచయము

ఆధునిక కథా రచయితలలో సుదర్శన్‌గారు ప్రసిద్ధి పొందినవారు. వీరు పంజాబ్‌కి చెందిన సియాల్‌కోట జిల్లాలో 1896 సం॥లో జన్మించారు. హింందీ, ఉర్దూ రెండు భాషలలో ఈయనకు పాండిత్యము కలదు. ఈయన కథలలో సామాజిక సమస్యల గురించి ఎక్కువగా వివరించబడినది. 'సచ్ కా సౌదా' కథ అన్ని సమయాలలో మనకు ప్రేరణను కలుగజేస్తుంది. ధర్మాన్ని, సత్యాన్ని అనుసరించి వారికి ఎప్పుడూ విజయం కలుగుతుందని వివరించబడినది.

कहानी का सारांश

सर्वदयाल को अधिक संकटों के कारण पढ़ाई ठीक से नहीं मिलती। लेकिन उसके मामा की सहायता से उसने अपनी पढ़ाई पूरी की। पर नौकरी नहीं मिली। इसके लिए उसको अनेक यातनाओं का सामना करना पड़ा। अखबार में वान्टेड रईस रायबहादुर हनुमंतराय सिंह के मासिक पत्र 'रफ़ीक हिन्द' के संपादक के रूप में रजिस्टर कराया। पर उसको शक था कि ग्रैजुएट, वकील जैसे सैकडों उम्मीदवारों के आगे अपना क्या होगा। आशा निराशा के द्वन्द्व में पड़ जाता हैं। बहुत इन्तजार के बाद संपादक के रूप में पत्र मिल जाता हैं।

सर्वदयाल रावलपिंडी से अंबाला रवाना होता हैं। रेल में बैठकर संपादक का नाम कागज पर लिखकर बहुत हर्षित हो जाता हैं। साहित्य परिषद में उनकी प्रभावशाली वक्तृता और लेखों की धूम थी। यही प्रशंसा ठाकुर हनुमंतराय सिहं के मुह से भी सुनता हैं। और उसकी योग्यता के अनुसार संपादक का पद उन्हें मिल जाता हैं। कुछ ही दिनों में 'रफ़ीक हिन्द' पत्रिका का नाम सर्वदयाल के संपादन में मशहूर हो जाता हैं। सारे पंजाब में नहीं, बल्कि 'रफ़ीक हिन्द' की कीर्ति सारे देश भर में फैल गई। पंडित सर्वदयाल की गिनती बड़े आदमियों में होने लगी। उन्हें ऐश्वर्य और ख्याति प्राप्त हो गई। म्युनिसिपालिटी के मेंबर चुनने के समय ठाकुर हनुमंतराय सिंह भी एक पक्ष की ओर से मेंबरी के लिए प्रयत्न करने लगे। वे जातीय सेवा के अभिलाषी तो थे, परंतु उनके वचन कर्म में बड़ा अन्तर था। दूसरे पक्ष का लाला नेकी और सच्चा देश भक्त था। और सर्वदयाल का मित्र था। सर्वदयाल लालाजी का समर्थन करके ठाकुर जी के क्रोध का शिकार हो जाता हैं। उन्हें संपादक का पद छोड़ना पड़ता हैं।

इलेक्शन में ठाकुर हार जाता हैं और लाला हशमतराय विजय प्राप्त करते हैं। पंडित सर्वदयाल रावलपिंडी वापस आ जाता हैं। वह अपने मन के विरूद्ध कोई काम कर नहीं पाता। उनको मान इस बात का था कि मेरे यहाँ सच का सौदा हैं। परंतु संसार में इस सच के ग्राहक अधिक नहीं हैं। वह सीधा-साधा जीवन बिताने लगता हैं। एक दिन ठाकुर हनुमंतराय सर्वदयाल के पास आता हैं और अपनी गलती स्वीकार करके उसको फिर 'रफ़ीक हिन्द' पत्रिका का भार संभालने को कहता हैं। सर्वदयाल के अत्यंत उन्नत व्यक्तित्त्व के आगे ठाकुर हनुमंतराय का सिर झुक जाता हैं। वह समझता हैं कि सर्वदयाल के यहाँ सच का सौदा हैं और किसी के दुकान में यह नहीं मिलता।

Rahul Publications

కథా సారాంశము

సర్వదయాళ్‌కు ఆర్ధిక ఇబ్బందుల వలన చదువు సరిగా సాగదు. తన మామ ఆర్ధిక సహాయము వలన B.A. పూర్తి చేస్తాడు. కానీ ఎక్కడా ఉద్యోగం దొరకదు. ఎన్నో ఇబ్బందులు పడవలసి వస్తుంది. సమాచార పత్రికలో 'వాంటెడ్' కాలమ్స్‌లో రాయ్‌బహాదుర్ హనుమంతరాయ సింహ్ గారి మాసపత్రిక 'రఫీక్ హింద్' కి సంపాదకునిగా తన దరఖాస్తూ పెట్టుకుంటాడు. కానీ వందలమంది అభ్యర్థులు తనకన్నా గొప్ప చదువులు చదివినారు, (వకీళ్ళు) ప్లీడర్లు దానికి దరఖాస్తు పెట్టుకున్నారని తెలిసి చాలా నిరాశపడతు. కానీ చివరికి సర్వదయాల్‌కే సంపాదకుని ఉద్యోగం లభిస్తుంది.

సర్వదయాల్ రావల్పిండి నుండి అంబాలా బయలుదేరతాడు. ఎంతో ఉత్సుకతను అనుభవిస్తాడు. రైల్లో కూర్చొని కాగితంపై సర్వదయాల్, సంపాదకుడు, రఫీక్‌హింద్ అని ముందుగానే వ్రాసుకొని ఆనందాన్ని అనుభవిస్తాడు. సాహిత్య సభలలో కూడా మంచి వక్తగా, వ్యాసకర్తగా, ఈయనకు ఎంతో పేరుంది.

అతని యోగ్యతకు అనువైన ఉద్యోగమే సర్వదయాల్‌కు లభిస్తుంది. కొద్దిరోజులలోనే ఆ పత్రిక కేవలం పంజాబ్‌లోనే కాక దేశం మొత్తం మీద మంచిపేరు సంపాదిస్తుంది. పండిట్ సర్వదయాల్ గొప్పవాళ్ళలో ఒకడిగా ప్రసిద్ధి చెందుతాడు. మునిసిపాలిటీ ఎన్నికల సమయం వచ్చినప్పుడు ఠాకూర్ హనుమంత్ రాయ్ సింగ్ కూడా మెంబర్‌గా నిలుచుంటాడు. కాని అతను అంత దక్షత కలవాడు కాదు. అతని ప్రత్యర్థి లాలాహష్మత్‌రాయ్ మంచి దేశభక్తుడు, అన్ని అర్హతలు కలవాడు, సర్వదయాల్‌కి మిత్రడు, సర్వదయాల్ లాలాను సమర్థించటం వలన ఠాకూర్ క్రోధానికి ఆహుతి అవుతాడు. పత్రిక సంపాదకునిగా అతను త్యాగపత్రము ఇచ్చి వెళ్ళిపోతాడు.

తనకున్న ఆశయాల వలన ఏ ఉద్యోగంలో ఇమడలేక సర్వదయాల్ ఒక చిన్న దుకాణం నడుపుతూ ఉంటాడు.సత్యమే తనకున్న సంపద అని భావిస్తాడు. ఎన్నికలలో ఠాకూర్ ఓడిపోతాడు. చివరకు ఠాకూర్ తన తప్పు తెలుసుకొని సర్వదయాల్‌ని క్షమాపణ కోరి, మరలా పత్రిక సంపదకీయాన్ని అతనికే అప్పచెపుతాడు.

ఈ విధంగా ఈ కథలో సత్యమును, ధర్మమును పాటిస్తే ఎప్పటికీ విజయం లభిస్తుందని వివరించబడింది.

Rahul Publications

विशेषताएँ

1) इस प्रकार कहानीकार ने इसमें सर्वदयाल की सत्यता के द्वारा यह स्पष्ट किया हैं कि जीवन में धर्म एवं सत्य के मार्ग का अनुसरण करने से मनुष्य जीवन में सदा सफल होता हैं और गौरव प्राप्त करता हैं।

2) लेखक के 'हार की जीत' के समान 'सच का सौदा' एक बोधप्रद कहानी हैं। वस्तुतः इसी कोटि की कहानियों में उनकी कला की वास्तविक अभिव्यक्ति हुई।

3) लेखक ने पात्रों के अनुरूप भाषा का प्रयोग किया हैं।

पात्र तथा चरित्र चित्रण

लेखक ने इस कहानी में अन्य मुख्य पात्रों की भाषा भी सन्दर्भ के अनुसार रखने का प्रयत्न किया हैं। अन्य पात्र के नाम कुछ इस प्रकार हैं - (1) सर्वदयाल के पिता : शंकरदत्त (2) सर्वदयाल के मामा : सुशील (3) ठाकुर हनुमंतराय सिंह (4) लाला हशमत राय (5) सर्वदयाल की पत्नी

सर्वदयाल

सर्वदयाल 'सच का सौदा' कहानी का नायक हैं। इसके कहानीकार सुदर्शन जी हैं। अनेक आर्थिक संकटों से गुजरकर बी.ए. पास कर लेता हैं। बहुत कोशिश के बाद 'रफ़ीक हिन्द' मासिक पत्रिका का संपादक बनता हैं। वे प्रभावशाली वक्ता और कुशल लेखक थे। उसके संपादकीय में 'रफ़ीक हिन्द' पत्रिका की कीर्ति देश भर में फैल जाती हैं। वह हमेशा धर्म और सत्य का अनुसरण करनेवाला था। इसलिए म्युनिसिपालिटी के मेंबर चुनने के समय में वह ठाकुर का साथ न देकर लाला हशमतराय का समर्थन करता हैं। इसके लिए वह अपना संपादक का पद भी त्यागता हैं। फिर भी वह एक कदम भी पीछे नहीं हटता। उनको मान इस बात का था कि मेरे यहाँ सच का सौदा हैं। परन्तु संसार में इस सौदे के ग्राहक कितने हैं। पिता और पत्नी उनके खिलाफ होने पर भी सर्वदयाल चिंतित नहीं होते हैं। वह साधारण जीवन बिताने लगता हैं। ठाकुर हनुमंतराय अपनी गलती स्वीकार करते हैं, फिर एक बार 'रफ़ीक हिन्द' मासिक पत्रिका का संपादक बन जाता हैं। असल में 'सच का सौदा' कहानी में पहले सर्वदयाल कंगाली के दिन भी बीता चुका था, अब ऐश्वर्य और ख्याति के युग में अपने जीवन को आनंदमय एवं भाग्य में सभी भोग भोगने का अवसर 'रफ़ीक हिन्द' पत्रिका द्वारा प्राप्त हो जाता हैं। ठाकुर हनुमंतराय की ये निजी पत्रिका संस्था हैं। 'रफ़ीक हिन्द' पत्रिका की स्थापना ठाकुर हनुमंतराय ने कि हैं। क्योंकि वे अमीर पुरूष थे और अंबाला की मुनिसिपालिटी के मेंबर चुनने का समीय आया, तो ठाकुर हनुमंतराय सिंह भी एक पक्ष की ओर से मेंबरी के लिए प्रयत्न करने लगे। अमीर पुरूष थे, रूपया-पैसा पानी की तरह बहाने को उद्यत हो गए। उनके मुकाबले में लाला हशमतराय खड़े हुए। हाईस्कूल के हेडमास्टर, वेतन थोड़ा लेते थे, कपड़े साधरण पहनते थे। कोठी में नहीं, वरन् नगर की एक गली में उनका आवास था। परंतु जाति के सेवा के लिए हर समय उद्यत रहते थे। उनसे पंडित सर्वदयाल की बड़ी मित्रता थी। उनकी इच्छा न थी कि इस झंझट में पडें, परंतु सुहद मित्रो ं ने जोर देकर उन्हें खड़ा कर दिया। पंडित सर्वदयाल ने सहायता का वचन दिया।

ठाकुर हनुमंतराय सिंह, जातीय सेवा के अभिलीषी तो थे, परंतु उनके वचन और कर्म में बड़ा अंतर था। उनकी जातीय सेवा, व्याख्यान झाडने, लेख लिखने और प्रस्ताव पास कर देने तक ही सिमित थी। इससे परे जाना वे अनावश्यक हीन झिझकते थे। इस बात से पंडित सर्वदयाल भली-भाँति परिचित

थे। इसलिए उन्होंने अपने मन में निश्चय कर लिया कि परिणाम चाहे कैसा ही बुरा क्यों न हो, ठाकुर साहब को मेंबर न बनने दूँगा। इस पद के लिए वे लाला हशमतराय ही को उपयुक्त समझते थे।

सर्वदयाल रविवार के दिन में आयोजित कीए गए समारोह में 'म्युनिसिपल इलेक्शन' के बारे में भाषण देना आरंभ किया हैं। सहस्त्रों लोगो ने पंडित के भाषण से सत्य और झूठ का बीच के अन्तर जान चुके हैं। आखिर 'म्युनिसिपल इलेक्शन' में ठाकुर की जगह लाला हशमतराय जीत चुके हैं। ठाकुर हनुमतराय को यह पता चलता हैं कि पंडित सर्वदयाल उसकी पक्ष न होकर लाला हशमतराय की तरफदारी करने से उनको बहुत गुस्सा आ जाता हैं और पंडित सर्वदयाल को अपने पत्रिका संपादक पद से नीकाल देते हैं। फिर से सर्वदयाल अपने गाँव को वापस चले जाकर वहाँ एक दुकान खोलकर अपना जीवन चलाते रहते हैं।

कुछ दिन होने के बाद 'रफ़ीक हिन्द' पत्रिका नाम समाज में कम हो जाता हैं। अब तक सर्वदयाल के कारण ही 'रफ़ीक हिन्द' पत्रिका ने समाज में इतनी ख्याति प्राप्त कि थी, अर्थात् ऐसी शोकजनक और हृदयद्रावी घटना हैं कि जिसकी योग्यता पर समाचार पत्रों में लेख निकलते हों, जिसकी सत्य भाषण ही नहीं सत्य स्वभाव अटल रहा हों, उसको अजीविका चलाने के लिए केवल पाँच रूपये की पूँजी से दुकान चलाना पड़ा।

सर्वदयाल के घर में पिता और सर्वदयाल की पत्नि भी उनका विरोध करते थे। किन्तु सर्वदयाल अपनी सच्चाई के साथ सौदा नहीं करना चाहते हैं। अंत में ठाकुर हनुमंतराय पत्रिका को चलानेवाले अच्छे काबिल व्यक्ति के लिए सोंचे तो उनको सर्वदयाल के अलावा कोई नहीं सूझा। अतः सर्वदयाल के घर जाकर अपनी गलती को कुबूल करते हैं। और उनसे मॉफी माँगते हैं और सर्वदयाल को फिर से 'रफ़ीक हिन्द' पत्रिका का संपादक बना देते हैं।

Rahul Publications

4. प्रायश्चित (ప్రాయాశ్చిత్తము)

- भगवती चरण वर्मा

लेखक का परिचय

भगवती चरण वर्मा जी का जन्म शफीपुर जिला उन्नाव में सन् 1903 ई. में हुआ। आपने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से बी.ए. उपाधि प्राप्त की। उसके पश्चात एल.एल.बी.की उपाधि प्राप्त कर वे वकील बन गए। उनकी रूचि साहित्य में आरंभ से थी। वे छायावादोत्तर काल के प्रसिद्ध कवि माने जाते हैं। मस्ती, आवेश और अहं उनकी कविताओं के केन्द्र बिन्दु हैं। मधुकण, प्रेम-संगीत, मानव और एक दिन आदि उनकी काव्य कृतियाँ हैं। धीरे-धीरे वे कहानी तथा उपन्यास की ओर प्रवृत्त हुए। उनके प्रसिद्ध उपन्यास 'चित्रलेखा' पर फिल्म भी बनाई गई। पतन, तीन वर्ष, टेढ़े मेढ़े रास्ते, थके पाँव, रेखा, सामर्थ्य सीमा, भूले बिसरे चित्र, अखिरी दांव उनके प्रसिद्ध उपन्यास हैं। ये प्रेमचन्द की परंपरा के कहानीकार के रूप में जाने जाते हैं। खिलते फूल, इंस्टालमेंट, दो बाँके आदि उनके कहानी संग्रह हैं। उनकी गद्य और पद्य की भाषा सजीव और मार्मिक अनुभूतियों के उद्घाटन में समर्थ हैं।

Rahul Publications

రచయిత పరిచయము

భగవతీ శరణ్ వర్మ 1903వ సం॥లో శఫీపుర్ జిల్లాలోని 'ఉన్నావ్'లో జన్మించినారు. వీరు ఛాయవాద్ తర్వాత కవులలో ప్రసిద్ధి పొందినవారు. ఈయన 'చిత్రలేఖ' నవల సినిమాగా కూడా చేయబడినది. ఈ మూఢనమ్మకాలను వ్యతిరేకించారు. ప్రస్తుతము 'ప్రాయశ్చిత్తము'తో కుటుంబంలోని తరతరాల నుంచి వచ్చే మూఢనమ్మకాలపై వ్యంగ్యంగా చిత్రీకరణ చేయబడినది. పిల్లిని హత్యచేస్తే నరకం లభిస్తుంది. దానికి ప్రాయశ్చిత్తము చేయాలని వివరించబడింది.

कहानी का सारांश

'प्रायश्चित' कहानी में पारिवारिक रूढ़ियों पर व्यंग्य किया गया हैं। विशिष्ट प्रकार का विश्वास हमलोग बिल्ली के प्रति रखते हैं। उसे हम मारते-पीटते नहीं हैं। माना जाता हैं कि उसकी हत्य करने पर नरक ही मिलेगा। बिल्ली की हत्या के पाप से बचने के लिए पश्चाताप किया जाता हैं। पश्चाताप के नाम पर किये जाने वाले कर्मकांड का कहानीकार ने हास्यपूर्ण वर्णन किया हैं। भगवती चरण वर्मा जी के अनुसार कहानी कुछ इस प्रकार हैं -

रामू की बहू विवाह के बाद दो महिने हुए मायके से प्रथम बार ससुराल आई थी। सासू माँ पूजा पाठ में लग गई और सारे घर का भार उसको सौंप दिया गया। रामू की बहू चौदह वर्ष की बालिका हैं। इसलिए वह कभी भंडार घर खुला रखती हैं और कभी भंडार घर में बैठे बैठे सो जाती हैं। उस घर में एक कबरी बिल्ली थी। रामू की बहू की लापरवाही उसके लिए सौभाग्य बन जाती थी । बिल्ली दूध, घी, दही सब कुछ किसी न किसी तरह उडा रही हैं। रामू की बहू बिल्ली से तंग आ गई। उसने तय कर लिया कि या तो वह इस घर में रहेगी या कबरी बिल्ली।

एक दिन रामू की बहू ने रामू के लिए पिस्ता, बादाम, मखाने सब डालकर खीर बनाई। उसको बिल्ली से बचाने ऊँचे ताक पर रखी। फिर भी रामू की बहू की अनुपस्थिती में बिल्ली उस तक छलांग मार कर गिरा देती है। तब रामू की बहू देहरी पर कटोरी भर दूध रखकर चली गई। बिल्ली वहाँ आ गई और दूध पीने लगी। तब रामू की बहू ने पाटा बिल्ली पर पटक दिया। इससे बिल्ली न हिल- न डुली उलट गई। बिल्ली की हत्या होने की खबर सारे घर में ही नहीं बल्कि सारे मोहल्ले में फैल गई। पंडित परमसुख कहता हैं कि प्रातः काल ब्रह्ममुहूर्त में बिल्ली से कुंभीपाक नरक मिलेगा। इसके लिए प्रायश्चित करना पड़ता हैं। इसके लिए ग्यारह तोले की सोने की बिल्ली, दस मन गेहूँ, एक मन चावल, एक मन दाल, मन-भर-तील, पाँच मन जौ और पाँच मन चना, चार पंसेरी घी, मन-भर नमक, इक्कीस दिन पूजा पाठ, इक्कीस रूपए, पाँच ब्राह्मणों का भोजन प्रायश्चित के रूप में करना पड़ता हैं। रामू की बहू पर बिल्ली की हत्या करने का पाप दूर करने के लिए ये सब करने के लिए तैयार हो जाते हैं। इतने में महरी आकर कहती हैं कि बिल्ली उठकर भाग गई।

इस प्रकार इस कहानी में परम्परागत अंध विश्वासों के प्रति मजाग उड़ाया गया हैं। शास्त्रों को दिखाकर लोगों को जिस प्रकार लूटा जाता हैं उसका सजीव वर्णन इसमें किया गया हैं।

కథా సారాంశము

రాము భార్య వివాహము అయినత తర్వాత రెండు నెలలకు పుట్టింటి నుండి అత్తవారింటికి వచ్చింది. అత్తగారు ఇంటి బాధ్యత అంతా ఆమెకు అప్పజెప్పి, పూజా పఠనంలో మునిగిపోయింది. 14 సం॥ల రాము భార్య వంట ఇల్లు తెరిచి ఉంచడం అక్కడే నిద్రపోవడం వంటిది చేసేది. దీనితో ఆ ఇంట్లో ఉన్న పిల్లికి పాలు, పెరుగు, నెయ్యి ఎక్కడబడితే అక్కడ దొరకడంతో అన్ని తినడం నేర్చుకుంది. చివరికి రాము భార్యకు పిల్లివల్ల తిండి తినడం కూడా దుర్లభం అయిపోయింది. ఒకరోజు రాము భార్య తన భర్తకు బాదం పప్పులు, పిస్తా, మీగడ అన్నీ వేసి పాయసం చేసి, పిల్లికి అందకుండా ఉట్టిమీద పెట్టి అత్తగారికి కిళ్ళీ ఇవ్వడానికి వెళ్ళింది.

ఇంతలో పిల్లి సమయం చూసుకొని ఉట్టి మీదకు ఎగిరి పాయసం గిన్నె క్రిందపడేసి తినివేసింది. దీనితో విసుతెత్తిన రాము భార్య ఇక పిల్లిని ఎలాగైనా చంపాలని నిర్ణయించుకుంది.

ఒకరోజు గుమ్మంతో పాలగ్లాసు పెట్టి దాగి గమనిస్తూ ఉంది. పిల్లి రోజులా వచ్చి పాలు త్రాగడం ఆరంభించింది. అది చూచి రాము భార్య కోపంతో కర్రను దానిపై విసిరింది. ఆ దెబ్బకు పిల్లి పడిపోయింది. పిల్లి చనిపోయిందన్న వార్త ఆ ఇంట్లో ఆ వీధి అంతా వ్యాపించింది. అందరూ అక్కడ గుమికూడి తమకు తోచిన సలహాలు ఇవ్వనారంభించారు. పండిత్ పరమ సుఖ్‌రామ్ గారిని పిలిపించారు. ఆయన పంచాంగం తిరగేసి తెల్లవారు జాముున పిల్లి చనిపోయింది. కాబట్టి కుంభీపాక నరకానికి పోతారు. కాబట్టి ప్రాయశ్చిత్తం చేయాలని సలహా ఇస్తాడు. చివరికి ఎన్నో సర్దుబాట్లు జరిగిన తర్వాత 11 తులాల బంగారు పిల్లి 10 మణుగుల గోధుమలు, ఒక మణుగు బియ్యం, ఒక మణుగు పప్పు, ఒక మణుగు నువ్వులు, ఐదు మణుగుల జొన్నలు, ఐదు మణుగుల శెనగలు, నాలుగు సేర్ల నెయ్యి, ఒక మణుగు పప్పు, 21 దినాల పూజా, 21 రూ॥ ఐదుగురు బ్రాహ్మణులకు భోజనం, ప్రాయశ్చిత్తంగా చేయాల్సి వస్తుంది. విధి లేక రాము తల్లి తన కోడలి పాపానికి ప్రాయశ్చిత్తంగా ఇవి అన్నీ చేయడానికి సిద్ధపడుతుంది. ఇంతలో పనమ్మాయి వచ్చి పిల్లిలేచి పారిపోయిందని చెపుతుంది.

ఈ విధంగా మూఢనమ్మకాలు మనిషిలో ఎంత భయాన్ని కలిగిస్తాయో వ్యంగ్యధోరణిలో వివరించబడినది.

विशेषताएँ

1) लेखक बुद्धिवादी होने के कारण उन्होंने धार्मिक रूढियों, अंधविश्वासों और छिछली भावुकत का डटकर विरोध किया हैं।

2) वर्मा जी की धारणा हैं कि जीवन में भावना का भी महत्व हैं, लेकिन मानव को, विवेकशील होने के नाते बुद्धि के द्वारा योग्य-अयोग्य की जाँच करनी चाहिए।

3) प्रस्तुत कहानी के माध्यम से लेखक कबरी बिल्ली को मारने से लगे पाप को दूर करने के बहाने पर ब्राह्मण के अत्यंत लालच पर व्यंग्यपूर्ण से मानसिक भावनाओं को उजागर करने का प्रयत्न किया हैं।

पात्र तथा चरित्र-चित्रण

1. पंडित परमसुख

पंडित परमसुख 'प्रायश्चित' कहानी का प्रमुख पात्र हैं। यह कहानी भगवती चरण वर्मा के द्वारा लिखी गयी व्यंग कहानी हैं। सामाजिक रूढ़ियों और अंध विश्वासों के प्रति मजाक किया गया हैं। पंडित परमसुख जाने माने पंडित थे। पन्ने देखकर लोगों का भविष्य बता देता हैं। रामू की बहू से बिल्ली की हत्या होने की बात सुनकर उसका लाभ उठाने को सोचता हैं। बिल्ली की हत्या

करने से जो पाप होने का भय लोगों में हैं उसका फायदा उठाना चाहता हैं। उसके प्रायश्चित के लिए ग्यारह तोले की सोने की बिल्ली और बहुत सारे सामान और पूजा पाठ, पैसे, भोजन का प्रबन्ध कराने का कहता हैं। इससे बहुत कुछ लाभ उठाने को सोचता हैं। जहाँ तक हो सके सब कुछ लोगों से खींचने की भावना इसमें स्पष्ट होती हैं। ऐसे लोग अपने स्वार्थ के लिए लोंगो में इतना भय उत्पन्न कर देते हैं कि वे लोग जो भी माँगे देने के लिए तैयार होते हैं। 'प्रायश्चित' के नाम किये जाने वाले कर्मकांड और उन जैसे लोगों की लालची तथा स्वार्थी वृत्ति का सजीव चित्र पंडित परमसुख पात्र में हमें स्पष्ट रूप से दिखाई देता हैं।

2. रामू की बहू

'प्रायश्चित' कहानी के दूसरे मुख्य पात्र रामू की बहू हैं। रामू की बहू को छोटे उम्र अतः 14 साल में ही विवाह होता हैं। विवाह के बाद दो महिने हुए मायके से प्रथम बार ससुराल आई थी। सासू माँ पूजा पाठ में लग जाकर अपनी बहू को घर का सारा भार सौंप देती हैं। रामू की बहू कभी भंडार घर खुला रखती हैं और कभी भंडार घर में बैठे बैठे सो जाती हैं। उस घर में एक कबरी बिल्ली थी। रामू की बहू की लापरवाही उसके लिए सौभाग्य बन गई। बिल्ली दूध, घी, दही सबकुछ किसी न किसी तरह उड़ा रही थी। रामू की बहू बिल्ली से तंग आ गई। उसने तय कर लिया कि या तो वह घर में रहेगी या कबरी बिल्ली। एक दिन रामू की बहू रामू के लिए पिस्ता, बादाम, मखाने सब डालकर खीर बनाई। उसको बिल्ली से बचाने ऊँचे ताक पर रखी। फिर भी रामू की बहू की अनुपस्थिती में बिल्ली उस ताक तक छलांग मारी और उसको नीचे गिरा दीया। तब रामू की बहू ने निश्चय किया कि कबरी बिल्ली का अन्त करना ही हैं। एक दिन रामू की बहू देहरी पर कटोरी में दूध रखकर चली गई। बिल्ली वहाँ आ गई और दूध पीने लगी। तब रामू की बहू ने पाटा बिल्ली पर पटक दिया। इससे बिल्ली न हिल डुलकर उलट गई। बिल्ली की हत्या होने की खबर सारे घर में नहीं बल्कि सारे मोहल्ले में फैल गई। रामू की माँ बहू की इस कारवाई पर बड़ी असंतुष्ट होकर बिल्ली की हत्या करने का पाप निकालने के लिए पंडित परमसुख को बुलाती हैं। किन्तु पंडित परमसुख ने 21 तोले सोने की बिल्ली बनाने को कहा तो तब उनसे सौदा करती हुई कम से कम 11 तोले सोने की मूर्ति देने को तैयार होती हैं। इसके अलावा दस मन गेहूँ, ,एक मन चावल, एक मन दाल, मन भर तिल, पाँच मन जौ और पाँच मन चना, चार पंसेरी घी, मन भर नमक, इक्कीस दिन पूजा पाठ, इक्कीस रूपये, पाँच ब्राह्मणों का भोजन प्रायश्चित के रूप में करना पड़ता हैं। रामू की बहू पर बिल्ली की हत्या का पाप दूर करने के लिए यह सब कार्य करने के लिए तैयार हो जाते हैं। इतने में कामवाली महरी आकर कहती हैं कि बिल्ली उठकर भाग गई। अंत में रामू की बहू निर्दोषी ठहरती हैं।

5. चीफ़ की दावत (అధికారికి ఇచ్చిన పార్టీ

- भीष्म साहनी

लेखक का परिचय

भीष्म साहनी का जन्म सन् 1915 में अविभाजित भारत के रावलपिंडी में हुआ। देश के विभाजन के बाद दिल्ली गए। विभाजन की त्रासदी एवं मध्यवर्गीय जीवन का खोखलापन इनकी कहानियों के विषय रहें। दलित शोषित वर्ग के प्रति सहानुभूति इनकी कहानियों में स्पष्ट होती हैं।

प्रस्तुत 'चीफ़ की दावत' मध्यवर्गीय जीवन में आ रहें पीढ़ियों के अंतराल की कहानी हैं। पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति का प्रभाव हमारे देश में किस हद तक हैं उसका सजीव वर्णन उसमें किया गया हैं।

రచయిత పరిచయము

భీష్మ సాహనీ 1915వ సం॥లో భారత్, పాకిస్థాన్ విభజనకు పూర్వము రావల్‌పిండిలో జన్మించారు. విభజన జరిగిన తరువాత ఢిల్లీ వెళ్ళారు. విభజన సమయంలోని కష్టాలు, మధ్యతరగతి జీవితాల గురించి ఈయన కథలలో వివరించబడింది. ప్రస్తుత పాఠములో మధ్యతరగతి జనాలలోని తరాల అంతరాలు, విదేశీ సభ్యత, సంస్కృతల ప్రభావము మన దేశంపైన ఎంత వరకు వుందో వివరించబడినది.

Rahul Publications

कहानी का सारांश

मिस्टर शामनाथ अपने घर में 'चीफ़'को दावत पर बुलाते हैं। अपनी धर्म पत्नी के साथ मिलकर सारी तैयारियाँ करने लगते हैं। चीफ़ अमेरिकन हैं। उसको खुश करने से शामनाथ को नौकरी में पदोन्नती होगी। इसलिए दावत की शाम घर की सभी चीजों को चीफ़ के अनुरूप बनाने की चेष्टा की जाती हैं। ड्रिंक का इंतजाम बैठक में कर दिया गया। घर का फालतू सामान अलमारियों के पीछे और पलंगो के नीचे छिपाया जाने लगा। तब उसको आपनी बूढ़ी माँ की याद आती हैं। अब प्रश्न उठता हैं कि उसको कहाँ छिपाना हैं। उस बुढ़िया लोगों के सामने प्रस्तुत होना शामनाथ के लिए पसंद नहीं हैं। इसलिए माँ को चेतन रहने की चेतावनियाँ देता हैं कि ठीक से कुर्सी पर बैठकर रहना हैं, पार्टी खतम होने तक नहीं सोना हैं। माँ सब के लिए राजी होकर उसके कहे अनुसार अच्छी साड़ी पहनकर अपने घर में बैठ जाती हैं।

चीफ़ अपनी पत्नी के साथ दावत पर आते हैं। सभी अतिथि लोग आते हैं। दावत शुरू हो जाती हैं। ड्रिंक होने के बाद बरामदे में आते हैं वहाँ उसकी माँ कुर्सी पर पैर रखकर सो रही हैं। यह दृश्य देखकर शामनाथ क्रुद्ध हो उठे। पर चीफ़ और उसकी पत्नी उस पर बड़ी सहानुभूति दिखाते हैं। चीफ़ माँ को वहाँ से जाने नहीं देते तथा पंजाबी लोक गीत सुनाने का आग्रह करते हैं। माँ शामनाथ की सोच के विरूद्ध अच्छी तरह गाती चीफ़ एवं मेहमानों ने प्रश्न किये। माँ के हाथों में बनी 'फुलकारी' चीफ़ को बहुत पसंद आती हैं। चीफ़ उसके हाथों से बनी 'फुलकारी' के लिए वापस आने का वादा करता हैं। इस प्रकार उसकी बूढ़ी माँ अचानक ही मूल्यवान सिद्ध हो उठती हैं। जो बेकार थी वहीं तरक्की का जरिया बन जाती हैं। उससे फुलकारी बनाने की ताकत नहीं होने पर भी अपने बेटे की तरक्की के लिए खुद बनाना चाहती हैं।

इस प्रकार आजकल माँ-बेटे के सम्बन्ध में प्रेम, आदर, भावनाएँ लुप्त हो रही हैं। शामनाथ अपनी नौकरी के लिए माँ को खतरा मानता हैं। लेकिन उसी के द्वारा उसकी इच्छा पूर्ण हो जाती हैं। माँ के पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव, माँ की ममता का सजीव चित्रण उसमें किया गया हैं।

కథా సారాంశము

శామ్‌నాథ్ ఆఫీసులో మేనేజర్‌ను (ఛీఫ్)ను తన ఇంట్లో పార్టీకి ఆహ్వానిస్తాడు. తన భార్యతో కలిసి దానికి తగిన ఏర్పాట్లన్నీ చేసుకుంటాడు. ఆ ఛీఫ్ అమెరికన్, అతనిని సంతోషపరచి ప్రమోషన్ కొట్టయ్యాలని శామ్‌నాథ్ ఉద్దేశ్యము, అమెరికన్ ఛీఫ్‌కి తగినట్లుగా ఆ సాయంత్రం తన ఇంట్లో ఏర్పాట్లుచేసుకుంటాడు. ఆరుబటల డ్రింక్స్ ఏర్పాటు కూడా జరుగుతుంది. పనికిరాని సామానంతా అమరాలలో మంచం కింద దాచేస్తాడు. అప్పుడు తన ముసలి తల్లి ఆయనకు గుర్తుకు వస్తుంది. ఈమెను అతిథుల కంటపడకుండా ఎలా దాచాలా అని శామ్‌నాథ్, భార్య ఆలోచిస్తారు. అందరికి ముందు ఆమె కన్పించటం నిద్రపోతే గురక వినపిస్తుందని, శామ్‌నాథ్‌కి ఇష్టం వుండదు. అందుకని తల్లిని గదిలో వుండమని, నిద్రపోకుండా కుర్చీలో కాళ్ళు క్రిందకు పెట్టి కూర్చొని వుండమని సలహా ఇస్తాడు. తల్లి కొడకు చెప్పిన వాటన్నింటికి ఒప్పుకొని మంచి చీర కట్టుకొని తన గదిలో కూర్చుంటుంది.

ఛీఫ్, అతని బార్య అతిథులందరూ పార్టీకి వస్తారు. ఆరంభమవుతుంది. డ్రింక్స్ అన్నీ ముగిసిన తరువాత వరండాలోకి రాగానే కుర్చీలో కాళ్ళు పైకి పెట్టుకొని కునికిపాట్లుపడుతున్న తల్లి కనిపిస్తుంది. అది చూసి శామ్‌నాథ్‌కు ఎంతో కోపం వస్తుంది. కానీ ఛీఫ్, అతని భార్య ఆమెపట్ల ఎంతో సానుభూతి చూపిస్తారు. ఆమె గ్రామీణ ప్రాంతానికి చెందినది తెలిసి ఒక పంజాబీ, పల్లెగీతం పాడమని అడుగుతారు. శామ్‌నాథ్ తల్లి మంచిపాట పాడి అందరినీ సంతోషపెడుతుంది. ఆమె తయారుచేసిన "ఫుల్‌కారీ" (శాలువా) చీఫ్‌కు ఎంతోనచ్చుతుంది. ఆమె స్వయంగా చేసి ఇవ్వాలని, దాని కోసం మరలా వస్తానని చెప్పి ఛీఫ్ వెళ్ళిపోతాడు. అప్పటివరకు

పనికిరాదనుకున్న తల్లి గొప్పతనము శామ్‌నాథ్‌కు తెలుస్తుంది. ఆ పుల్‌కారీ తయారుచేసే శక్తిలేనప్పటికీ, కొడుక్కి ఉద్యోగంలో ప్రమోషన్‌ను వస్తుందని ఎలాగో దానిని అల్లటానికి సిద్ధపడుతుంది.

ఈ విధంగా ఆధునికి కాలంలో తల్లీ కోడుకుల మధ్య సంబంధ బాంధవ్యాల గురించి వివరించబడినది. శామ్‌నాథ్ తన ఉద్యోగ ఉన్నతికి తల్లిని సమస్యగా భావిస్తాడు. కానీ ఆమె వలననే అతని కోరిక తీరుతుంది.

विशेषताएँ

1) यशपाल जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उनकी अधिकांश कहानियाँ व्यक्ति संघर्ष को लेकर लिखी गई हैं। उनकी कहानियों में चरित्रों का विकास आर्थिक संघर्ष और वर्ग चेतना के धरातल पर हुआ हैं।

2) यशपाल की भाषा सरल हैं किंतु उसमें व्यंग्य प्रहार करने की क्षमता अद्भुत हैं। भारत सरकार ने उन्हें साहित्य अकादमी और पद्मभूषण पुरस्कारों से सम्मानित किया।

3) यशपाल का विश्वास था कि पूँजीवाद ही समाज में फैली अनेक बुराईयों की जड़ हैं।

पात्र तथा चरित्र-चित्रण

शामनाथा

मिस्टर शामनाथ 'चीफ़ की दावत' कहानी का प्रमुख पात्र हैं। इसके लेखक भीष्म साहनी जी हैं। शामनाथ एक दफ्तर में काम करता हैं। नौकरी में पदोन्नती के लिए अपने चीफ़ को दावत में बुलाता हैं। चीफ़ अमेरिकन हैं। उसे खुश करने के लिए सारी तैयारियाँ करता हैं। अपनी बूढ़ी माँ इसमें एक समस्या हो जाती हैं। चीफ़ और सारी मेहमान के आगे माँ को दिखाना उसे पसंद नहीं हैं। माँ को सबसे अलग बन्द कमरे में बैठने को कहता हैं। लेकिन वही माँ उसकी तरक्की का कारण बनती हैं। चीफ़ उस माँ के प्रति सहानुभूति व्यक्त करता हैं। उसके द्वारा पंजाबी लोकगीत सुनकर प्रशंसा करता हैं। और उसके हाथों से बनी पुलकारी मांगता हैं। इस पर शामनाथ भी अपनी माँ के प्रति बहुत खुश होता हैं। उसमें फुलकारी बनाने की शक्ति न होने पर भी बेटे की तरक्की के लिए उसे बनाने के लिए तैयार होती हैं।

शामनाथ अपनी नौकरी में पदोन्नती तथा धन की लालसा दिखाकर माँ को जिस प्रकार निरूपयोगी वस्तु माना हैं। उसका चित्रण किया गया हैं। अंत मे माता का पुत्र के प्रति प्रेम हमारे हृदय को द्रवित कर देता हैं।

1. (A) लिंग (Gender)

संज्ञा के जिस रूप से व्यक्ति अथवा वस्तु की जाति का बोध होता हैं, उसे व्याकरण में लिंग कहते हैं।

लिंग के प्रकार

सजीव वस्तुओं के लिए लिंग निर्णय आसान हैं। हिन्दी में दो लिंग होते हैं।

1) पुलिंग,

2) स्त्रीलिंग

जिस संज्ञा से पुरूषतत्त्व का बोध होता हैं, उसे पुलिंग कहते हैं। जैसे - अध्यापक, राजा, पिता, भाई, मित्र आदि।

जिस संज्ञा से स्त्री या नारी का बोध होता हैं, उसे स्त्रीलिंग कहते हैं। जैसे - अध्यापिका, रानी, माता, बहन, सहेली आदि।

वस्तुओं या अप्राणि वाचक शब्दों का लिंग भेद कठिन हैं। यह केवल प्रयोग के द्वारा ही जाना जा सकता हैं। कभी-कभी क्रिया या विशेषण के साथ शब्द प्रयोग करने से लिंग का निर्णय होता हैं। संज्ञा शब्दों के लिंग-भेद का प्राप्त करना हिन्दी भाषा के लिए अत्यन्त आवश्यक हैं।

रेखांकित शब्दों को लिंए बदलकर वाक्यों को फिर से लिखिए।

हिन्दी में लिंग दोन प्रकार के होते हैं।

1) पुलिंग

2) स्त्रीलिंग। हिन्दी में नपुंसक लिंग नहीं हैं। हिन्दी के अप्राणि वाचको का लिंग पहचानना अभ्यास का विषय हैं। उदाहरण -

1. <u>माली</u> बाग में काम करता हैं।

   <u>मालिन</u> बाग में काम करती हैं।

2. <u>नौकर</u> स्वामी की आज्ञा मानता हैं।

   <u>नौकर</u> स्वामिनी की आज्ञा मानता हैं।

3. <u>जुलाहा</u> कपडे बुनता हैं।

   <u>जुलाहिन</u> कपडे बुनती हैं।

Rahul Publications

4. आज मैं ने एक <u>हाथी</u> को देखा।
   आज मैं ने एक <u>हाथिनी</u> को देखा।
5. मेरा <u>भाई</u> शहर से आया हैं।
   मेरी <u>बहन</u> शहर से आई हैं।
6. रामु का <u>पुत्र</u> चतुर हैं।
   रामु की <u>पुत्री</u> चतुरा हैं।
7. वह <u>नर</u> सुंदर हैं।
   वह <u>नारी</u> सुंदर हैं।
8. वह <u>आदमी</u> मोटा हैं।
   वह <u>औरत</u> मोटी हैं।
9. कहिये <u>श्रीमान</u> आप क्या चाहते हैं।
   कहिये <u>श्रीमती</u> आप क्या चाहती हैं।
10. <u>ऊँट</u> रेगिस्तान में तेज चलता हैं।
    <u>ऊँटनी</u> रेगिस्तान में तेज चलती हैं।
11. <u>लड़का</u> पुस्तक पढ़ता हैं।
    <u>लड़की</u> पुस्तक पढ़ती हैं।
12. <u>बैल</u> घास खाता हैं।
    <u>गाय</u> घास खाती हैं।
13. <u>बूढ़ा</u> चल नहीं सकता।
    <u>बूढ़ी</u> चल नहीं सकती।
14. <u>बन्दर</u> रोटी खाता हैं।
    <u>बन्दरिया</u> रोटी खाती हैं।
15. <u>लेखक</u> नाटक, उपन्यास आदि लिखता हैं।
    <u>लेखिका</u> नाटक, उपन्यास आदि लिखती हैं।

Rahul Publications

16. <u>नौकर</u> बाज़ार से सामान लाता हैं।

<u>नौकरानी</u> बाज़ार से सामान लाती हैं।

17. <u>ठाकुर</u> ने उपन्यास लिखे।

<u>ठाकुराईन</u> ने उपन्यास लिखे।

18. आज इस शहर को एक <u>मन्त्री</u> आया।

आज इस शहर को एक <u>मन्त्रिणी</u> आयी।

19. वे लॉयन्स क्लब के <u>सदस्य</u> हैं।

वे लॉयन्स क्लब की <u>सदस्या</u> हैं।

20. मेरा <u>घरवाला</u> अच्छा हैं।

मेरी <u>घरवाली</u> अच्छी हैं।

21. <u>घोड़ा</u> तेज़ दोड़ा।

<u>घोड़ी</u> तेज़ दौड़ी।

22. <u>बकरा</u> काला होता हैं।

<u>बकरी</u> काली होती हैं।

23. <u>बिल्ला</u> अंधेरे में देख सकता हैं।

<u>बिल्ली</u> अंधेरे में देख सकती हैं।

24. <u>कुत्ता</u> बहुत तेज़ दौड़ता हैं।

<u>कुत्ती</u> बहुत तेज़ दौड़ती हैं।

25. <u>पति</u> की सेवा करना पत्नी का धर्म हैं।

<u>पत्नी</u> की सेवा करना पति का धर्म हैं।

26. मेरे दो <u>भाई</u> हैं।

मेरी दो <u>बहनें</u> हैं।

27. <u>वर</u> बहुत सुन्दर हैं।

<u>वधू</u> बहुत सुन्दर हैं।

Rahul Publications

28. उसकी प्रिया बहुत सुन्दर लगती हैं।

उसका प्रिय बहुत सुन्दर लगता हैं।

29. अभिनेता अभिनय करता हैं।

अभिनेत्री अभिनय करती हैं।

30. वह एक बडा गायक हैं।

वह एक बडी गायिका हैं।

31. पाठशाला में दो सौ विद्यार्थी हैं।

पाठशाला में दो सौ विद्यार्थिनियाँ हैं।

32. जंगल में एक बडा शेर हैं।

जंगल में एक बडी शेरनी हैं।

33. कवि ने एक काव्य लिखा।

कवयित्री ने एक काव्य लिखा।

34. छात्रावास में एक सौ छात्र हैं।

छात्रावास में एक सौ छात्रायें हैं।

35. मालिक बाहर जा रहा है।

मालकिन बाहर जा रही हैं।

36. उस घर में एक चोर घुसा।

उस घर में एक चोरनी घुसी।

37. काला बैल दौड़ रहा हैं।

काली गाय दौड़ रही हैं।

38. उस अध्यापक के बहुत से शिष्य हैं।

उस अध्यापक के बहुत सी शिष्यायें हैं।

39. वे एक बडे पंडित हैं।

वे एक बडी पंडिताईन हैं।

Rahul Publications

40. अमीरों के घर में बहुत से दास होते हैं।

अमीरों के घर में बहुत सी दासियाँ होती हैं।

41. देव की कृपा से मैं परीक्षा में उत्तीर्ण हुई।

देवी की कृपा से मैं परीक्षा में उत्तीर्ण हुई।

42. भेड की तरह सिर झुकाकर चलना अच्छी बात नहीं हैं।

मादा की तरह सिर झुकाकर चलना अच्छी बात नहीं हैं।

43. नाग को देखकर मैं डर गयी।

नागिन को देखकर मैं डर गयी।

44. चमार से बनाए हुए चप्पल अच्छे हैं।

चमारिन से बनाए हुए चप्पल अच्छे हैं।

45. सियार बहुत चालाक होते हैं।

सियारिन बहुत चालाक होती हैं।

46. साहब को समाज में बहुत गौरव मिलता हैं।

साहिबा को समाज में बहुत गौरव मिलता हैं।

47. दादा को देखने के लिए बच्चे गाँव गये।

दादी को देखने के लिए बच्चे गाँव गये।

48. मेरा ससुर अच्छा हैं।

मेरी सास अच्छी हैं।

49. विद्वान हमेशा आदर का पात्र होता है।

विदुषी हमेशा आदर का पात्र होती है।

50. राजा के लिए प्रजा का हित अत्यंत आवश्यक हैं।

रानी के लिए प्रजा का हित अत्यंत आवश्यक हैं।

Rahul Publications

पुंल्लिंग शब्दों की पहचान

1)	देशों के नाम	:	भारत, जापान, रूस, फ्रांस, इराक आदि।
2)	पर्वतों के नाम	:	हिमालय, विन्ध्याचल, हिन्दूकुश, सतपुडा, अरावली आदि।
3)	पेड़ो के नाम	:	बरगद, पीपल, आम, जामुन, नीम, अशोक, सागवान आदि।
4)	समुद्रों के नाम	:	प्रशांत महासागर, अरब सागर, लाल सागर, काला सागर, हिन्द महासागर आदि।
5)	अनाजों के नाम	:	उड़द, चना, गेहूँ, चावल, बाजरा, तिल, मटर आदि। (अपवाद - सरसों, ज्वार, मक्का, अरहर, मूँग स्त्रीलिंग हैं।)
6)	धातुओं के नाम	:	सोना, लोहा, ताँबा, पीतल, स्टील आदि। (अपवाद - चाँदी स्त्रीलिंग हैं।)
7)	ग्रहों के नाम	:	बुध, बृहस्पति, सूर्य, चन्द्र, मंगल, शनि, राहु, केतु आदि। (अपवाद - पृथ्वी स्त्रीलिंग हैं।)
8)	मासों के नाम	:	मार्च, जून, अगस्त, अक्टूबर, चैत, बैसाख, ज्येष्ठ आदि। (अपवाद - जनवरी, फरवरी, मई, जुलाई स्त्रीलिंग हैं।)
9)	वारों के नाम	:	सोमवार, मंगलवार, बुधवार, गुरूवार, शुक्रवार आदि।
10)	रत्नो के नाम	:	नीलम, हीरा, पन्ना, पुखराज, मूंगा, मोती आदि।
11)	द्रवों के नाम	:	दूध, घी, तेल, पानी, पेट्रोल आदि। (उपवाद - चाय, कॉफी, लस्सी आदि स्त्रीलिंग हैं।)
12)	शरीर के कुछ अंग	:	हाथ, सिर, पैर, मस्तिष्क, अंगूठा, घुटना, हृदय, दाँत, बाल, नाखून, कंधा आदि। (अपवाद - आँख स्त्रीलिंग हैं।)

Rahul Publications

स्त्रीलिंग की पहचान

- संस्कृत के आकारान्त शब्द स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे - दया, कृपा, अहिंसा, परीक्षा, माया, सभा, प्रतिज्ञा, आत्मा, क्रीडा, ध्वजा, घृणा, क्रिया आदि।
- उकारान्त तत्सम संज्ञायें प्रायः स्त्रीलिंग होती हैं। जैसे - मृत्यु, वस्तु, आयु, वायु, धातु आदि।

- इकारान्त तत्सम संज्ञायें प्रायः स्त्रीलिंग होती हैं। जैसे - रोटी, नयी, चीनी, अग्नि, सन्धि, रीति, हानि, ज्योति, समिति, शक्ति, शान्ति, चाँदी, बिमारी आदि।
- जिन शब्दों के अन्त में आवट, आहट, इया, ता, आई, नी, इमा, आस, ई, त, री, और अरबी-फारसी के वे शब्द, जिनके अन्त में त, श, आ, ह होता हैं, स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे - ह - आह, राह, सुबह, सलाह, जगह, निगाह आदि।

आवट : सजावट, बुनावट, थकावट, बनावट, मिलावट आदि।

आहट : घबराहट, कडवाहट, चिकनाहट, गरमाहट, चिल्लाहट आदि।

इया : बुढ़िया, गुडिया, चुहिया, लुटिया, डिबिया, लठिया, कुटिया आदि।

आई : चटाई, बुढाई, पढ़ाई, लिखाई, भलाई, बुराई, पिटाई आदि।

नी : ढकनी, करनी, भरनी, जननी, छलनी आदि।

इमा : महिमा, गरिमा, प्रतिमा, लालिमा, नीलिमा आदि।

आस : प्यास, भड़ास आदि।

ई : मज़दूरी, गाली, गरीबी, गर्मी, सर्दी, झिड़की, खिड़की आदि।

त : रंगत, संगत, ताकत, हरकत, चाहत, इज्जत, अदालत, रिश्वत, नफ़रत, दौलत, हिमाकत आदि।

श : मालिश, कोशिश, तलाश, साजिश, सिफारिश आदि।

आ : दवा, हवा, सजा, दुआ, (मजा, दगा, इशारा, इस्तीफा, जमाना, नशा, चेहरा, पुलिंग हैं।)

री : बकरी, परी, कबूतरी आदि।

Rahul Publications

लिंग बदलना

पुलिंग	:	स्त्रीलिंग	पुलिंग	:	स्त्रीलिंग
पंडित	:	पंडिताईन	राजा	:	रानी
घरवाला	:	घरवाली	गधा	:	गधी
बिल्ला	:	बिल्ली	कुत्ता	:	कुत्ती
बूढ़ा	:	बूढ़ी	साला	:	साली
कवि	:	कवइत्री	दादा	:	दादी
हाथी	:	हथिनी	दास	:	दासी
नाना	:	नानी	बेटा	:	बेटी
मामा	:	मामी	कबूतर	:	कबूतरी
हरिण	:	हरिणी	सुनार	:	सुनारिन
कुंम्हार	:	कुम्हारिन	तेली	:	तेलिन
लुहार	:	लुहारिन	जोगी	:	जोगिन
सदस्य	:	सदस्या	नौकर	:	नौकरानी
पुत्र	:	पुत्री	देव	:	देवी
ऊँट	:	ऊँटनी	शेर	:	शेरनी
लड़का	:	लड़की	ठाकुर	:	ठकुराईन
बैल	:	गाय	बालक	:	बालिका
घोड़ा	:	घोड़ी	सेठ	:	सेठानी
मोर	:	मोरनी	नाग	:	नागिन
मंत्री	:	मंत्रिणी	बकरा	:	बकरी
विद्वान	:	विदुषी	ससुर	:	सास
दास	:	दासी	चमार	:	चमारिन
जुलाहा	:	जुलाहिन	मालिक	:	मालकिन
साहब	:	साहिबा	सियार	:	सियारिन, सियारी
प्रिय	:	प्रिया	श्रीमान	:	श्रीमती
धोबी	:	धोबिन	पति	:	पत्नी
भाई	:	बहन	वर	:	वधू
स्वामी	:	स्वामिन	घोडा	:	घोडी
रीछ	:	रीछनी			

Rahul Publications

(B) वचन (Number)

वचन

1. हिन्दी में दो वचन हैं - एकवचन और बहुवचन।

प्रायः संज्ञा के एकवचन से एक वस्तु का और बहुवचन से एक से अधिक वस्तुओं का बोध होता हैं।

2. 'आ' कारान्त ठेठ हिन्दी पुलिंग शब्द बहुवचन में 'रा' करान्त होते हैं।

जैसे - एकवचन - बहुवचन

लड़का - लड़के

घोड़ा - घोड़े

3. अन्य सब पुलिंग शब्द एकवचन और बहुवचन में एक से रहते हैं।

जैसे - बेंच - बेंच

पति - पति

4. 'अ' कारान्त, 'आ' कारान्त, 'उ' कारान्त, 'ऊ' कारान्त, 'औ' कारान्त, स्त्रीलिंग, संज्ञाओं के बहुवचन उनके एकवचन रूप के अंत में 'ए' जोड़ने से होता हैं।

जैसे - रात - रातें

माला - मालाएँ

नदी - नदीयाँ

कथा - कथाएँ

वधू - वधूएँ

1. यहाँ <u>एक</u> नेता हैं।
   यहाँ <u>कई</u> नेता हैं।

2. <u>लड़की</u> गीत गा रही है।
   <u>लड़कियाँ</u> गीत गा रही हैं।

3. राजा कि एक <u>रानी</u> थी।
   राजा कि कई <u>रानियाँ</u> थीं।

4. मेज़ पर <u>सेब रखा</u> हैं।
   मेज़ पर <u>सेब रखें</u> हैं।

Rahul Publications

5. वह एक बड़ी इमारत हैं।
वे बड़ी इमारते हैं।

6. बाज़ार में औरत जा रही हैं।
बाजार में औरतें जा रहीं हैं।

7. सभा में विद्वान बोल रहा हैं।
सभा में विद्वान लोग बोल रहें हैं।

8. माँ बच्चे के लिए गुडिया खरीदती हैं।
माँ बच्चों के लिए गुडियाँ खरीदती हैं।

9. लड़के ने रोटी खरीदी।
लड़के ने रोटियाँ खरीदीं।

10. विद्यार्थी ने एक पुस्तक खरीद ली।
विद्यार्थी ने पुस्तकें खरीद लीं।

11. लड़का मैदान में खेलता हैं।
लड़के मैदान में खेलतें हैं।

12. घर में एक कमरा हैं।
घर में कई कमरें हैं।

13. आदमी वस्तु खरीदता हैं।
आदमी वस्तुएँ खरीदते हैं।

14. राजा बड़ा घमंडी होता हैं।
राजा लोग बड़े घमंडी होते हैं।

15. वहाँ एक राशि हैं।
वहाँ कई राशियाँ हैं।

वचन बदलना

एकवचन	-	बहुवचन	एकवचन	-	बहुवचन
पुस्तक	-	पुस्तकें	खटिया	-	खटियाँ
आँख	-	आँखें	रोटी	-	रोटियाँ
विद्वान	-	विद्वज्जन	वधू	-	वधूएँ
ताला	-	ताले	जूता	-	जूतें
परदा	-	परदे	कीड़ा	-	कीड़े
दरवाजा	-	दजवाजे	चूहा	-	चूहें
शीशा	-	शीशें	पंखा	-	पंखे
चश्मा	-	चश्में	तोता	-	तोतें
बेटा	-	बेटें	चमचा	-	चमचें
सेना	-	सेनाएँ	गेंद	-	गेंदें

Rahul Publications

पाठक	-	पाठकवर्ग	मुनि	-	मुनिगण
बात	-	बातें	राजा	-	राजा लोग
कुर्ता	-	कुर्ते	खिडकी	-	खिडकियाँ
कलम	-	कलमें	मेजपर	-	मेजोंपर
राशि	-	राशियाँ	विद्यार्थी	-	विद्यार्थीवृन्द
विधि	-	विधियाँ	रीति	-	रीतियाँ
कपडा	-	कपडें	घोड़ा	-	घोड़े
बिटिया	-	बिटियाँ	धेनु	-	धेनुएँ
छात्रा	-	छात्राएँ	कविता	-	कविताएँ
कला	-	कलाएँ	घडी	-	घडियाँ
थाली	-	थालियाँ	सीटी	-	सीटियाँ
माता	-	मातायें	वस्तु	-	वस्तुएँ
इमारत	-	इमारतें	डिबिया	-	डिबियाँ
बहन	-	बहनें	लू	-	लूएँ
भैंस	-	भैंसे	चिडिया	-	चिडियाँ
औरत	-	औरतें	गुडिया	-	गुडियाँ
घर	-	घर	बुढ़िया	-	बुढ़ियाँ
लड़का	-	लड़के	कुटिया	-	कुटियाँ
लता	-	लतायें	भाई	-	भाई
माला	-	मालायें	डाकू	-	डाकू
मामा	-	मामा	कमरा	-	कमरें
लेखक	-	लेखकवृंद			

Rahul Publications

(C) काल (Tense)

परिभाषा

क्रिया के जिस रूप से समय का बोध होता हो, उसे 'काल' कहते हैं। काल के तीन प्रकार हैं। वे हैं-

काल
- वर्तमानकाल
- भूतकाल
- भविष्यत्काल

(1) वर्तमानकाल

परिभाषा :- वर्तमानकाल : क्रिया के जिस रूप से वर्तमान समय (इस समय) में होनेवाले कार्य का बोध होता हैं, उसे वर्तमान काल कहते हैं।

जैसे :सिता गाती हैं।

वर्तमानकाल के मुख्य तीन भेद हैं। वे हैं -

1) सामान्य वर्तमानकाल

2) अपूर्ण वर्तमानकाल

3) संदिग्ध वर्तमानकाल।

1) **सामान्य वर्तमान कालः-** वाक्य के अन्तर्गत क्रिया के जिस रूप को सामान्य रूप में पाया जाए, उसे सामान्य वर्तमानकाल कहते हैं।

जैसे : 1. वह जाता हैं।

2. वह नहाता हैं।

3. वह देखता हैं।

2) **अपूर्ण वर्तमानकाल :-** वाक्य के अन्तर्गत क्रिया के जिस रूप से पता चलता हैं कि वह वर्तमानकाल में जारी हैं, उसे अपूर्ण वर्तमान काल कहते हैं।

जैसे : 1. मैं खा रहा हूँ।

2. वह सो रहा हैं।

3. तुम जा रहें हो।

Rahul Publications

3) **संदिग्ध वर्तमानकाल :-** वाक्य के अन्तर्गत क्रिया के जिस रूप से उसके वर्तमानकाल में होने का संदेह होता हैं, उसे संदिग्ध वर्तमानकाल कहते हैं।

जैसे : 1. रानी गाती होगी।

2. वह खाता होगा।

3. मोहन पढ़ता होगा।

(2) भूतकाल

परिभाषाः- भूतकाल क्रिया अथवा व्यापार के समाप्त अथवा बीते हुए समय के बारे में बातात हैं। जैसे - सुरेश खेल रहा था। भूतकाल के मुख्य छः भेद हैं। वे हैं - 1) सामान्य भुतकाल, 2) आसन्न भूतकाल, 3) पूर्ण भूतकाल, 4) अपूर्ण भूतकाल, 5) संदिग्ध भूतका, 6) हेतु-हेतुमद भूतकाल।

1) **सामान्य भूतकाल :-** जिन वाक्यों के अंतर्गत क्रिया के जिस रूप से उसके भूतकाल में होने का तो पता चलता हैं, लेकिन किसी विशेष समय का ज्ञान नहीं हो सकता हो, उसे सामान्य भूतकाल कहते हैं।

जैसे - 1. सुरेश आया

2. राम ने रावण पर बाण चलाया

3. राधा ने गाना सुनाया।

2) **आसन्न भूतकाल :-** जिन वाक्यों के अन्तर्गत क्रिया के जिस रूप से उसके भूतकाल के निकट समय में संपन्न होने का पता चलता हैं, उसे आसन्न भूतकाल कहते हैं।

जैसे - 1. पिताजी दूध लाए हैं।

2. मोहन अभी घर आया।

3. मैने रोटी खायी हैं।

3) **पूर्ण भूतकाल :-** वाक्य के अन्तर्गत क्रिया के जिस रूप से उसके भूतकाल में पूर्ण हुए काफी समय गुजर जाने का पता चलता हैं कि वह वर्तमानकाल में पूरी हो गई हैं, उसे पूर्ण भूतकाल कहते हैं।

जैसे - 1. वह एक बार वहाँ आया था।

2. सचिन एक अच्छा खिलाडी था।

3. श्रीमती इंदिरा गांधी हमारे देश की प्रधानमंत्री थीं।

Rahul Publications

4) **अपूर्ण भूतकाल :-** वाक्य के अंतर्गत क्रिया के जिस रूप से उसके भूतकाल में होते रहने का पता हो, लेकिन उसकी पूर्णता का ध्यान न हो, उसे अपूर्ण भूतकाल कहते हैं।

जैसे - 1. राधा सो रही थी।

2. परीक्षाएँ चल रही थीं।

3. मोहन गाना गा रहा था।

5) **संदिग्ध भूतकाल :-** क्रिया के जिस रूप से किसी कार्य के भूतकाल में होने का अनुमान हो, उसे संदिग्ध भूतकाल कहते हैं।

जैसे - 1. तुम चाय पीकर आए होंगे।

2. शायद कमल ने दौड़ में भाग किया होगा

3. तुमने वहाँ जांचकर देखा होगा।

6) **हेतु-हेतुमद् भूतकाल :-** क्रिया के जिस रूप से यह पता चलता है कि कार्य भूतकाल में हो सकता था, लेकिन किसी अन्य कार्य के न हो सकने के कारण न हो सका। उसे हेतु-हेतुमद् भूतकाल कहते हैं।

जैसे - 1. अगर तुम वहाँ होते।

2. यदि तुम मेहनत करते, तो जरूर सफल होते।

3. अगर पिताजी पैसे देते, तो कॉपी खरीद लाता।

Rahul Publications

(3) भविष्यत्काल

परिभाषा :- भविष्यत्काल क्रिया का वह रूप है, जिस से यह प्रकट होता है कि कार्य आने वाले समय में होगा या किया जाएगा। जैसे - कल सूरज निकलेगा।

भविष्यत्काल के मुख्य दो भेद हैं। वे हैं -

1) सामान्य भविष्यत्काल

2) संभाव्य भविष्यत्काल

1) **सामान्य भविष्यत्काल :-** वाक्य के अंतर्गत इससे यह प्रकट होता हैं कि क्रिया सामान्यतः भविष्य में होगी।

जैसे - 1. वह गाना गाएगा

2. राकेश भोजन करेगा

3. मोहन किताब पढ़ेगा।

2) **संभाव्य भविष्यत्काल :-** वाक्य में क्रिया के जिस रूप में किसी कार्य के भविष्य में होने की उम्मीद हो, उसे संभाव्य भविष्यत्काल कहते हैं।

जैसे - 1. आशा है, वह कल आयेगा।

2. शायद कल वर्षा होगी।

3. कदाचित् कल वह हवाई जहाज से जाएगा।

	वाक्य	**काल**
1.	लक्ष्मी गाती है।	वर्तमानकाल
	लक्ष्मी ने गीत गाया।	भूतकाल
	लक्ष्मी गीत गायेगी।	भविष्यत्काल
2.	लडका पाठशाला जाता हैं।	वर्तमानकाल
	लडका पाठशाला गया।	भूतकाल
	लडका पाठशाला जायेगा।	भविष्यत्काल
3.	पुलिस चोर को पकडता हैं।	वर्तमानकाल
	पुलिस ने चोर को पकडा।	भूतकाल
	पुलिस चोर को पकडेगा।	भविष्यत्काल
4.	डाक्टर इलाज करता हैं।	वर्तमानकाल
	डाक्टर ने इलाज किया।	भूतकाल
	डाक्टर इलाज करेगा।	भविष्यत्काल
5.	राम वन जाता हैं।	वर्तमानकाल
	राम वन गया।	भूतकाल
	राम वन जाएगा।	भविष्यत्काल
6.	कवि काव्य लिखता हैं।	वर्तमानकाल
	कवि ने काव्य लिखा।	भूतकाल
	कवि काव्य लिखेगा।	भविष्यत्काल

Rahul Publications

7.	लडका बंदर को मारता हैं।	वर्तमानकाल
	लडके ने बंदर को मारा।	भूतकाल
	लडका बंदर को मारेगा।	भविष्यत्काल
8.	जुलाहा कपडा बुनता हैं।	वर्तमानकाल
	जुलाहे ने कपडे को बुना।	भूतकाल
	जुलाहा कपडा बुनेगा।	भविष्यत्काल
9.	सरला अच्छी तरह गाती हैं।	वर्तमानकाल
	सरला ने अच्छी तरह गाया।	भूतकाल
	सरला अच्छी तरह गायेगी।	भविष्यत्काल
10.	लता अच्छी तरह नाचती हैं।	वर्तमानकाल
	लता अच्छी तरह नाची।	भूतकाल
	लता अच्छी तरह नाचेगी।	भविष्यत्काल
11.	राम कपडा बुनता हैं।	वर्तमानकाल
	राम ने कपडा बुना।	भूतकाल
	राम कपडा बुनेगा।	भविष्यत्काल
12.	लक्ष्मी रोटी बनाती हैं।	वर्तमानकाल
	लक्ष्मी ने रोटी बनायी।	भूतकाल
	लक्ष्मी रोटी बनायेगी।	भविष्यत्काल
13.	रमा मोतियाँ खरीदती हैं।	वर्तमानकाल
	रमा मोतियाँ खरीदीं।	भूतकाल
	रमा मोतियाँ खरीदेगी।	भविष्यत्काल
14.	घोडा घास खाता हैं।	वर्तमानकाल
	घोडे ने घास खाया।	भूतकाल
	घोडा घास खायेगा।	भविष्यत्काल

Rahul Publications

15. महेश फिल्म देखता हैं।	वर्तमानकाल
महेश ने फिल्म देखी।	भूतकाल
महेश फिल्म देखेगा।	भविष्यत्काल
16. हम हिन्दी सिखते हैं।	वर्तमानकाल
हम ने हिन्दी सीखी।	भूतकाल
हम हिन्दी सीखेंगे।	भविष्यत्काल
17. आप अखबार पढते हैं।	वर्तमानकाल
आप ने अखबार पढा।	भूतकाल
आप अखबार पढेंगे।	भविष्यत्काल
18. श्याम नौकर को डाँटता हैं।	वर्तमानकाल
श्याम ने नौकर को डाँटा।	भूतकाल
श्याम नौकर को डाँटेगा।	भविष्यत्काल
19. नौकर मालकिन की बात मानता हैं।	वर्तमानकाल
नौकर ने मालकिन की बात मानी।	भूतकाल
नौकर मालकिन की बात मानेगा।	भविष्यत्काल
20. वह पानी पीता हैं।	वर्तमानकाल
उसने पानी पिया।	भूतकाल
वह पानी पियेगा।	भविष्यत्काल

Rahul Publications

(D) कारक (Case)

संज्ञा या सर्वनाम के जिन रूप से उसका संबंध वाक्य के अन्य शब्दों से जाना जाता है, उसे कारक कहते हैं ।

उदाहरणः श्याम ने रावण को तीर मारा ।

नीचे दिये गये वाक्यों में रेखांकित शब्द कारक चिन्ह कहलाते हैं ।

1. ललिता **ने** रवि को पत्र लिखा ।
2. आप लोगों **से** उसने क्या मांगा ।
3. मुझ**को** उसके बारे **में** कुछ नहीं मालूम ।
4. उन**से** पत्र नहीं मिलने **से** अविनाश बहुत परेशान है ।
5. **अरे!** यह क्या हुआ ?

कारकों का स्वतंत्र प्रयोग नहीं होता । अतः कारक को समझने के लिए विभक्ति के बारे में जानना आवश्यक है ।

जिन चिन्हों द्वारा संज्ञा की अवस्था प्रकट होती है । उसे विभक्ति कहते है । अर्थात वाक्य की क्रिया अथवा दूसरे शब्दों के साथ संज्ञा का संबंध जिन चिन्हों में जाना जाता है उन्हें विभक्ति कहते हैं । 'ने', 'को', 'से', 'केलिए','का','कि','के','रा','री', 'रे','ना','नी','में','पर', आदि सभी चिन्ह विभक्तियाँ कहीं जाती है।

कारक के आठ प्रकार हैं ।

कारक (Case)		विभक्ति (Case Ending)
1.	कर्ता कारक (Nominative Case)	'ने'
2.	कर्म कारक (Objective Case)	'को'
3.	करण कारक (Instrumental Case)	'से'
4.	सम्प्रदान कारक (Dative Case)	'के लिए','को','के'वास्ते
5.	अपादान कारक (Ablative Case)	'से'
6.	सम्बन्ध कारक (Possessive or Genitive Case)	'का','के','की','रा','री',रे
7.	अधिकरण कारक (Locative Case)	'में','पर'
8.	सम्बोधन कारक (Vocative Case)	हे! अरे!

Rahul Publications

1. **कर्ता कारक** - इस कारक का चिन्ह **'ने'** है ।

उदाहरणः-1. रवि **'ने'** दूध पिया ।

2. रवि **'ने'** चिट्ठी लिखी ।

इन वाक्यों में संज्ञा या सर्वनाम का रूप **'ने'** से क्रिया करने वाले का ज्ञान हुआ है । अतः इसे कर्ता कारक कहते हैं । हिन्दी मे **'ने'** प्रत्यय का प्रयोग भूतकाल में ही होता है ।.

2. **कर्म कारक** - इस कारक का चिन्ह **'को'** है ।

उदाहरणः- **1.** इस पुस्तक **'को'** वहाँ रख दो ।

2. राम कुत्ते **'को'** मार रहा है ।

इन वाक्यों में यह स्पष्ट है कि रखी जाने वाली पुस्तक है और मारा जाने वाला कुत्ता है । इस प्रकार इस कारक चिन्ह 'को' से वाक्य के कर्म का पता चलता है । अतः यह कर्म कारक है ।

3. **करण कारक** - इस कारक का चिन्ह **'से'** है । उसके द्वारा साधन का बोध होता है ।

उदाहरणः- **1.** मैं ने पत्थर **'से'** उसे मारा ।

2. मैं कलम **'से'** लिखता हूँ ।

इन वाक्यों में 'पत्थर से' और कलम से 'इनके द्वारा साधन का बोध होता है । अतः संज्ञा व सर्वनाम का वह रूप जिससे क्रिया के साधन का बोध हो उसे करण कारक कहते हैं ।

4. **सम्प्रदान कारक** - इस कारक का चिन्ह **'को'** **'के लिए'** है ।

उदाहरणः- **1.** सोहन मोहन **'के लिए'** मिठाई लाया ।

2. आप श्याम **'को'** दस रूपये दीजिए ।

इन वाक्यों में यदि प्रश्न करें तो मिठाई किसके लिए लाया ? मोहन 'के लिए' उत्तर है । इसी तरह 'दस रूपये किस को' तो उत्तर है श्याम को । इस प्रकार हम देखते है कि क्रिया जिस के लिए की जाती है उसका बोध कराने वाले संज्ञा या सर्वनाम के रूप को सम्प्रदान कारक कहा जाता है ।

5. **अपादान कारक** - संज्ञा या सर्वनाम का वह रूप जिससे क्रिया के विभाग की सीमा का पता चलता है उसे अपादान कारक कहा जाता है ।

उदाहरणः- **1.** नल **'से'** पाणि गिरा ।

2. वह बाजार **'से'** फल लाता है ।

क्रिया से प्रश्न करें कि पाणि कहाँ से गिरा ? उत्तर - नल से । अर्थात इस वाक्य में किसी वस्तु का उसके स्थान से अलग होने का बोध होता है ।

Rahul Publications

6. **सम्बन्ध कारक** - इस के कारक चिन्ह हैं - का, के, की, रा, री, रे आदि ।

उदाहरणः- 1. अपनों **'का'** घर ।

2. शिवहर **'की'** घडी ।

3. **'मेरा'** विश्वविधालय ।

4. सोनाली **'के'** बच्चे ।

5. तुम्हा**रे** पैसे ।

6. मे**री** पुस्तके ।

7. **अधिकरण कारक** - संज्ञा के जिस रूप से क्रिया के स्थान का बोध हो उसे अधिकरण कारक कहते हैं ।

उदाहरणः- 1. समाज **में** लोग रहते हैं ।

2. पेड **पर** मोर बैठा हैं ।

क्रिया के आधार का बोध 'में' और 'पर' से हुआ है । अतः 'में' और 'पर' अधिकरण कारक के चिन्ह हैं ।

8. **सम्बोधन कारक** - सम्बोधन कारक चिन्ह हैं - 'हे'! 'अरे'! 'ओ' आदि

उदाहरणः- 1. हे भगवान ।

2. अरे श्याम ।

3. ओ भैया ।

4. ओह । कितना सुन्दर मैसम है ।

कारक के ये सभी रूप किसी को पुकारने, बुलाने, अपनी व्यथा या पीड़ा सुनाने के लिए प्रकट होते हैं । अतः इन्हें सम्बोधन कारक कहते हैं । अंग्रेजी में कारको को prepositions कहते है और ये शब्द के प्रारंभ में आते हैं । लेकिन हिन्दी में इनका प्रयोग शब्द के बाद में किया जाता है । इसीलिए इनको पर सर्ग (Post Positions) कहते हैं । हिन्दी में कारकों का प्रयोग महत्वपूर्ण है ।

Rahul Publications

अभ्यास के लिए

अ) उपर्युक्त परसर्ग (कारक) का प्रयोग कीजिए और वाक्य की पूर्ति कीजिए ।

1. मेज **पर** पुस्तकें हैं । (में, पर)
2. घर **में** चार कमरे हैं । (पर, में, को)
3. पेड **के** डाल पर आम है । (का, की, के)
4. गुरूजी **को** पाणि दो । (से, को, पर)
5. सडक **पर** कार चलती है । (में, पर, से)
6. मैं ने मीरा **को** कल शाम बुलाया । (ने, को, से)
7. वह भूख **से** बेचैन है । (से, में)
8. मैं **ने** किताब पढ़ी । (मैंने, मुझने)
9. लडका घोडे **पर** बैठा है । (पर, में)
10. ये बच्चे रमा **के** हैं । (के, का, को)
11. दोपहर **का** भोजन तैयार है । (का, के, को)
12. बेला **को** मत मारो । (को, की, के)
13. मेरे घर **में** पाँच कमरे हैं । (में, पर, ऊपर)
14. सुमन ने गुरूजी **से** पूछा । (के, से)
15. **हे भगवान** । मेरी रक्षा करो ।

Rahul Publications

(E) वाच्य (Voice)

परिभाषा

वाच्य का अर्थ क्रिया का रूप हैं। क्रिया के जिस रूपान्तर से यह पता चले कि वाक्य में क्रिया व्यापार का मुख्य विषय कर्त्ता हैं, कर्म हैं, भाव हैं, उसे 'वाच्य' कहते हैं। दूसरे शब्दों में क्रिया के जिस रूप से वह मालूम होता हैं कि, वाक्य में क्रिया का प्रधान सम्बन्ध कर्त्ता, कर्म या भाव के साथ हैं, वह 'वाच्य' कहलाता हैं। प्रयोग का दूसरा नाम 'वाच्य' भी हैं।

वाच्य तीन प्रकार के हैं -

1) कर्त्तृ वाच्य

2) कर्म वाच्य

3) भाव वाच्य।

(1) कर्त्तृ वाच्य

1. क्रिया के जिस रूप से कर्त्ता की प्रधानता का बोध हो, उसे कर्त्तृ वाच्य कहते हैं।
2. कर्त्तृ वाच्य में कर्त्ता की प्रधानता होती हैं।
3. और क्रिया का प्रधान एवं सीधा सम्बन्ध कर्त्ता से होता हैं।
4. इस में 'कर्त्ता' कर्त्ता कारक में रहता हैं।
5. इस में सकर्मक और आकर्मक दोनो प्रकार की क्रियाओं का प्रयोग किया जाता हैं।
6. सकर्मक भूतकालिक क्रियाओं को छोडकर बाकी सभी क्रियाएँ कर्त्ता के लिंग, वचन और पुरूष के अनुसार रहती हैं। जैसे - मैं गीत लिखता हूँ। साहिति ने पुस्तक पढ़ी। हेमा ने भजन गाया। सुरेश ने दान में रूपये दिये। आदि।

(2) कर्म वाच्य

1. क्रिया के जिस रूप से कर्म की प्रधानता का पता चलत हैं, उसे कर्म वाच्य कहते हैं।
2. इसमें कर्म की प्रधानता हैं।
3. क्रिया द्वारा कही गयी बात का मुख्य विषय कर्म होता हैं।
4. अर्थात् क्रिया का सम्बन्ध कर्म से होता हैं।

5. इसलिए क्रिया के लिंग, वचन और पुरूष भी कर्म के अनुसार रहते हैंऔर कर्म विभक्ति रहित कर्त्ता कारक में आता हैं। कर्त्ता करण कारक में रखा जाता हैं या कर्त्ता के साथ 'के द्वारा' शब्द दिया जाता हैं।

6. कर्म वाच्य केवल सकर्मक क्रियाओं में ही होता हैं। द्विकर्मक क्रियाओं के कर्म वाच्य में प्रधान कर्म ही क्रिया का मुख्य विषय बनता हैं, कर्म वाच्य में उदाहरण नीचे दिये गये हैं।

   अभिनव से उपन्यास लिखा जाता हैं।

   साहिति से पुस्तक पढी गयी।

   हेमा से भजन गाया गया।

   सुरेश से याचक को दान दिया गया। आदि।

(3) भाव वाच्य

1. क्रिया के जिस रूप में न कर्त्ता और न कर्म की प्रधानता हो, अपितु जहाँ क्रिया का भाव ही मुख्य हो, वह भाव वाच्य कहलाता हैं।
2. इस में भाव की प्रधानता होती हैं, कर्त्ता या कर्म की नहीं।
3. इस में केवल अकर्मक क्रियाओं का ही प्रयोग होता हैं।
4. इस का प्रयोग बहुधा निषेधार्थक वाक्यों में होता हैं।
5. इस में कर्त्ता के लिंग, वचन और पुरूष का कोई प्रभाव क्रिया पर नहीं पड़ता। क्रिया हमेशा पुलिंग, एकवचन और अन्य पुरूष में रहती हैं। कर्म वाच्य के जैसे कर्त्ता के साथ 'से' जुड़ा रहता हैं। जैसे -

1)	मैं दौड नहीं सकता।	(कर्तृ)
	मुझसे दौड़ा नहीं जाता।	(भाव)
2)	मैं तमिल नहीं पढ़ सकता।	(कर्तृ)
	मुझसे तमिल पढ़ी नहीं जाती।	(भाव)
3)	मैं चल नहीं सकता।	(कर्तृ)
	मुझसे चला नहीं जाता।	(भाव)
4)	वे काम कर सके।	(कर्तृ)
	उन से काम किया गया।	(कर्म)

Rahul Publications

5)	रावण ने सीता का हरण किया।	(कर्त्तृ)
	रावण से सीता का हरण किया गया।	(कर्म)
6)	दक्षिण में चावल खाते हैं।	(कर्त्तृ)
	दक्षिण में चावल खाया जाता हैं।	(कर्म)
7)	हम सिनेमा देखेंगे।	(कर्त्तृ)
	हमसे सिनेमा देखा जाएगा।	(कर्म)
8)	ईश्वर ने यह दुनिया बनाई।	(कर्त्तृ)
	ईश्वर से यह दुनियाँ बनाई गई।	(कर्म)
9)	मैंने किताब पढ़ी।	(कर्त्तृ)
	मुझसे किताब पढ़ी गयी।	(कर्म)
10)	कृष्ण ने पूतना को मारा।	(कर्त्तृ)
	कृष्ण से पूतना मारी गयी।	(कर्म)
11)	राम ने रावण को मारा।	(कर्त्तृ)
	राम के द्वारा रावण मारा गया।	(कर्म)
12)	हम हिन्दी सीखेंगे।	(कर्त्तृ)
	हमारे द्वारा/हम से हिन्दी सीखी जाएगी।	(कर्म)
13)	मैं ने आम खाया।	(कर्त्तृ)
	मुझसे आम खाया गया।	(कर्म)
14)	उन्होंने चार घोडों को देखा।	(कर्त्तृ)
	चार घोडे उनसे देखे गये।	(कर्म)
15)	गोपाल ने एक लडकी को बचाया।	(कर्त्तृ)
	एक लडकी गोपाल के द्वारा बचाई गई।	(कर्म)
16)	तुम कलम से चिट्ठी लिखते हो।	(कर्त्तृ)
	तुम्हारे द्वारा कलम से चिट्ठी लिखी जाती हैं।	(कर्म)

Rahul Publications

17)	गोविंद बांसुरी बजाता हैं।	(कर्त्तृ)
	गोविंद के द्वारा/गोविंद से बांसुरी बजायी जाती हैं।	(कर्म)
18)	राम पाठ पढ़ रहा हैं।	(कर्त्तृ)
	राम से/के द्वारा पाठ पढ़ा जा रहा हैं।	(कर्म)
19)	बुढ़ीया दौड़ नहीं सकती।	(कर्त्तृ)
	बुढ़ीया से दौड़ा नहीं जाता।	(भाव)
20)	तुलसीदास ने रामायण लिखी थी।	(कर्त्तृ)
	रामायण तुलसीदास से लिखी गयी थी।	(कर्म)

2. वाक्य शुद्ध कीजिए (Correction of Sentences)

नीचे के वाक्यों में पहला वाक्य अशुद्ध और दूसरा वाक्य शुद्ध हैं।

1.	महेश आम खाया।	**(X)**
	महेश ने आम खाया।	**(✓)**
2.	किरण पुस्तक लिखी।	**(X)**
	किरण ने पुस्तक लिखी।	**(✓)**
3.	प्रसाद मुझ से कहा।	**(X)**
	प्रसाद ने मुझ से कहा।	**(✓)**
4.	मालती ने पुस्तक लाई।	**(X)**
	मालती पुस्तक लाई।	**(✓)**
5.	कृष्ण ने किताब पढ़ चुका।	**(X)**
	कृष्ण किताब पढ़ चुका।	**(✓)**
6.	गोपाल एक आम खाया।	**(X)**
	गोपाल ने एक आम खाया।	**(✓)**

Note : इस प्रकार हम देखते हैं कि 'ने' प्रत्यय भूतकालिक सकर्मक क्रियाओं में आता हैं। किन्तु बोल, भूल, ला, लग, सक, चुक, पा क्रियाओं के साथ ने नहीं प्रयुक्त होता।

Rahul Publications

7.	राम ने गया।	(X)
	राम गया।	(✓)
8.	रानी ने मुझ से बोला।	(X)
	रानी मुझ से बोली।	(✓)
9.	वह आते ही मैं जाऊँगा।	(X)
	उसके आते ही मैं जाऊँगा।	(✓)
10.	आप का पिता का नाम बताओ।	(X)
	अपने पिता का नाम बताइए।	(✓)
11.	मधु मधु का काम करती हैं।	(X)
	मधु अपना काम करती हैं।	(✓)
12.	उसने काम कर चुका।	(X)
	वह काम कर चुका।	(✓)
13.	सीता ने राम के साथ वन गई।	(X)
	सीता राम के साथ वन गयी।	(✓)
14.	पाठशाला का पास दो घर हैं।	(X)
	पाठशाला के पास दो घर हैं।	(✓)
15.	किरण के बहन का नाम प्रियदर्शिनि हैं।	(X)
	किरण की बहन का नाम पियदर्शिनि हैं।	(✓)
16.	घोड़ा घास खाया।	(X)
	घोड़े ने घास खायी।	(✓)
17.	उसका भाई का नाम गोपाल हैं।	(X)
	उसके भाई का नाम गोपाल हैं।	(✓)
18.	तुम हिन्दी सीखना चाहिए।	(X)
	तुम्हें हिन्दी सीखनी चाहिए।	(✓)

Rahul Publications

19. उसको नाटक देखनी चाहिए। (X)
उसको नाटक देखना चाहिए। (✓)
20. वह मुझ को विश्वास नहीं करता। (X)
वह मुझ पर विश्वास नहीं करता। (✓)
21. मेरा माँ मुझ से बहुत प्यार करता हैं। (X)
मेरी माँ मुझ से बहुत प्यार करती हैं। (✓)
22. मेरा पुस्तक चोरी गया। (X)
मेरी पुस्तक चोरी की गयी। (✓)
23. बड़ा आवाज के कारण उनका नींद खुल गया। (X)
बड़ी आवाज के कारण उनकी नींद खुल गयी। (✓)
24. सुधा का प्रश्न पत्र सरल लगती हैं। (X)
सुधा को प्रश्न पत्र सरल लगता हैं। (✓)
25. महादेवी वर्मा जी बड़ा ही विद्वान महिला है । (X)
महादेवी वर्मा जी बड़ी ही विदुषी महिला है । (✓)
26. किसान खेत में काम करती हैं। (X)
किसान खेत में काम करतें हैं। (✓)
27. कलम जेब पर हैं। (X)
कलम जेब में हैं। (✓)
28. माँ अपनी सन्तान का प्यार करती हैं। (X)
माँ अपनी सन्तान को/से प्यार करती हैं। (✓)
29. मैं लक्ष्मी की पूजा करनी चाहिए। (X)
मुझे लक्ष्मी की पूजा करनी चाहिए। (✓)
30. मैं पिताजी की सेवा करना चाहिए। (X)
मुझे पिताजी की सेवा करनी चाहिए। (✓)

Rahul Publications

31. सतीष ने मुम्बई गया। (X)
सतीष मुम्बई गया। (✓)
32. रोजा साडी पहनता हैं। (X)
रोजा साडी पहनती हैं। (✓)
33. मैं तरकारियाँ खरीदने बाज़ार जाता हैं। (X)
मै तरकारियाँ खरीदने बाज़ार जाता हूँ। (✓)
34. वे आते ही हम जायेंगे। (X)
उनके आते ही हम जायेंगे। (✓)
35. आपका माता का नाम बाताइए। (X)
अपनी माताजी का नाम बताइए। (✓)
36. तुमने सिनेमा देखने लगा। (X)
तुम सिनेमा देखने लगे। (✓)
37. वह फिल्म देखा। (X)
उसने फिल्म देखी। (✓)
38. हम पानी पिये। (X)
हम ने पानी पिया। (✓)
39. मोहन शरबत पिया। (X)
मोहन ने शरबत पीया। (✓)
40. महेश प्रतियाँ खरीदा। (X)
महेश ने प्रतियाँ खरीदी। (✓)
41. संतोष ने सभा में बोला। (X)
संतोष सभा में बाला। (✓)
42. हेमा ने कपड़े लाई। (X)
हेमा कपड़े लायी। (✓)

Rahul Publications

43. हम ने किताब लाना भूल गये। (X)
हम किताब लाना भूल गये। (✓)

44. हम ने फल खा चके। (X)
हम फल खा चुके। (✓)

45. उन्होंने काम करने लगा। (X)
वे काम करने लगे। (✓)

46. तुम ने पुस्तकें पढ़ सका। (X)
तुम पुस्तकें पढ़ सके। (✓)

47. श्याम ने कलमों को खरीदी। (X)
श्याम ने कलमों को खरीदा। (✓)

48. सुधाकर गायों को बेची। (X)
सुधाकर ने गायों को बेचा। (✓)

49. अभिनव ने गया। (X)
अभिनव गया। (✓)

50. वे हंस रही था। (X)
वे हंस रही थी। (✓)

Rahul Publications

3. शब्दों का वाक्यों में प्रयोग किजिए
(Usage of Words into Sentences)

1. फर्श - (फर्श पर कुत्ता बैठा था ।)
2. चित्त - (हमे चित्त लगाकर पढ़ना चाहिए ।)
3. स्मृति - (जोती वर्मा भाभी की स्मृति नही भुला पाई ।)
4. बहाना - (राजु हमेशा स्कूल नही जाने के लिए बहाना बनाते रहता है ।)
5. ज्ञान - (हमे ज्ञान बाटना चाहिए)
6. चिंता - (भाई को हमेशा बहना की चिंता लगी रहती है ।)
7. अचानक - (लाली को अचानक भाभी की याद आई ।)
8. घरेलू - (मेरी दादी माँ घरेलु उपचार करती है ।)
9. भाषण - (राम अच्छा भाषण देता है ।)
10. प्रार्थना - (मैं रोज सुबह प्रार्थना करता हूँ ।)
11. आभार - (मैं राजु का आभारी हूँ)
12. उन्तीर्ण - (सीता परीक्षा में प्रथम स्थान से उन्तीर्ण हुई ।)
13. घोषणा - (प्रधानमंत्री ने यह घोषण कि है कि आने वाले पाँच वर्षो में साक्षारता दर बढायेंगे ।)
14. कामयाबी - कठिन परिश्रम से कामयाबी आसानी से प्राप्त होती है ।
15. दूरदर्शी - भविष्य की सोच पाना, दूरदृष्टि है ।
16. अजनबी - यात्रा करते समय किसी अजनबी से होशियारी के साथ व्यवहार करना चाहिए।
17. द्वेष - किसी भी संस्थान की सफलता द्वेष भाव से नही हो सकती ।
18. विरासत - विरासत में प्राप्त दौलत अजीवन के लिए नहीं टिकती ।
19. खिन्नता - धोखा - धड़ी करने वाले हमेशा खिन्नता से ग्रसित रहते है ।
20. कमाल - भारत के राष्ट्रीय खेल में खिलाडीयों ने कमला दिखाया ।

Rahul Publications

21. अतृत्त - मनचाहें अंक न आने पर छात्र अतृप्त होते है ।
22. शान - तिरंगा झंण्डा हमारे भारत की शान है ।
23. विविधता - हमारे भारत देश में विविधता में एकता है ।
24. फिजूल - बुध्दिमान लोग फिजूल खर्च से दूर रहते है ।
25. प्रतिभाशाली - प्रेमचंद प्रतिभाशाली उपन्यासकार है ।
26. जबरदस्ती - जबरदस्ती से किया गया काम सफल नहीं होता ।
27. मार्गदर्शक - लेखक एक पूरी पीढ़ी के मार्गदर्शक होते है ।
28. अभ्यास - कोई भी कार्य अभ्यास से सही होता है ।
29. यथार्थ - कविता लेखन यथार्थ के धरातल पर होना चाहिए ।
30. ख्याति - हमेशा ख्याति बढाने की कोशिश करनी चाहिए ।
31. जलवायु - गर्मियों मे शिमला की जलवायु अच्छी लगती है ।
32. मुलाकात - कल अभिनेता से मेरी मुलाकात हुई ।
33. सबूत - कोई भी सबूत के बिना किसी भी विषय को नही मानते ।
34. अक्सर - हम अक्सर सिनेमा देखने जाते है ।
35. संशोधन - वैज्ञानिक बहुत से संशोधन करते है ।
36. अजीब - जंगल मे हमने अजीब सा प्राणी देखा ।
37. जुटाना - अमूल्य वस्तुओं को जुटाने का प्रयत्न करो ।
38. अचरज - ताजमहल की सुन्दरता को देखकर अचरज में पड जाते है ।
39. दंग रहना - मैं बाग में अनेक रंगो के फूलों को देखकर दंग रह गया ।
40. आविष्कार - विज्ञान ने असंख्य आविष्कार किये है ।

Rahul Publications

4. कार्यालयीन हिन्दी

(KARYALAY HINDI : Administration Terminology)

(प्रशासनिक शब्दावली)

(A) अंग्रेजी शब्दों के हिन्दी रूपान्तर : (English to Hindi)

'A'

1.	Absence	-	अनुपस्थिति/गैरहाज़िरी
2.	Acceptance	-	स्वीकृति
3.	Accomodation	-	आवास
4.	Accountant	-	लेखाकार
5.	Accountant General	-	महालेखाकार
6.	Acknowledgement	-	पावती
7.	Act	-	अधिनियम
8.	Ad-hoc	-	तदर्थ
9.	Administration	-	प्रशासन
10.	Adoption	-	दत्तक स्वीकरण
11.	Advance	-	अग्रिमधन (पेशगी)
12.	Advocate	-	अधिवक्ता
13.	Additional Secretary	-	अपर सचिव
14.	Advisor	-	सलाहकार
15.	Advocate General	-	महाधिवक्ता
16.	Administrative Officer	-	प्रशासनिक - अधिकारी
17.	Affidavit	-	शपथ पत्र
18.	Agency	-	अभिकर्ता
19.	Agreement	-	करार

Rahul Publications

20.	Air Force	-	वायुसेना
21.	Allotment	-	आबंटन
22.	Allowance	-	भत्ता
23.	All India Institute of Medical Science	-	अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान
24.	All India Radio	-	आकाशवाणी
25.	Ambassador	-	राजदूत
26.	Annexure	-	परिशिष्ट
27.	Assistant Audit Officer	-	सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी
28.	Assistant Commissioner	-	सहायक आयुक्त/सहायक कमिश्नर
29.	Atomic Energy Commission	-	परमाणु ऊर्जा आयोग
30.	Attorney General	-	महान्यायवादी
31.	Authorised	-	प्राधिकृत
32.	Audit Officer	-	लेखापरीक्षाधिकारी
33.	Auditor General	-	महालेखा परीक्षक
34.	Auditor	-	लेखा परीक्षक
35.	Autonomous	-	स्वायत्त

'B'

36.	Ballot Officer	-	मतपत्र अधिकारी
37.	Bilateral	-	द्विपक्षीय
38.	Board of Arbitration	-	मध्यस्थ बोर्ड
39.	Biperate	-	उभयलक्षी
40.	Block Development Officer	-	खंड विकास अधिकारी
41.	Bonafide	-	वास्तविक/यथार्थ
42.	Board of Higher Secondary Education	-	उच्चतर माध्यमिक शिक्षा बोर्ड

Rahul Publications

'C'

43.	Cabinet Minister	-	मंत्रिमंडल सदस्य
44.	Certificate	-	प्रमाण पत्र
45.	Cashier	-	रोकडिया
46.	Census Officer	-	जनगणना अधिकारी
47.	Cabinet Secretary	-	मंत्रिमंडल सचिव
48.	Chairman	-	सभापति
49.	Charge Sheet	-	आरोप पत्र
50.	Chartered Accountant	-	सनदी लेखापाल
51.	Central Administrative Tribunal	-	केन्द्रीय प्रशासनिक अधिकरण
52.	Central Board of Direct Taxes	-	केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड
53.	Central Board of Secondary Education	-	केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मंडल
54.	Camp Officer	-	शिविर अधिकारी
55.	Central Hindi Directorate	-	केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय
56.	Chancellor	-	कुलाधिपति
57.	Casual Leave	-	आकस्मिक छुट्टी
58.	Circular	-	परिपत्र
59.	Clarification	-	स्पष्टीकरण
60.	Chartered Accountant	-	सनदी लेखाकर
61.	Chief Adviser	-	मुख्य सलाहकार
62.	Chief Editor	-	मुख्य संपादक
63.	Chief Justice	-	मुख्य न्यायाधीश
64.	Chief Minister	-	मुख्यमंत्री
65.	Convener	-	संयोजक

Rahul Publications

66.	Collector	-	जिलाधीश
67.	Confidentional	-	गोपनीय
68.	Consolidated	-	समेकित
69.	Commissioner	-	आयुक्त
70.	Comptroller and Auditor General	-	नियंत्रक और महालेखा परीक्षक
71.	Communication Officer	-	संचार-अधिकारी
72.	Counsellor	-	परामर्शदाता
73.	Counter Signature	-	प्रति हस्ताक्षर
74.	Costums Officer	-	सीमा शुल्क अधिकारी
75.	Corporation	-	निगम

'D'

76.	Debt	-	ऋण
77.	Dearness Alloeance	-	महंगाई भत्ता
78.	Declaration Form	-	घोषणा पत्र
79.	Deducation	-	कटौती
80.	Demi Official	-	अर्ध सरकारी पत्र
81.	Deputation	-	प्रतिनियुक्ति
82.	Documentary Proof	-	लिखित प्रमाण
83.	Documents	-	दस्तावेज
84.	Director	-	निर्देशक
85.	Directorate of Education	-	शिक्षा निर्देशालय
86.	Due Date	-	नियम तिथि
87.	Duty	-	विधिवत्
88.	District Manager	-	जिला प्रबंधक
89.	Drawing Officer	-	आहरण अधिकारी
90.	Deputy Director	-	उप-निर्देशक

Rahul Publications

'E'

91. Education - शिक्षा
92. Editor - संपादक
93. Earned Leave - अर्जित छुट्टी
94. Earned Money - बयाना
95. Election Commission - निर्वाचन आयोग
96. Eligibility - पात्रता
97. Enclosure - अनुलग्नक
98. Emergency - आपात
99. Election Commissioner - निर्वाचन आयुक्त
100. Election Commission - निर्वाचन आयोग
101. Employment Exchange - रोजगार कार्यालय
102. Engineer-in-Chief - प्रमुख इंजीनियर
103. Enquiry Officer - जाँच अधिकारी
104. Establishment - स्थापना
105. Execution Committee - कार्यकारिणी समिति
106. Ex-Officer - पदेन
107. Executive Engineer - कार्यपालक इंजीनियर
108. Executive Officer - कार्यपालक अधिकारी

'F'

109. Family Planning Officer - परिवार-नियोजन अधिकारी
110. Fair Copy - स्वच्छ प्रति
111. Fake Document - जाली दस्तावेज़
112. Financial Concurrance - वित्तीय सहमति

Rahul Publications

113.	Financial Adviser	-	वित्त सलाहकार
114.	Fitness Certificate	-	स्वस्थता प्रमाण पत्र
115.	Forest Officer	-	वन अधिकारी
116.	Forward	-	अग्रेषण
117.	Further Action	-	आगे की कार्यवाइ

'G'

118.	Governer	-	राज्यपाल
119.	Gazetted Officer	-	राजपत्रित अधिकारी
120.	General Manager	-	महा प्रबंधक
121.	General Secretary	-	महासचिव
122.	Grant	-	अनुदान
123.	Grievance Committe	-	परिवाद समिति

'H'

124.	Handicrafts	-	हस्त, शिल्प, दस्तकारी
125.	Head Quarters	-	मुख्यालय
126.	Health Officer	-	स्वास्थ अधिकारी
127.	High Commissioner	-	उच्चायुक्त
128.	Here with	-	एतद्सह
129.	Honorary	-	अवैतनिक
130.	Honororium	-	मानदेय
131.	Home Secretary	-	गृह सचिव
132.	High Court	-	उच्च न्यायालय

Rahul Publications

'I'

133. Indentification Card	-	पहचान पत्र
134. Implementation	-	कार्यान्वयन
135. Investigator	-	अन्वेषक
136. Incharge	-	प्रभारी
137. Income-Tax Officer	-	आयकर अधिकारी
138. Joining Report	-	कार्यभार ग्रहण रिपोर्ट
139. Joint Secretary	-	संयुक्त सचिव
140. Junior Accounts Officer	-	कनिष्ठ लेखा अधिकारी
141. Jurisdiction	-	अधिकार क्षेत्र

'L'

142. Labour Welfare Officer	-	श्रम कल्याण अधिकारी
143. Laison	-	संपर्क
144. Livelihood	-	आवास जीविका
145. Life Insurance Corporation	-	जीवन बीमा निगम
146. Local Self Government	-	स्थानीय स्वायत्त शासन
147. Lump Sum	-	एकमुश्त

'M'

148. Man Hour	-	श्रमघंटा
149. Marine Engineer	-	नौ-इंजीनियर
150. Memorandum	-	ज्ञापन
151. Marketing Officer	-	पणन अधिकारी
152. Maintenance	-	पोषण/निर्वाह
153. Minutes	-	कार्यवृत्त
154. Mortgage	-	बंधक
155. Municipal Corporation	-	नगर निगम

Rahul Publications

‘N’

156. National Highways - राष्ट्रीय राजपथ
157. Negatiation - बातचीत/सौदा
158. Notification - आधि सूचना

‘O’

159. Office Order - कार्यालय आदेश
160. Office Supervisor - कार्यालय पर्यवेक्षक
161. Order - आदेश
162. Outstanding - बाकी
163. Overtime - समयोपरि

‘P’

164. Particulars - ब्यौरा/विवरण
165. Part Time - अंश कालिक
166. Pass Port - पार पत्र
167. Pay and Accounts Officer - भुगतान और लेखा अधिकारी
168. Pending - लंबित
169. Perusal - अवलोकन
170. Personal Assistant - निजी सहायक
171. Post Office - डाक घर
172. Postal Department - डाक विभाग
173. Postal Life Insurance - डाक जीवन बीमा
174. President - अध्यक्ष
175. Principal - प्रधानाचार्य
176. Producer - निर्माता
177. Psychiatrist - मनोचिकित्सक
178. Public Relation Officer - जनसंपर्क अधिकारी

Rahul Publications

'R'

179. Revenue - राजस्व

'S'

180. Secretary - सचिव

181. Senior Accounts Officer - वरीष्ठ लेखा अधिकारी

182. Small Savings Officer - अल्प बचत अधिकारी

183. Social Welfare Department - समाज कल्याण विभाग

184. Social Welfare Officer - समाज कल्याण अधिकारी

'T'

185. Translator - अनुवादक

186. Treasurer - कोषाध्यक्ष

'U'

187. Unit Trust of India - भारतीय युनिट ट्रस्ट

188. University Grants Commission - विश्वविद्यालय अनुदान आयोग

'V'

189. Vice-Chancellor - कुलपति

190. Vigilance Officer - सतर्कता अधिकारी

'Z'

191. Zonal Officer - आंचलिक कार्यालय

(B) हिन्दी शब्दों के अंग्रेजी रूपान्तर : (Hindi to English)

दस्तावेज - Documents

आयात - Emergency

हस्तशिल्प, दस्तकारी - Handicrafts

Rahul Publications

उच्च न्यायालय	-	High Court
पोषण	-	Manitenance
नगर निगम	-	Municipal Corporation
राष्ट्रीय राजपथ	-	National Highways
अधिसूचना	-	Notification
उपजीविका, धंधा	-	Occupation
संसद	-	Parliament
निवृत्तिवेतन	-	Pension
अनुज्ञा	-	Permission
लोक सेवा	-	Public Service
पावती	-	Receipt
शिफारिश	-	Recommendation
भर्त्ती	-	Recruitment
निबन्धन, पंजीयन	-	Registration
प्रतिनिधित्व	-	Representation
बचत	-	Savings
कर्मचारी वृन्द	-	Staff
मन्त्रालय	-	Ministry
रिक्त, रिक्तता	-	Vacancy
मतदाता	-	Voter
प्रशिक्षण	-	Training
कार्मिक-संघ	-	Trade Union
यातायात	-	Traffic
राज्यपाल	-	Governor

Rahul Publications

मंत्री	-	Minister
सचिव	-	Secretary
अध्यक्ष	-	President
प्राचार्य	-	Principal
विधि मंत्रालय	-	Ministry of Law
राष्ट्रपति	-	President
मुख्यमंत्री	-	Chief Ministers
मानव संसाधन विकास मंत्रालय	-	Ministry of Human Reource Development
भारतीय इस्पात प्राधिकरण लिमिटेड	-	Steel Authority of India Limited
भारतीय कोयला खान प्राधिकरण	-	Coal Mines Authority of India
परीक्षक	-	Examiner
महाप्रबंधक	-	General Manager
भारतीय औद्योगिक विकास बैंक	-	Industrial Development Bank of India
स्वास्थ्य मंत्रालय	-	Ministry of Health
योजनाकार	-	Planner
प्रधानमंत्री	-	Prime Minister
राज्यसभा सचिवालय	-	Rajya Sabha Secretariat
कुलसचिव	-	Registrar
मंत्रीमण्डल	-	Cabinet

Rahul Publications

FACULTIES OF ARTS, COMMERCE, SCIENCE, MANAGEMENT & SOCIAL SCIENCE

B.A., B.Com., B.B.A., B.Sc. and B.S.W

I Year I Semester (CBCS) Examination

Model Paper - I

HINDI

(SECOND LANGUAGE)

Time : 3 Hours] **[Max. Marks : 80**

खण्ड - क (4 × 5 = 20 M)

Answers

I) किन्हीं चार प्रश्नों के संक्षेप में उत्तर दीजिए ।

1. चरित्र से आपका क्या तात्पर्य है ? **(Page No. 9, Q.No. 2)**
2. अर्थशास्त्र को मायावी शास्त्र क्यो कहा होगा ? **(Page No. 17, Q.No. 2)**
3. सद्गति कहानी की विशेषता लिखिए ? **(Page No. 43, विशेषताएँ)**
4. छोटा जादूगर की कर्तव्यपरायणता पर विंचार किजिए ? **(Page No. 48, Q.No. 1)**
5. लिंग कितने प्रकार के होते है । उदाहरण सहित लिखिए ? **(Page No. 61)**
6. काल के कितने प्रकार है । उदाहरण सहित लिखिए ? **(Page No. 72)**

खण्ड - क (4 × 15 = 60 M)

II) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए ।

7. किन्हीं दो की संदर्भ सहित व्याख्या किजिए ।

   (क) विनय विद्या का भूषण है । बिना विनय के विद्या शोभा नहीं देती । **(Page No. 7, 8, Q.No. 2)**

   (ख) बाजार आमंत्रित करता हैं कि आओ मुझे लूटो और लूटो । **(Page No. 14, Q.No. 1)**

   (ग) प्रायः निराहार और मिताहार से दुर्बल देह से वह कितना । परिश्रम करती थी, यह मेरी बालक बुध्दि से छिपा ना रहता था । **(Page No. 14, Q.No. 1)**

   (घ) जो जाति केवल देना ही जानती है, लेना - कुछ भी नही, उसकी संस्कृति का एक दि दिवाला निकल जाता है । **(Page No. 29, Q.No. 2)**

Rahul Publications

8. (क) 'भारत में संस्कृति संगम' किस प्रकार दर्शाया गया है? **(Page No. 25,** सारांस**)**

अथवा

(ख) 'भाभी' नामक पाठ के माधाम से लेखिका के उद्देश को स्पष्ट किजिए। **(Page No. 23, Q.No. 1)**

9. (क) सच का सौदा कहानी का सारांश अपने शब्दों मे लिखिए । **(Page No. 49, 50, सारांश)**

अथवा

प्रायश्चित कहानी के उद्देश को लिखिए । **(Page No. 54, 55, सारांश)**

(ख) निम्न लिखित में से किसी एक का चरित्र-चित्रण किजिए ।

1. पंडित घिसाराम **(Page No. 44, Q.No. 2)**
2. सर्वदयाल **(Page No. 52,** सर्वदायल**)**
3. रामू की बहू **(Page No. 57, Q.No. 2)**

10. (क) निम्नलिखित में से किन्ही चार वाक्यों को निर्देशानुसार लिखिए ।

1. नौकर बाजार से सामान लाता है **(Page No. 61, Q.No. 2)**
   (रेखांकित शब्द का लिग बदलकर लिखिए).
2. राजा की एक रानी थी **(Page No. 61, Q.No. 2)**
   (रेखांकित शब्द का वचन बदलकर वाक्य लिखिए).
3. राधा ने गाना सुनाया (वाक्य को वर्तमान काल मे लिखिए). **(Page No. 73, Q.No. 1)**
4. मैं तमिल नहीं पढ़ सकता (वाच्य बदलिए). **(Page No. 83, Q.No. 2)**
5. हम हिन्दी सीखेंगे । (वाच्य बदलिए). **(Page No. 84, Q.No. 12)**

(ख) निम्नलिखित वाक्यों में से किन्ही तीन वाक्यों के शुध्द रूप लिखिए ।

1. घोड़ा घास खाया । **(Page No. 32, Q.No. 16)**
2. मधु मधु का काम करती है । **(Page No. 86, Q.No. 11)**
3. किसान खेत मे काम करती है । **(Page No. 87, Q.No. 26)**
4. उसको नाटक देखनी चाहिए । **(Page No. 87, Q.No. 19)**
5. संतोष ने सभा में बोला । **(Page No. 88, Q.No. 41)**

Rahul Publications

(ग) निम्नलिखित शब्दों में से किन्ही तीन का वाक्यों मे प्रयोग किजिए ।

1. चिन्त = मन = (जो पढ़ने में चिन्त लगाते हैं, वे एक दिन अवश्य ही कामयाब होते है।
2. स्मृति = यादें = (जिसकी स्मृति तीव्र होती हैं, वह विषय जल्दी समझता है।)
3. निर्झर = झरना = (उसका जीवन दुःखो का निर्झर है।)
4. कमर = कसना = तैयारी करना (वह परिक्षा के लिए कमर कसकर बैठ गया ।)
5. फर्श = जमीन (पानी फर्श पर गिर गया)
6. एंठ – अकड़ – (आँख मे एक तिनका गिरते ही सारी एंठ हवा हो गयी।)

(घ) निम्नलिखित में से किन्ही पाँच शब्दों का हिंदी अथवा अंग्रेजी मे अनुवाद किजीए ।

1. Absence **(Page No. 92, Q.No. 1)**
2. Advisor **(Page No. 92, Q.No. 14)**
3. Agreement **(Page No. 92, Q.No. 19)**
4. Auditor **(Page No. 93, Q.No. 34)**
5. दस्तावेज **(Page No. 100)**
6. संसंद **(Page No. 101)**
7. पावती **(Page No. 101)**
8. राज्यपाल **(Page No. 101)**

Rahul Publications

FACULTIES OF ARTS, COMMERCE, SCIENCE, MANAGEMENT & SOCIAL SCIENCE

B.A., B.Com., B.B.A., B.Sc. and B.S.W

I Year I Semester (CBCS) Examination

Model Paper - II

HINDI

(SECOND LANGUAGE)

Time : 3 Hours] **[Max. Marks : 80**

खण्ड - क (4 × 5 = 20 M)

ANSWERS

I) किन्हीं चार प्रश्नों के संक्षेप में उत्तर दीजिए ।

1. चरित्र संगठन के आधार पर 'सहकारिता' के महत्व को स्पष्ट कीजिए ? **(Page No. 5)**
2. बाजार दर्शन के आधार पर 'भगतजी' के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालिए । **(Page No. 16, 17)**
3. 'छोटा जादूगर' कहानी के अंत पर प्रकारा डालिए । **(Page No. 46)**
4. प्रायश्चित कहानी मे पंडित परमसुख की लालची प्रवृत्ती को दर्शाया है । **(Page No. 56, 57)**
5. 'वचन' कितने प्रकार के होते ? उदाहरण सहित लिखिए । **(Page No. 69)**
6. 'काल' कितने प्रकार के होते ? उदाहरण सहित लिखिए । **(Page No. 72)**

खण्ड - क (4 × 15 = 60 M)

II) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए ।

7. किन्हीं दो की संदर्भ सहित व्याख्या किजिए ।

(क) मनुष्य की विशेषता उसके चरित्र में है । चरित्र के कारण ही एक मनुष्य दूसरे से अधिक आदरणीय समझा जाता है । **(Page No. 6, Q.No. 1)**

(ख) ''ऐसे बाजार को बीच में लेकर लोगों में आवश्यकताओं का आदान प्रदान नहीं होता, लेकिन शोषण होने लगता है।'' **(Page No. 15, Q.No. 3)**

(ग) ''सबसे कठिन दिन तब आते थे, जब वृध्द सेठ की सौभाग्यवती पुत्री अपनी नैहर आती थी।'' **(Page No. 21, Q.No. 2)**

(घ) ''राष्ट्रीयता की जड़े पृथ्वी मे जितनी गहरी होंगी, उतना ही राष्ट्रीय भवों का अंकुर पल्लवित होगा। **(Page No. 35, Q.No. 1)**

Rahul Publications

8. (क) भाभी पाठ का सारांश लिखिए । **(Page No. 18, 19, सारांस)**

अथवा

(ख) राष्ट्र का स्वरुप किन-किन अंगो से बनता है? **(Page No. 32, 33, 34, सारांस)**

9. (क) 'सदगति' कहानी की विशेषताएँ बताइए । **(Page No. 41, 42, 43, सारांश)**

अथवा

'चीफ की दावत' कहानी की विशेषएँ बताइए । **(Page No. 58,59, सारांश)**

(ख) निम्नलिखित में से किसी एक का चरित्र-चित्रण किजिए ।

1. पण्डित परमसुख **(Page No. 56, 57)**
2. मिस्टर शामनाथ **(Page No. 60)**
3. दुःखी **(Page No. 43, 44)**

10. (क) निम्नलिखित में से किन्ही चार वाक्यों को निर्देशानुसार लिखिए ।

1. **ठाकुर** ने उपन्यास लिखे **(Page No. 63, Q.No. 17)**
   (रेरवांकित शब्द का लिंग बदल लिखिए)
2. विद्यार्थी ने एक **पुस्तक** खरीद ली । **(Page No. 70, Q.No. 10)**
   (रेरवांकित शब्द का वचन बदलकर वाक्य लिखिए).
3. कवि काव्य लिखता है । (वाक्य को काल बदलकर लिखिए). **(Page No. 75, Q.No. 6)**
4. मैं ने आम खायो (वाक्य बदलकर वाक्य लिखिए). **(Page No. 84, Q.No. 13)**
5. राम रावण को मार। ('ने' का प्रयोग किजिए). **(राम ने रावण को मारा)**

(ख) निम्नलिखित वाक्यों में से किन्ही तीन वाक्यों का शुध्द रूप लिखिए ।

1. मै पिताजी की सेवा करना चाहिए । **(Page No. 87, Q.No. 30)**
2. बड़ा आवाज के कारण उनका निंद खुल गया । **(Page No. 87, Q.No. 23)**
3. सीता ने राम के साथ वन गई । **(Page No. 86, Q.No. 13)**
4. तुम हिंदी सीरवना चाहिए । **(Page No. 86, Q.No. 18)**
5. हम ने किताब लाना भूल गये । **(Page No. 91, Q.No. 43)**

Rahul Publications

(ग) निम्नलिखित शब्दों में से किन्ही तीन का वाक्यों मे प्रयोग किजिए ।

1. अचानक (लाली को अचानक भाभी की याद आई।)
2. घरेलू (मेरी दादी माँ घरेलु उपचार करती है।)
3. भाषण (राम अच्छा भाषण देता है ।)
4. प्रार्थना (मैं रोज सुबह प्रार्थना करता हूँ)
5. आभार (मैं राजु का आभारी हूँ)
6. उत्तीर्ण (सीता परीक्षा में उत्तीर्ण हुई।)

(घ) निम्नलिखित में से किन्ही पाँच शब्दों का हिन्दी तथा अंग्रेजी मे अनुवाद किजीए ।

1. Cashier **(Page No. 94, Q.No. 45)**
2. Circular **(Page No. 94, Q.No. 58)**
3. Collector **(Page No. 95, Q.No. 66)**
4. Director **(Page No. 95, Q.No. 84)**
5. बचत **(Page No. 101)**
6. मतदाता **(Page No. 101)**
7. यातायात **(Page No. 101)**
8. मंत्री **(Page No. 102)**

Rahul Publications

FACULTIES OF ARTS, COMMERCE, SCIENCE, MANAGEMENT & SOCIAL SCIENCE

B.A., B.Com., B.B.A., B.Sc. and B.S.W

I Year I Semester (CBCS) Examination

Model Paper - III

HINDI

(SECOND LANGUAGE)

Time : 3 Hours] **[Max. Marks : 80**

खण्ड - क (4 × 5 = 20 M)

ANSWERS

I) किन्हीं चार प्रश्नों के संक्षेप में उत्तर दीजिए ।

1. 'भाभी' के चरित्र की समस्याओं को अपने शब्दों मे लिखिए? **(Page No. 24, Q.No. 2)**
2. भारत की बुनियादी संस्कृति कैसे बनी है? **(Page No. 31, Q.No. 2)**
3. सच का सौदा कहानी की विशेषताएँ लिखिए । **(Page No. 51, विशेषताएँ)**
4. चीफ की दावत में चीफ शामनाथ के माँ से क्या क्या कहता है । **(Page No. 60)**
5. निम्नलिखित चार शब्दों के हिंदी पर्याय लिखिए ।
   1. Commissioner **(Page No. 95, Q.No. 69)**
   2. Treasurer **(Page No. 100, Q.No. 186)**
   3. Income tax officer **(Page No. 98, Q.No. 137)**
   4. Deputy director **(Page No. 95, Q.No. 90)**
6. कारक कितने प्रकार के होते है लिखिए ।

उत्तरः कारक आठ प्रकार के होते है । वे इस प्रकार है ।

कारक	विभक्ति चिन्ह	उदाहरण
कर्त्ता	ने	गोपी **ने** कहानी सुनाई ।
कर्म	को	श्याम ने पौधों **को** पानी दियो ।
करण	से	मोहन ने लकड़ी **से** मेज बनाई ।
सम्प्रदान	के लिए	मोहन ने राम **के लिए** जलेबी खरीदी ।
अपादान	से	वृक्ष **से** पत्ता गिरा ।
सम्बन्ध	का	राज मोहन **का** पुत्र है ।
अधिकरण	में	कमल सरोवर **में** खिला है ।
संबोधन	अरे	**अरे** श्याम तुम कहाँ गए थे?

Rahul Publications

खण्ड - क (4 × 15 = 60 M)

II) निम्नलिखिथ प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए ।

7. किन्हीं दो की संदर्भ सहित व्याख्या किजिए ।

(क) ''सच्ची उदारता इस बात मे है कि मनुष्य समझ जाए, उसके भावों का उतना ही आदर किया जाए, जितना कि अपने भावों का ।'' **(Page No. 8, Q.No. 3)**

(ख) ''रंगीन कपडो में जो मुख धीरे-धीरे रुष्ट होने लगता है, वह किन करुण और कितना मुरझाया हुआ है।'' **(Page No. 22, 23, Q.No. 3)**

(ग) ''प्राचीन भारत में आस-पास की दुनिया में जगत शिष्य भी थे।'' **(Page No. 30, Q.No. 3)**

(घ) ''राष्ट्रीयता की जड़े पृथ्वी मे जितनी गहरी होंगी, उतना ही राष्ट्रीय भवों का अंकुर पल्लवित होगा। **(Page No. 35, Q.No. 1)**

8. (क) चरित्र संगठन के लिये किन - किन गुणों की अवशयकता है चर्चा किजिए । **(Page No. 3, 4, 5, सारांस)**

अथवा

(ख) राष्ट्र का स्वरुप के अंग कौन कौन से है? **(Page No. 32, 33, 34, सारांस)**

9. (क) 'सदगति' कहानी का सारांश लिखिए । **(Page No. 41, 42, 43, सारांस)**

अथवा

छोटा जादूगर कहानी का सारांश लिखिए । **(Page No. 45, 46, 47, सारांस)**

(ख) निम्नलिखित में से किसी एक का चरित्र-चित्रण किजिए ।

1. रामू की बहू **(Page No. 57, Q.No. 2)**
2. शामनाथ **(Page No. 60, चरित्र-चरित्र)**
3. दुःखी **(Page No. 43, 44 Q.No. 1)**

10. (क) निम्नलिखित में से किन्ही चार वाक्यों को निर्देशानुसार लिखिए ।

1. **साहब** को समाज में बहुत गैरव मिलता है । **(Page No. 65, Q.No. 46)**
   (रेरवांकित शब्द का लिंग बदलकर वाक्य लिखिए)
2. सभा में विद्वान बोल रहा है । **(Page No. 70, Q.No. 7)**
   (रेरवांकित शब्द का वचन बदलकर वाक्य लिखिए).

Rahul Publications

3. डॉक्टर इलाज करेगा । (वाक्य को वर्तमान काल में लिखिए). **(Page No. 75, Q.No. 4)**
4. जुलाह कपडा बुनता है। (वाक्य को भूतकाल मे लिखिए). **(Page No. 76, Q.No. 8)**
5. उन्होंने चार घोडों को देखा। (वाक्य बदलकर लिखिए). **(Page No. 84, Q.No. 14)**

(ख) निम्नलिखित वाक्यों में से किन्ही तीन वाक्यों का शुध्द रूप लिखिए ।

1. महोदवी वर्मा जी बड़ी ही विद्वान महिला है । **(Page No. 87, Q.No. 25)**
2. वह आते ही मै जाऊँगा । **(Page No. 86, Q.No. 9)**
3. मेरी माँ मुझ से बहुत प्यार करता है । **(Page No. 87, Q.No. 21)**
4. तुमने सिनेमा देखने लगा । **(Page No. 88, Q.No. 36)**
5. हम ने किताब लाना भूल गये । **(Page No. 89, Q.No. 43)**

(ग) निम्नलिखित शब्दों में से किन्ही तीन का वाक्यों मे प्रयोग किजिए ।

1. ज्ञान - हमें ज्ञान बाटना चाहिए ।
2. चिंता - भाई को हमेशा बहन की चिंता होती है ।
3. स्मृति - महादेवी वर्मा भाभी की स्मृती नही भुला पाई ।
4. खिलाड़ी - मैं रोज सुबह प्रार्थना करता हूँ ।
5. प्राचार्य - मैने प्राचार्य को चिट्टी लिखकर छुटी माँगी ।
6. चित - हमें चित लगाकर पढ़ना चाहिऐ ।

Rahul Publications

(घ) निम्नलिखित में से किन्ही पाँच शब्दों का हिन्दी तथा अंग्रेजी मे अनुवाद किजीए ।

1. Editor **(Page No. 94, Q.No. 92)**
2. Fake Doucmenrt **(Page No. 94, Q.No. 111)**
3. Grant **(Page No. 95, Q.No. 122)**
4. Order **(Page No. 97, Q.No. 161)**
5. पावती **(Page No. 101)**
6. दस्तावेज **(Page No. 100)**
7. परीक्षक **(Page No. 102)**
8. कुलसचित **(Page No. 102)**

FACULTIES OF ARTS, COMMERCE, SCIENCE, MANAGEMENT & SOCIAL SCIENCE

B.A., B.Com., B.B.A., B.Sc. and B.S.W

I Year I Semester (CBCS) Examination

November / December - 2019

HINDI

(SECOND LANGUAGE)

Time : 3 Hours] **[Max. Marks : 80**

खण्ड - क (4 × 5 = 20 M)

ANSWERS

I) किन्हीं चार प्रश्नों के संक्षेप में उत्तर लिखिए ।

1. चरित्र संगठन पाठ में चरित्र के क्या गुण बताये गये हैं ? **(Page No. 9, Q.No. 1)**
2. राष्ट्र के स्वरूप के अंग क्या हैं ? उन पर अपने विचार व्यक्त कीजिए। **(Page No. 37, Q.No. 1)**
3. सद्गति कहानी के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए । **(Page No. 42)**
4. सच का सौदा कहानी में सच की जीत किस तरह बताई गई ?

उत्तरः

'सच का सौदा' सुदर्शन जी द्वारा लिखी गई एक प्रेरणादायक कहानी है । यह कहानी एक मध्यवर्गीय व्यक्ति के सपने और सच का साथ देने वाली है । इस कहानी के मुख्य पात्र सर्वदयाल जी हैं, जो आर्थिक परेशानी से जूझते हूए भी अपने मामा की सहायता से ग्रेजुएट कर जाते हैं । परंतु नौकरी मिलनें में अत्यंत परेशानी होती है । काफी प्रयत्न के बाद संपादक के रूप मे एक नौकरी भी मिलती है । लेकिन सच्चाई का साथ देने के लिए उन्हें वो नौकरी छोड़नी पड़ती है । नौकरी जाने के कारण पत्नी और पिता दोनो हीं उनसे नाराज़ हो जाते हैं । फिर भी सर्वदयाल जी हारते नहीं और सच का साथ देते रहते हैं । अनेक समस्याएँ आती हैं, लेकिन वो घबराते नहीं है । उन समस्याओं का डट कर सामना करते हैं । लेकिन सच का साथ नहीं छोड़ते हैं । अंत में उनके सद्गुणों से प्रभावित होकर ठाकुर उन्हें समम्मान से वापस ले आते हैं । और फिर संपादक के पद संभालने के लिए कहते हैं ।

अतः इस कहानी से यह संदेश लिता है कि धर्म और सत्य के मार्ग का अनुसरण करना चाहिए । इसी से मनुष्य हमेशा सफल है, जिस तरह से सर्वदयाल ने सच का मार्ग अपनाया और सफल हुआ ।

अतः सच की जीत हमेशा होती है ।

Rahul Publications

5. वचन कितने प्रकार के हेते हैं उदाहरण सहित लिखिए । **(Page No. 69)**

6. हिन्दी में लिंग के कितने भेद हैं उदाहरण देकर बताइए । **(Page No. 61)**

खण्ड - क (4 × 15 = 60 M)

II) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए ।

7. किन्हीं <u>दो</u> गद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या किजिए ।

(क) हम नही जानते हम स्वयं दूसरों की सहकारिता से कितना लाभ उठाते हैं । स्वयं अपनी सहकारिता से दूसरों की वंचित रखना कृतघ्नता है ।

उत्तरः

प्रसंग : यह उद्धरण डा. गुलाबराय द्वारा लिखित 'चरित्र संगठन' से लिया गया है । ये एक आदर्श अध्यापक, संपादक तथा साहित्यकार थे ।

संदर्भ : इस उद्धरण में लेखक सहकारिता के महत्त्व को बता रहे हैं ।

व्याख्या : सहकारिता का अर्थ होता है, साथ मिलकर काम करना । सहकारिता मनुष्य के चरित्र का महत्त्वपूर्ण गुण है । इसलिए लेखक कहते हैं कि अगर हमें मालूम हो या न हो कि दूसरों की सहकारिता से हमें क्या लाभ होता है । हम दूसरों से कितना लाभ उठा पाते हैं । हमें लाभ-हानि को छोड़कर दूसरों की सहायता करनी चाहिए।

(ख) मैंने यह तय माना कि और पैसा होता और सामान आता । वह मामान जरूरत की तरफ देखकर नहीं आया, अपनी 'पर्चेजिंग पावर' के अनुपात में आया है ।

उत्तरः

प्रसंग : यह उद्धरण जैनेन्द्र कुमार द्वारा लिखित 'बाजार दर्शन' से लिया गया है ।

संदर्भ : बाजार के चकाचौंध तथा बाजारों से हो रहे शोषण के बारे में बताया गया है ।

व्याख्या : लेखक यह कहनी चाहते हैं कि अगर पैसे हैं तो सामान चरूरत को देखकर नहीं आता है बल्कि अपने 'पर्चेजिंग पावर' को देखकर आता है । बाजार को सार्थकता वही मनुष्य देते हैं, जो जानते हैं, कि उसे क्या चाहिए ? लेकिन जेब भरा हो तो मनुष्य ज़रूरत के तरफ देखकर नहीं, बल्कि बाजार की चकाचौंध को देखकर सामान लेता है । वो अपनी 'पर्चेजिंग पावर' के गर्व में अपने पैसे से केवल एक विनाशक शक्ति ही बाजार को दे सकते हैं । वही लोग बाजार का बाजारूपन बढ़ाते हैं ।.

Rahul Publications

(ग) संस्कृति का स्वभाव हैं कि आदान-प्रदान से बढ़ती है । **(Page No. 29, Q.No. 2)**
जो जाति केवल देना ही जानती है, लेना कुछ नहीं, उस
की संस्कृति का एक दिन दिवाला निकल जाता है ।

(घ) आज भी जब कोई रंगीन कपड़ों के प्रति विरक्ति के संबंध में कौतुक भरा प्रश्न कर बैठता है, तो वह अतीत फिर वर्तमान होने लगता है ।

उत्तरः

प्रसंग : यह उद्धरण महादेवी वर्मा द्वारा लिखित 'भाभी' पाठ से लिया गाया है ।

संदर्भ : इस संस्मरण में लेखिका विधवा भाभी की दयनीय तथा कारूणिक स्थिति का वर्णन कर रही है । तथा समाज में हो रहे विधवा के दीन दशा को दर्शा रही है ।

व्याख्या : लेखिका अपने अतीत को भूल नहीं पा रही है । कुछ देखे तो उन्हें उस भाभी की याद आ जाती है। खासकर रंगीन कपड़ों के प्रति । वो कहती हैं, कि इतने वर्ष बितने के बाद भी अगर कोई रंगीन कपड़ों की बातें करता है तो हमें वह याद आ जाती है । बीती हुई जिन्दगी वर्तमान हो जाती है ।

8. (क) भाभी पाठ का सारांश लिखिए । **(Page No. 18)**

अथवा

(ख) बाज़ार दर्शन निबंध का सार अपने शब्दो मे लिखिए । **(Page No. 11)**

9. (क) प्रायश्चित कहानी का उद्देश्य का वर्णन कीजिए । **(Page No. 54)**

अथवा

(ख) चीफ की दावत कहानी का सारांश लिखिए । **(Page No. 58, कहानी सारांश)**

(ग) निम्न लिखित में से किसी एक पात्र का चरित्र-चित्रण किजिए ।

1. छोटा जादूगर **(Page No. 45)**
2. सर्वदयाल **(Page No. 51, 52)**
3. रामू की बहू **(Page No. 57)**

10. (क) निम्नलिखित वाक्यों में से किन्ही चार वाक्यों को निर्देशानुसार बदल कर लिखिए ।

1. छात्र मैदान में खेल रहा है । (वचन बदलिए) **(छात्र मैदान में खेल रहें है)**
2. मोहन अभी घर आया । (भविष्यत्काल में लिखिए) **(मोहन अभी घर आने वाला है)**
3. वह एक विदुषी है । (लिंग बदलिए). **(वह एक विद्वान है)**

4. अध्यापिका पाठ पढ़ाया । ('ने' का प्रयोग कीजिए). **(अध्यापिका ने पाठ पढ़ाया)**

5. माँ ने रोटी बनाई । (वाच्य बदलिए). **(माँ के द्वारा रोटी बनाई गई)**

6. पिताजी दफ़तर जातें हैं । (वाच्य बदलिए). **(पिताजी द्वारा दफ्तर जाया जाता हैं)**

(ख) किन्ही तीन वाक्यों को शुध्द कर के लिखिए ।

1. माधव आम खाया । **(माधव ने आम खाया)**
2. गंगा बड़ा नदी है । **(गंगा बड़ी नदी है)**
3. रमा कविता लिखा । **(रमा ने कविता लिखा)**
4. वह मुझ को विश्वास नहीं करता । **(वे मुझ पर विश्वास नहीं करते)**
5. तुम हिन्दी सीखना चाहिए । **(तुम्हें हिन्दी सीखना चाहिए)**

(ग) किन्ही तीन शब्दों का वाक्यों मे प्रयोग किजिए ।

1. चरित्र **(मनुष्य की विशेषता उसके चरित्र में होती है ।)**
2. लालच **(हमें हमेशा लालच से बचना चाहिए ।)**
3. मामूली **(कलेक्टर की नौकरी करना मामूली बात नहीं है ।)**
4. स्मृति **(बादाम खाने से स्मृति बढ़ती है ।)**
5. अवकाश **(मुझे विद्यालय से दो दिन का अवकाश प्राप्त हुआ ।)**
6. धन **(राम के पास धन की कमी है ।)**

(घ) किन्ही पाँच शब्दों का हिंदी अथवा अंग्रेजी मे अनुवाद किजीए ।

1. College **(महाविद्यालय)**
2. Order **(आदेश, आज्ञा)**
3. Director **(संचालक, निदेशक निर्देशक)**
4. Manager **(प्रबंधक)**
5. निर्वाचन **(Election)**
6. सचिव **(Secretary)**
7. मंत्री **(Minister)**
8. स्वीकृति **(Approval)**

Rahul Publications

FACULTIES OF ARTS, COMMERCE, SCIENCE, MANAGEMENT & SOCIAL SCIENCE

B.A., B.Com., B.B.A., B.Sc. and B.S.W

I-Year I-Semester (CBCS) Examination

August / September - 2021

HINDI

(SECOND LANGUAGE)

Time : 2 Hours] **[Max. Marks : 80**

खण्ड - 'क' (4 × 5 = 20 M)

ANSWERS

I) किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए ।

1. भाभी के जीवन की समस्याओं पर प्रकाश डालिए । **(Page No. 24, Q.No. 2)**
2. राष्ट्र के स्वरूप के अंग क्या हैं ? उन पर अपने विचार व्यक्त कीजिए। **(Page No. 37, Q.No. 1)**
3. चरित्र से आप क्या समझते हैं ? अपने शब्दों में लिखिए । **(Page No. 9, Q.No. 2)**
4. 'चीप की दावत' में मिस्टर शामनाथ का चरित्र चित्रण कीजिए । **(Page No. 60)**
5. निम्नलिखित चार शब्दो के हिंदी पर्याय लिखिए । **(Page No. 69)**
   1) Director **(संचालक, निदेशक निर्देशक)**
   2) Forest Officer **(वन अधिकारी)**
   3) Incharge **(प्रभारी)**
   4) Commissioner **(आयुक्त)**
6. लिंग की परिभाषा बताते हुए उसके भेद लिखिए । **(Page No. 61)**
7. वाच्य क्या है? उसके कितनेप्रकार हैं ? लिखिए । **(Page No. 82)**
8. कारक कितने प्रकार के है ? लिखिए । **(Page No. 78)**

Rahul Publications

खण्ड - 'ख' (4 × 20 = 60 M)

II) निम्नलिखित में किन्हीं तीन प्रश्नां के उत्तर विस्तार में लिखिए ।

9. किन्हीं दो गद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या किजिए ।

(क) बाजार को साथक्षकता भी वही मनुष्य देता है जो जानता है
कि वह क्या चाहता है और जो नहीं जानते कि ये क्या
चाहते हैं, अपनी 'परचेसिंग पावर' को गर्व में अपने पैसे से
केबल एक विनाशक शाक्ति-शैतानी शक्ति, व्यंग्य की शक्ति
ही बाजार को देते है ।

उत्तर :

प्रसंगः- यह उद्धरण जैनेन्द्र लिखित बाजार दर्शन निबंध से लिया गया है ।

सन्दर्भः- इस उद्धरण से लेखक का यह कहना है कि बाजार को सार्थकता देने वाले मनुष्य सिर्फ जरूरत का ही सामान खरीदता है ।

व्याख्याः- उपर्युक्त उद्धरण का अर्थ है कि बाजार की सार्थकता वही मनुष्य देता है जो यह जानता है कि उसे जरूरत का सामान ही बाजार से खरीदना है । और जो इस सार्थकता को नहीं जानता है, वो अपनी 'परचेसिंग पावर' पर गर्व करता है । वह अपने पैसों से सिर्फ एक विनाशक शक्ति हीं बाजार कोदेते हैं । इस तरह के व्यक्ति ना तो बाजार से लाभ उठा सकते हैं, और न वह सच्चा लाभ दे सकते हैं ।

Rahul Publications

विशेषताएँ

1. भाषा सरल तथा बोधगम्य है ।
2. इस पंक्ति में बाजार की सार्थकता को समझने के लिए कहा गया है ।
3. समकालिन भौतिकवाद से परिचय करवाया गया है ।

(ख) संस्कृति का स्वभाव है कि आदान-प्रदान से ही बढ़ती हैं । **(Page No. 29, Q.No. 2)**
जो जाति केवल देना ही जानती है, लेना कुछ भी नही,
उसकी संस्कुति का एक दिन दिवाला निकल जाता है ।

(ग) माता अपने सब पुत्रों को समान भाव से चाहती है । **(Page No. 36, Q.No. 2)**
इस प्राकर पुथ्वी पर बसने वाले जन बराबर है ।
उनमें ऊँच और नीच का भाव नहीं है । जो मातृभूमि
के हृदय के साथ जुड़ा हूआ है वह समान अधिकर का भागी है ।

(घ) लालच केवल धन का ही नहीं, वरन हर प्रकार का होता है ।
लालच इसलिए दिया जाता है कि मनुष्य स्वकर्तव्य से व्युत
हो जाए ।

उत्तर :

प्रसंगः- यह उद्धरण डॉ. गुलाबराय के द्वारा लिखा गया 'चरित्र संगठन' से लिया गया है । गुलाब राय जी एक आदर्श अध्यापक, संपादक तथा साहित्यकार थे ।

सन्दर्भः- इस उद्धरण में लालच के बार में बताया गया है ।

व्याख्याः- लेखक का कहना है कि लालाच भी कई प्रकार का होता है । कभी धन का तो कभी पद का । लालच देने वाले व्यक्ति हमेशा लालच देकर यह चाहते है कि मनुष्य अपने कर्तव्य से विमुख हो जाए । अपने न्याय से हट जाए ।

विशेषताएँ

1. भाषा सरल तथा बोधगम्या है ।
2. इस संदर्भ में लालच से दूर रहने की बात कही गई है ।

Rahul Publications

10. (क) भारतीय संस्कृति को क्या विशेषताएँ हैं ? **(Page No. 25, सारांस)**
(ख) राष्ट्र का स्वरूप शीर्षक निबंध का सारांश सरल भाषा में लिखिए । **(Page No. 38, Q.No. 3)**

11. (क) छोटा जादूगर कहानी का सारांश लिखिए । **(Page No. 45, सारांश)**
(ख) सच का सौदा कहानी का सारांश अपने शब्दों में लिखिए । **(Page No. 49, सारांश)**

12. निम्नलिखित में से किन्ही दो पात्रों का चरित्र चित्रण कीजिए ।

1. रामू की बहू । **(Page No. 57)**
2. शामनाथ **(Page No. 60)**
3. पं. सर्वदयाल **(Page No. 51)**
4. घासीराम **(Page No. 44)**

13. (क) **निम्नलिखित में से किन्हीं तीन वाक्यों को निर्देशानुसार बदलकर लिखिए ।**

1. अध्यापक पाठ पढ़ाता है बदलिए । (लिंग बदलिए ।) **(अध्यापिका पाठ पढ़ाती हैं)**
2. बच्चा खेल रहा है । (वचन बदलिए ।) **(बच्चें खेल रहें हैं)**
3. राधा सो रही थी । (वर्तमान काल में लिखिए ।) **(राधा सो रही है)**
4. पेड़ फल गिरता है । (से का प्रयोग कीजिए ।) **(पेड़ से फल गिरता है)**
5. लड़कों से खेला जा रहा है । (वाच्य बदलिए ।) **(लड़के खेल रहे हैं)**
6. चोर पकड़ा गया । (बहुवचन में लिखिए ।) **(चोर पकड़े गए)**

(ख) **निम्नलिखित में से किन्हीं तीन वाक्यों को वाक्यों को शुद्ध कीजिए ।**

1. तुम तुम्हारे गाँव जाओ । **(तुम अपने गाँव जाओ)**
2. अभिनव का दो भाई था । **(अभिनव के दो भाई था)**
3. गंगा बड़ा नदी है । **(गंगा बड़ी नदी है)**
4. माला कौन बनाया ? **(माला किसने बनाया)**
5. वह मेरे को नहीं बुलाता । **(वह मुझे नहीं बुलाता है)**
6. सीता पुस्तक पढ़ी । **(सीता ने पुस्तक पढ़ी)**

(ग) **निम्नलिखित में से किन्हीं चार शब्दों का वाक्यों को वाक्यों में प्रयोग कीजिए ।**

1. स्मृति **(बादाम खाने से स्मृति बढ़ती है)**
2. कमर कसना **(मोहन परीक्षा के लिए कमर कसकर बैठा है)**
3. फर्श **(सीता फर्श पर बैठी है)**
4. निर्झर **(भाभी का जीवन दुःख का निर्झर है)**
5. असबाब **(बाजार में चकाचौंध करने वाले असबाब रहते है)**
6. चित्त **(चित्त लगाकर पढ़न वाले एक दिन जरूर सफल होते है)**

(घ) **निम्नलिखित में से किन्ही पाँच शब्दों का हिंदी अथवा अंग्रेजी मे अनुवाद किजीए ।**

1. दस्तावेज **(Documents)**
2. संसंद **(Parliament)**
3. राज्यपाल **(Governor)**
4. Absence **(अनुपस्थिति/गैरहाज़िरी)**
5. Chairman **(सभापति)**
6. Translator **(अनुवादक)**

Rahul Publications